राजभाषा स्मारिका

वर्ष 2022-23 अंक-10

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी

राजभाषा स्मारिका

वर्ष 2022-23 अंक-10

"राजभाषा हिन्दी का प्रचार, ग्रामीण विकास का बने आधार"

मुख्य संरक्षक
डॉ. आशीष कुमार गोयल
महानिदेशक,
एन.आर.आई.डी.ए.

संरक्षक
श्री प्रदीप अग्रवाल
निदेशक (वित्त एवं प्रशासन)

मुख्य संपादक
डॉ. प्रदीप कुमार
उप निदेशक (वित्त एवं प्रशासन)

संपादन समिति के सदस्य
सभी प्रभागों के निदेशकगण

संकलनकर्ता
रामकृष्ण पोखरियाल
निजी सहायक (वित्त एवं प्रशासन)

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार
15 एनबीसीसी टॉवर, 5वां तल, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–11 00 66
दूरभाष : 91-11-26716930/33, ईमेल : nrrda@pmgsy.nic.in
वेबसाईट : www.omms.nic.in www.pmgsy.nic.in

विषय सूची

क्र.सं.	रचना	रचयिता	पृष्ठ सं.
1.	क्या एक? क्या दो?	श्री सुनील कुमार, संयुक्त निदेशक (परियोजना–III)	1
2.	प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाः ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की महत्वपूर्ण योजना	डॉ. प्रदीप कुमार, उपनिदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	4
3.	राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी का ग्रामीण विकास में योगदान	श्री पंकज कुमार सिन्हा, सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	7
4.	सीता मढ़ी का पौराणिक हलेश्वर मंदिर	श्री जीतेन्द्र झा, सहायक निदेशक (वि. एवं प्रशा.)	9
5.	(1) जमाना बदल गया है (कविता) (2) जलती झोंपड़ी	श्री रजनीश कुमार, सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.) श्री सुरेन्द्र चौधरी, युवा अभियन्ता	12
6.	(1) भाई बहन का स्नेह (कविता) (2) हँसना बहुत जरूरी है (कविता)	श्री राहुल चराया, सी.ए. सुश्री सोनम शर्मा, उत्पाद प्रबंधक	13
7.	जाँबाज मेजर 'संदीप उन्नीकृष्णन'	श्री मोहित माथुर, सहायक प्रबंधक (तकनीकी)	14
8.	मन की शांति	श्री नवीन जोशी, सहायक प्रबंधक (परियोजना–I)	15
9.	(1) दुनिया नमन करेगी (कविता) (2) दूध में मक्खी (कविता)	श्री दीपांकर कुमरा, कार्यालय सहायक (परियोजन–III) सुश्री सविता पोखरियाल,कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	17
10.	यह दिल मांगे मोर – 'कारगिल का शेर'	श्री विजय इंग्ले, प्रोग्रामर (तकनीकी)	18
11.	सबसे बड़ा मूर्ख	श्री विजय शर्मा, टैक्नीकल लीड, एनआईसी	20
12.	सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव	श्री राजेन्द्र राठौड़, उत्पाद प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)	21
13.	स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिन्दी (कविता)	सुश्री अनु ठाकुर, वरिष्ठ डेवलपर–आईसीटी	23
14.	युवाओं की सोच से बदलता देश	श्री प्रदीप चितौड़, लेखापाल (वित्त एवं प्रशासन)	24
15.	गौतम बुद्ध की प्रेरक कहानी	सुश्री रेखा जुयाल, कार्यकारी सहायक (तकनीकी प्रभाग)	26
16.	बच्चे और सोशल मीडिया के प्रतिकूल प्रभाव	सुश्री पूनम देसाई, कार्यकारी सहायक (परियोजना–I)	27
17.	आज के समय में सोशल मीडिया	श्री रोहित कुमार, निजी सहायक (परियोजना –I)	28
18.	देवभूमि उत्तराखंड की यात्रा का संस्मरण	श्री रामकृष्ण पोखरियाल, निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	30
19.	भारतीय त्यौहार	मोहम्मद जावेद, कार्यालय सहायक (परियोजना –I)	32
20.	महायोद्धा महाराणा प्रताप	श्री देवी सिंह, निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	33
21.	संघर्ष ही जीवन	सुश्री गुलशन अरोड़ा, निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	35
22.	जीवन साथी	श्री नितिन कुमार, कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	36
23.	मन की सीख	श्री ललित चौधरी, कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	37
24.	मोह	श्री लवली सूदन, कार्यालय सहायक (परियोजना–III)	39
25.	तीन खिलौने	श्री भूपेन्द्र, कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	40
26.	1. छोटा सा मन (कविता) 2. पिता की इच्छा शक्ति (कविता)	सुश्री वीनू शर्मा, वरिष्ठ कार्यालय सहायक (परि.III) सुश्री दीपिका दीवान, वरिष्ठ कार्यालय सहायक (परि.III)	41
27.	गुरु का महत्व	श्री पवन, स्टोर अटैंडेंट	42
28.	1. चाहत (कविता) 2. बचपन (कविता)	श्री संजय चौहान, मैसेन्जर श्री उमेश, एमटीएस	43
29.	किसान और चट्टान	श्री अनिल कुमार, डाक प्रेषक	44
30.	1. मैं ना होता तो क्या होता 2. हिन्दी पुकार रही है	श्री बिशन सिंह डसीला, एमटीएस श्री संजय चौहान, मैसेन्जर	45
31.	1. जिद्द मंजिल पाने की (कविता) 2. सफलता (कविता)	श्री संजय कुमार, ऑफिस बॉय मोहम्मद आसिफ, ऑफिस बॉय	46
32.	1. जय उत्तराखंड (कविता) 2. दयालु किसान	श्री प्रदीप कुमार, ऑफिस बॉय श्री पवन कुमार, ऑफिस बॉय	47
33.	1. हिन्दी से हिन्दुस्तान है (कविता) 2. जिन्दगी (कविता)	श्री रोहन, सुरक्षागार्ड मो. आदिल, ऑफिस बॉय	48
34.	मेहनत का फल	श्री धीरज कुमार, ऑफिस बॉय	49
35.	भारत के आत्म निर्भर बनने में हिन्दी का योगदान	श्री भवानी मिश्र, एमटीएस	50
36	रियासत का दीवान	श्री रितेन सरकार, ऑफिस बॉय	51

महानिदेशक की कलम से........

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में 14 सितम्बर से 29 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया है और आज कार्यालय की हिन्दी पत्रिका–'राजभाषा स्मारिका' का 10वां अंक भी प्रकाशित किया जा रहा है। यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हो रही है। यह प्रयास राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है। इसके साथ ही यह निर्णय भी लिया गया है कि इस वर्ष से इस पत्रिका के दो अंक प्रकाशित किए जाएंगे। इनमें से एक अंक डिजिटल अंक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। इससे अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को वर्ष में दो बार प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होगा और पत्रिका सोशल मीडिया के माध्यम से जन सामान्य तक अपनी पहुँच बनाएगी। पत्रिका में अपने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की स्थिति समसामयिक विषयों, राष्ट्रहित और समाजोपयोगी विषयों से संबंधित सामग्री का अधिक से अधिक समावेश किया गया है। सभी कर्मचारियों को मेरी सलाह है कि वे इस पत्रिका के लिए स्तरीय लेख, कविता, चुटकुले, कहानी, यात्रा संस्मरण इत्यादि उपलब्ध कराते रहें और अन्य कर्मचारियों के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में कार्य करें।

मेरी शुभकामना है कि इस पत्रिका की सामग्री सभी के लिए रुचिकर, स्वान्तःसुखाय और आनन्द प्रदान करने वाली हो और यह पत्रिका भविष्य में उच्च कोटि की पत्रिका बनकर हिन्दी की अग्रणी पत्रिकाओं की श्रेणी में अपना स्थान बनाए और राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी की आवाज बनकर जन–जन तक पहुँचे।

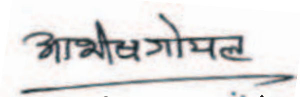

डॉ. आशीष कुमार गोयल
अपर सचिव (ग्रामीण विकास)
एवं
महानिदेशक, एन.आर.आई.डी.ए.

संपादकीय

हम, राजभाषा कार्यान्वयन को आगे बढ़ाने का पुनीत कार्य करने के एक सशक्त माध्यम– एनआरआईडीए की हिन्दी पत्रिका– "राजभाषा स्मारिका" का 10वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। विगत वर्ष तक इस पत्रिका का वर्ष में केवल एक अंक प्रकाशित किया जाता था, लेकिन रचनाएं उपलब्ध कराते रहने की स्टाफजनों की रुचि और राजभाषा हिन्दी के प्रति उनके अगाध प्रेम को ध्यान में रखते हुए प्रबंधन ने इस वर्ष से पत्रिका के दो अंक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। पत्रिका का संपादक मंडल प्रबंधन के इस निर्णय का हृदय से स्वागत करता है।

हमें विश्वास है कि भविष्य में भी सभी सहकर्मियों का पूर्ववत सहयोग मिलता रहेगा। हम, विविध विषयों से संबंधित रचनाएं उपलब्ध कराते रहने के लिए सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

"मित्रों, यह दौर आगे भी ऐसे ही चलता रहे,
जीवन के हर मोड़ पर ऐसे ही साथ मिलता रहे
चलना ही तो जिंदगी का नाम है,
हम साथ–साथ चलते रहें चाहे समय बदलता रहे।।

डॉ. प्रदीप कुमार
मुख्य संपादक

क्या एक? क्या दो ?

दंत कथा एक कहानी होती है जो एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को सुनाई जाती है और ऐसे ही एक दूसरे से होते हुए समाज में प्रचार व प्रसार पाती है। आओ, अपनी आज की कहानी शुरु करते हैं। एक बार की बात है सेठ ईश्वरचंद जी ने तीर्थाटन करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने सेवक रामदीन को बुलाया और कहा कि तीर्थाटन के लिए जा रहे हैं और आप उसकी तैयारी करो। रामदीन ने सेठजी से कहा कि तीर्थाटन पर चलने के लिए मैं तैयार हूँ परंतु मेरी दो शर्ते है। सेठ जी ने पूछा कि आपकी क्या शर्ते है? तब रामदीन ने बताया कि मैं केवल एक सांस में बोला हुआ कोई भी काम करूंगा और कोई अन्य कार्य नहीं करूंगा। दूसरी शर्त है कि मैं हर रात को एक मजमून सुनूंगा। सेठजी ने बोला ठीक है, आप जाने की तैयारी करो हम परसों अपने गंतव्य की ओर निकलेंगे। तय दिन पर सेठ जी और रामदीन अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर अपने गंतव्य की ओर निकल पड़े । चलते चलते जब वह अपने पहले पड़ाव पर पहुंचे तो सेठ ने एक सांस में बोला " रामदीन घोड़ों को खोल दो घोड़ों का चारा पानी कर दो, बाजार से सामान लेकर के आ जाओ और अपने लिए खाना बनाओ"। रामदीन ने कहा सेठ जी बहुत अच्छा आपने तो एक सांस में ही सारे काम बोल दिए। रामदीन ने घोड़ों को खोल दिया उनको पानी पिलाया और चरने के लिए छोड़ दिया। उसके बाद वह सामान लाने के लिए बाजार चला गया। बाज़ार में रामदीन ने एक अद्भुत चीज देखी, उसने देखा कि एक दासी बहुत साफ–सुथरी चने की दाल लेकर जा रही थी और सैनिकों द्वारा बंदी बनाए गए एक कैदी ने उसके अंदर कंकड़ पत्थर डाल दिये। यह देखकर रामदीन को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने मन ही मन निश्चय किया कि आज रात को सेठ जी से मैं यही मजमून पूछूंगा।

रामदीन अपने डेरे पर वापस आया और सेठ जी को कहता है कि सेठ जी जो मजमून मैं पूछने जा रहा हूं वह आप हल नहीं कर पाएंगे इसलिए अपनी राम–राम और मैं यहीं से अपनी वापसी की यात्रा शुरू करता हूं। तब सेठ जी ने बोला कि रामदीन आप मुझे मजमून बताइए तो सही कि क्या है। तब रामदीन ने बताया कि मैंने बाजार में देखा कि एक दासी बहुत सुंदर चने की दाल लेकर जा रही थी जो सोने की तरह चमक रही थी और एक कैदी ने उसके अंदर कंकड़ पत्थर डाल दिए। तब सेठ जी ने बोला इसका मजमून मुझे मालूम है आप खाना बनाइए और खाने के बाद हम इस पर चर्चा करेंगे। रामदीन ने बोला मुझे पता है कि आप नहीं बता पाएंगे फिर भी कोई बात नहीं आज की बेगारी ही सही। आज का खाना बना देता हूं उसके बाद अपनी राम राम।

खाना खाने के बाद सेठ जी ने बताना शुरू किया कि इस राज्य की राजकुमारी बहुत ही सुंदर है और राजा ने उसके रहने के लिए अलग से एक महल बनवा रखा है । उस महल के चारों तरफ सुंदर–सुंदर बगीचे हैं जिनमें राजकुमारी भ्रमण करती है। महल के अंदर आमतौर पर किसी भी नागरिक या अन्य पुरुष का आना सख्त मना है । परंतु एक दिन की बात है, एक युवक भटकते हुए महल के एक बगीचे में पहुंच जाता है। संयोगवश राजकुमारी भी उसी बगीचे में भ्रमण कर रही थी, दोनों एक दूसरे को देखते हैं। राजकुमारी ने एक उंगली ऊपर की, तभी उस युवक ने दो उंगलियां ऊपर कर दी। जिसे देखकर राजकुमारी ने उसे कहा कि आज शाम को लाखों को पछाड़कर और बीस को मार कर मुझसे मिलने के लिए आना। सारे राज्य में हलचल मच जाती है कि एक युवक आया है और वह आज शाम को राजकुमारी को मिलने से पहले लाखों को पछाडेगा और बीस को मारेगा । सभी को यह डर सताने लगा कि कहीं वह मुझे ही ना मार डाले। यह बात राजा के कानों में भी पहुंचती है और राजा उस युवक के पीछे अपने जासूस लगा देता है। शाम को वह युवक तैयार होकर राजकुमारी से मिलने के लिए जाता है। महल का पहरा काफी सख्त होता है, तो युवक महल के पीछे की तरफ जाता है, जहां राजकुमारी एक रस्सी डालकर युवक को महल

के अंदर प्रवेश करवा देती है। युवक के महल में प्रवेश करने के पश्चात जब राजकुमारी और वह युवक आमने–सामने होते हैं तब राजकुमारी एक नींबू हाथ में लेकर के उसके चार कली (चार टुकड़े) कर देती है और युवक अपनी जेब से एक लड्डू निकालता है और उसे साबुत निगल लेता है, इसके पश्चात दोनों इधर–उधर की बातें करते हैं और युवक चला जाता है। जासूस राजा को यह सारी बातें बताता है। राजा को बहुत गुस्सा आता है और युवक को गिरफ्तार करने का आदेश दे देते हैं ।

अगले दिन राजा के दरबार में युवक की पेशी होती है, तब राजा उससे पूछता है "क्या एक क्या दो क्या नींबू की चार कली और क्या लड्डू" । तब युवक कहता है कि महाराज मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। राजा कहता है या तो तुम स्वयं स्वीकार कर लो या फिर तुम्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी। युवक कहता है कि मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। राजा को बहुत गुस्सा आता है और उसे कारावास में डालने का आदेश दे देते हैं। सैनिक उस युवक को कारावास में डालने के लिए लेकर जाते हैं। तभी रास्ते में राजकुमारी की दासी हाथ में साफ–सुथरी सोने की तरह चमकती हुई चने की दाल की थाली लेकर के युवक के सामने से गुजरती है। युवक रास्ते में से कंकड़ पत्थर उठाकर उस थाली के अंदर डाल देता है।

अब सेठजी ने पूछा कि रामदीन यही आपका मजमून था, जो कि मैंने आपको बता दिया अब चुपचाप सो जाइए सुबह फिर यात्रा करनी है । रामदीन बोला कि नहीं सेठ जी आप आगे की कहानी तो बताइए। सेठ ने बोला कि आपने मुझे बोला था कि मजमून बताना है सो तो मैंने बता दिया है। यह सुनकर रामदीन की हालत खराब हो गई उसने हाथ जोड़ करके सेठ जी को बोला इस कहानी का कुतूहल मुझे सारी रात सोने नहीं देगा कृपया आप मुझे पूरी कहानी सुनाएं। तब सेठ जी ने कहा कि आगे की कहानी सुनो।

जब युवक ने चने की दाल में कंकड़ डाले तो सैनिक उसे वापस दरबार में ले कर आते हैं और राजा को सारा किस्सा बयान करते हैं। राजा को और ज्यादा गुस्सा आ जाता है और युवक से फिर पूछता है " क्या एक? क्या दो? क्या नींबू की चार कली? क्या लड्डू ?क्या चने की दाल? और उसमें कंकड़" । युवक हाथ जोड़कर कहता है कि महाराज मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। राजा का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच जाता है और युवक को आखिरी चेतावनी देते हुए कहते हैं कि या तो तुम अपना जुर्म कबूल कर लो नही तो मैं तुम्हें मृत्युदंड दे दूंगा। युवक कहता है कि महाराज मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। राजा युवक को मृत्युदंड की सजा दे देते हैं और सैनिकों को आदेश देते हैं के युवक को ले जाकर अभी जल्लाद के हवाले कर दो और आज ही युवक को मृत्युदंड दे दो। सैनिक युवक को जल्लाद के पास ले कर जा रहे होते हैं तभी राजकुमारी की दासी आती है और एक इत्र का मटका युवक के पैरों में तोड़ देती है। इत्र का मटका फूट जाता है और इसकी सुगंध चारों तरफ फैल जाती है। तभी युवक बोलता है कि मुझे महाराज के पास लेकर चलो मैं सब कुछ बताने के लिए तैयार हूं। सैनिक हंसने लगते हैं और कहते हैं कि देखो, महाराज अगर पहले ही फांसी का आदेश दे देते तो यह युवक सब कुछ बता देता, मृत्युदंड के भय से अच्छे–अच्छे कांपने लगते हैं । सैनिक उस युवक को वापिस राजा के दरबार में लेकर आते हैं और सैनिक राजा को रास्ते का सारा हाल बताते हैं। राजा युवक से पूछता है कि "बताओ युवक, क्या एक क्या दो क्या नींबू की चार कली क्या लड्डू क्या चने की दाल और उसमे कंकड़ और अब क्या इत्र की मटकी"। युवक बहुत ही संयत आवाज में अपना जवाब देता है कि महाराज मैं एक दिन रास्ता भटकते हुए, राजकुमारी के महल के बगीचे में पहुंच गया । संयोगवश राजकुमारी भी उस दिन उसी बगीचे में टहलने के लिए निकली थी। मुझे देख कर राजकुमारी ने एक उंगली ऊपर की उनका तात्पर्य था कि इस दुनिया में एक ही सुंदर है और वह तुम हो। मैंने

उसके उत्तर में दो उंगली उठाई जिसका अभिप्राय यह था की एक नहीं इस दुनिया में दो सुंदर हैं एक मैं ही सुंदर नहीं आप भी बहुत सुंदर हैं। यह देखकर राजकुमारी ने फिर मुझे आदेश दिया था कि लाखों को पछाड़कर और बीस को मार कर शाम को मुझसे मिलने आना। जिसका तात्पर्य यह था कि बीस नाखूनों को काटकर और लाखों बालों को सवार कर मैं राजकुमारी से मिलने के लिए पहुंचा। जब मैं महल में पहुंचा तब राजकुमारी ने एक नींबू की चार कलियां दी उनका कहना यह था की जिस तरह इस नींबू की खुशबू चारों तरफ फैल गई है उसी तरह आप चारों तरफ मेरी प्रतिष्ठा पर लांछन तो नहीं लगवा देंगे। मैंने एक साबुत लड्डू निगल कर यह उत्तर दिया कि जिस तरह मैं इस लड्डू को साबुत निगल गया हूँ उसी तरह सभी बातें राज रहेंगी ।

तत्पश्चात महाराज आपने मुझे गिरफ्तार कर लिया था और मुझे कारावास की सजा दी, तभी एक दासी आती है जिसके हाथ में चने की दाल होती है, जिसके द्वारा राजकुमारी यह कहना चाह रही थी कि मेरे पास इतनी धन–दौलत है कि मैं आप को रिहा करवा लूंगी। तब मैंने उसमें कंकड़ पत्थर डालकर कर यह संदेश दिया था कि मेरे घर में दौलत कंकड़ पत्थर की तरह बिखरी पड़ी रहती है। उसके बाद महाराज आपने मुझे फांसी की सजा दे दी। जिसके पश्चात राजकुमारी की दासी ने मेरे पैरों के पास इत्र की मटकी फोड़ी, जिसका अभिप्राय यह था कि अगर मेरी प्रतिष्ठा पर लांछन इस खुशबू की तरह फैलती है तो फैल जाए लेकिन आप अपने प्राण बचाएं। इसीलिए महाराज मैं आपको सब कुछ बताने के लिए राजी हो गया।

राजा उस युवक की बुद्धिमानी से बहुत ही प्रसन्न हुआ, उसने अपनी राजकुमारी का विवाह उस युवक के साथ धूमधाम से कर दिया। राजकुमारी और वह युवक हंसी खुशी रहने लगे। और इधर अपने सेठ ईश्वरचंद जी व रामदीन अपने अगले गंतव्य की ओर बढ़ चले।

➢सुनील कुमार
संयुक्त निदेशक (परियोजना–।।।)

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाः ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की महत्वपूर्ण योजना

परिचय

राष्ट्र के समग्र विकास के लिए आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता सबसे पहली आवश्यकता है। आधारभूत सुविधाओं में भी सबसे आवश्यक सुविधा है– त्वरित परिवहन की समुचित व्यवस्था उपलब्ध होना। त्वरित परिवहन की सुविधा के लिए उच्च गुणवत्ता की सड़कों का होना आवश्यक है। यह विडम्बना ही रही कि देश को खाद्यान्न, खाद्य तेल, घी, गुड़–चीनी, चाय, कॉफी, मसाले सहित सभी आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध कराने वाला ग्रामीण क्षेत्र देश की स्वतंत्रता के 5 दशक बाद तक भी मूलभूत आवश्यक सुविधाओं से वंचित रहा। अंततः वर्ष 2000 में भारत सरकार ने देश के ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए "प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई)" के नाम से एक विकास योजना प्रारम्भ की। इस योजना का मुख्य उद्देश्य, ऐसी ग्रामीण बस्तियों, जिन्हें मुख्य बारहमासी सड़कों से जोड़ने के लिए वहां से मार्गों का निर्माण नहीं किया गया था और आवागमन में उन्हें पूरी असुविधा का सामना करना पड़ता था, ऐसी ग्रामीण बस्तियों से सड़कों का निर्माण करके उन्हें बारहमासी मुख्य सड़कों से जोड़ना था। हमारा देश ग्राम और कृषि प्रधान है। इसलिए देश की अर्थव्यवस्था में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। यदि देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी तो देश की सकल अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी। सड़कों का निर्माण होने से ग्रामीण बस्तियों का सम्पर्क बारहमासी मुख्य सड़कों से हो जाएगा और ग्राम के निवासियों को परिवहन की सुविधा मिलेगी।इससे वे अपने खाद्यान्न उत्पादों को सुगमता से बाजारों तक पहुंचा सकेंगे और बिचौलियों से छुटकारा पा कर अपने उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सकेंगे। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और वे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अपना महती योगदान दे सकेंगे। इस योजना के तहत क्रमबद्ध तरीके से नई सड़कों के निर्माण का कार्य किया जाता है, उनके उन्नयन, रखरखाव का कार्य और अन्य नई सड़कों के निर्माण का कार्य किया जाता है तथा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विशेष योजना– आरसीपीएलडब्ल्यूईए के तहत मार्ग निर्माण, उन्नयन एवं रखरखाव का कार्य किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सड़कों के निर्माण, उन्नयन एवं रखरखाव का कार्य निम्नलिखित चरणों में किया जा रहा है–

1. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना–। के तहत किए गए कार्य,
2. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना–।। के तहत किए गए कार्य,
3. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना–।।। के तहत किए गए कार्य,
4. आरसीपीएलडब्ल्यूईए के तहत किए गए कार्य,
5. नवीन प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके किए गए कार्य,
6. सड़कों के निर्माण में गुणवत्ता को प्राथमिकता दे कर किए गए कार्य,

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के प्रारम्भ से अब तक पिछले दो दशकों में 7.90 लाख किलोमीटर सड़कों के निर्माण की मंजूरी दी गई है और 2.69 लाख करोड़ रुपये की लागत से 7 लाख किमी से अधिक लम्बाई की ग्रामीण सड़कों का निर्माण किया जा चुका है। सरकार ने इस लक्ष्य को प्राप्ति करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का बहुत अधिक प्रयोग किया है। इसमें समग्र प्रबंधन के लिए एक प्रक्रिया आधारित मानीटरिंग सिस्टिम ओमास तथा रखरखाव का लेखा जोखा रखने के लिए ईमार्ग का उपयोग किया गया है। जियोसड़क

का उपयोग इंजीनियरों को जीआईएस आधारित सड़क प्रस्ताव प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदान करता है और राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी को सैटैलाईट इमेजरी के माध्यम से यह जांच करने की क्षमता प्रदान करता है कि प्रस्तावित सड़कों के निर्माण से स्थानीय जनता के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। ग्रामीण भारत में 45 लाख किलोमीटर से अधिक सड़कें हैं, जिनमें बहुत–सी सडकें ऐसी हैं जिनके माध्यम से स्कूलों, अस्पतालों और बाजारों तक पंहुचा जा सकता है। जीआईएस के माध्यम से ऐसी सड़कों की पहचान करने के लिए "ट्रेस मैप्स" एल्गोरिथम का उपयोग किया गया है। इन उपकरणों का उपयोग इंजीनियरों द्वारा अपनी नियोजन गतिविधियों में मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है। इस योजना से सम्बद्ध सभी सरकारी सिविल इंजीनियरों को नवीनतम जीआईएस प्रौद्योगिकियों में प्रशिक्षित किया गया है ताकि वे देश की बेहतर सेवा कर सकें।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने देश में ग्रामीण जनता के लिए भौतिक अवसंरचना के निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। इस तरह यह योजना ग्रामीण विकास के लिए एक वरदान सिद्ध हुई है। इससे ग्रामीण बस्तियों के निवासी आर्थिक रूप से समृद्ध होने के साथ ही शहरों के निवासियों के समान ही सुख–सुविधाओं को प्राप्त करने में समर्थ हुए हैं।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के विभिन्न चरणों के निष्पादन के आंकड़े निम्नलिखित हैं:–

योजना का नाम	पहचान की गई बस्तियों की संख्यां	कुल स्वीकृत सड़कों की लम्बाई	कुल स्वीकृत पुलों की संख्या	कार्य पूर्ण होने की तारीख
पीएमजीएसवाई – I	178174	790645 कि.मी.	7520	30 सितम्बर, 2022
पीएमजीएसवाई – II	–	78278 कि.मी.	765	30 सितम्बर, 2022
पीएमजीएसवाई – III	–	77129 कि.मी	708	31 मार्च, 2025
आरसीपीडब्ल्यूईए	–	10231 कि.मी.	463	31 मार्च, 2023
नवीन प्रौदयोगिकी के उपयोग द्वारा	–	09000 कि.मी.	–	–
सड़कों के रखरखाव के लिए सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) पहल	–	167476 कि.मी.(दोष दायित्व अवधि) के अंतर्गत	–	–

सड़क निर्माण में नई प्रौद्योगिकी का उपयोग

सड़क निर्माण में नई प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करने के लिए, मंत्रालय ने अनिवार्य कर दिया है कि राज्यों को कुल प्रस्तावों के 15: प्रस्तावों में नई प्रौद्योगिकियों को अपनाना है। सड़क की निर्माण लागत को कम करने और विभिन्न उद्योगों और नगरपालिका के कचरे का प्रभावी ढंग से निपटान करने के लिए, पीएमजीएसवाई के तहत अपशिष्ट प्लास्टिक, कोल्ड मिक्स टेक्नोलॉजी, पैनलेड सीमेंट कंक्रीट, सीमेंट ट्रीटेड सब–बेस / बेस, टेराजाइम, जूट, कॉयर, सीमेंट / चूना स्टेबिलाइजेशन का उपयोग किया जाना कुछ मुख्य प्रौद्योगिकियां हैं। इससे पर्यावरण बचेगा और नवीन खनन सामग्री का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकेगा। ग्रामीण विकास मंत्रालय पीएमजीएसवाई के तहत

50% से अधिक ग्रामीण सड़कों के निर्माण में प्लास्टिक कचरे और कोल्ड मिक्स तकनीक के उपयोग के अलावा ई–हरित प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए भी मौजूदा दिशानिर्देशों में संशोधन कर रहा है। नई प्रौद्योगिकी के उपयोग संबंधी दिशा–निर्देशों के प्रकाशन के बाद, राज्य प्रौद्योगिकी एजेंसियों, राज्य कार्यान्वयन एजेंसियों के अधिकारियों, ठेकेदारों, गुणवत्ता मॉनिटरों सहित सभी हितधारकों में विभिन्न नई प्रौद्योगिकियों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। मौजूदा सड़कों के उन्नयन की लागत को कम करने के लिए, एफडीआर प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं ।

सड़कों के रखरखाव के लिए सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) पहल
दोष दायित्व अवधि के दौरान सड़कों के रखरखाव पर ध्यान देने और पीएमजीएसवाई के तहत निर्मित सड़कों के नियमित रखरखाव के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा ईमार्ग,लागू किया गया है। यह अधिकारियों, ठेकेदारों, बैंकों और आम जनता की सहायता के लिए एक जीआईएस आधारित उद्यम ई–गवर्नेंस समाधान है। ईमार्ग सभी परिस्थितियों में पीएमजीएसवाई सड़कों के रखरखाव पर ध्यान देता है।
गुणवत्ता पीएमजीएसवाई के तहत एक त्रिस्तरीय गुणवत्ता प्रबंधन तंत्र स्थापित किया गया है:
प्रथम स्तर (अनिवार्य परीक्षण): यह प्रत्येक पैकेज के लिए स्थापित ऑन–साइट गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला के विशेष पर्यवेक्षण पर केंद्रित होता है और यह सुनिश्चित करता है कि निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार अनिवार्य परीक्षण किए जाते हैं।

द्वितीय स्तर (राज्य स्तर पर निगरानी): यह राज्य स्तर पर गुणवत्ता की स्वतंत्र निगरानी पर जोर देता है। एसआरआरडीए मुख्यालय में राज्य गुणवत्ता समन्वयक (एसक्यूसी) को अपनी रिपोर्ट देने वाले और कार्यों की भू–संदर्भित तस्वीरों के साथ गुणवत्ता ग्रेडिंग का सार ओमास में अपलोड करने वाले निरीक्षणकर्ता राज्य गुणवत्ता मॉनिटरों (एसक्यूएम) की तैनाती करके कार्यों की गुणवत्ता की निगरानी इसके तहत की जाती हैद्य

तृतीय स्तर (केंद्रीय स्तर पर निगरानी): केंद्रीय स्तर का एक स्वतंत्र निगरानी तंत्र है जो यह सुनिश्चित करता है कि राज्यों द्वारा निर्मित सड़कों की गुणवत्ता निर्धरित मानकों के अनुरूप है । इसका मुख्य उद्देश्य राज्य के गुणवत्ता आश्वासन तंत्र में प्रणालीगत मुद्दों की पहचान करना और विशिष्टताओं और निर्माण प्रथाओं की बेहतर समझ के लिए फील्ड स्टाफ को साइट पर मार्गदर्शन प्रदान करना होता है।इनके अतिरिक्त, गुणवत्ता में सुधार के लिए विभिन्न प्रयास किए गए हैं और चालू वित्तीय वर्ष में कुछ गुणवत्ता पहल की गई हैं जैसे: यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्रत्येक पैकेज के लिए फील्ड प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं। निर्माण कार्यों का जमीनी स्तर पर गहन निरीक्षण किया जाए, इसके लिए एनक्यूएम और एसक्यूएम की संख्या में अपेक्षित वृद्धि की गई है । एसक्यूएम निरीक्षण तीव्रता को प्रत्येक 5 किमी खंड की लंबाई तक कर दिया गया है। एसक्यूएम को पैनल में शामिल करने और निष्पादन मूल्यांकन के लिए व्यापक दिशा–निर्देश जारी किए गए हैं। स्मार्ट मॉनिटरिंग, मूल्यांकन और डेटा विश्लेषण के लिए गुणवत्ता निगरानी निरीक्षण के लिए ई–फॉर्म विकसित किया जा रहा है।

➢**डॉ. प्रदीप कुमार**
उपनिदेशक (वित्त एवं प्रशा.)

नोट– इस लेख में व्यक्त किए गए विचार व्यक्तिगत हैं।
स्रोत– 1. राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी का वार्षिक प्रतिवेदन
2. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार की वेबसाइट– www-mord-nic-in

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी का ग्रामीण विकास में योगदान

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी–

भारत सरकार द्वारा ग्रामीण विकास पर विशेष ध्यान देने और पिछड़ी ग्रामीण बस्तियों को बारहमासी मुख्य मार्गों से जोड़ने के लिए ग्रामीण क्षेत्र में सड़क निर्माण के प्रयोजन से प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के तहत ग्रामीण सड़कों के निर्माण का कार्यक्रम शुरू किया गया। भारत सरकार ने इस कार्यक्रम के तहत तकनीकी पहलुओं पर सलाह देने,परियोजना का मूल्यांकन करने, अंशकालिक गुणवत्ता नियंत्रण मॉनीटरों की नियुक्ति करने, निगरानी तंत्र का प्रबंधन करने और ग्रामीण विकास मंत्रालय को समय–समय पर रिपोर्टें प्रस्तुत करने के माध्यम से कार्यक्रम को सहायता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण सड़क विकास एजेंसी (एनआरआरडीए) की स्थापना की परिकल्पना की। तदनुसार, वर्ष 2002 में सासाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत पंजीकृत एक एजेंसी 'राष्ट्रीय ग्रामीण सड़क विकास एजेंसी' की स्थापना ग्रामीण विकास मंत्रालय के अधीन की गई। इसके बाद 23.03.2016 को मंत्रिमंडल द्वारा निर्णय लिया गया कि प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण(पीएमएवाई–जी) के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में नए आवास डिज़ाइन तैयार करने, ड्राइंग्स तैयार करने, प्राक्कलन करने, उपयुक्त प्रौद्योगिकियों को अपनाने, प्रशिक्षण मॉड्यूल्स और संबंधित गतिविधियों में केंद्र और राज्य सरकारों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण सड़क विकास एजेंसी (एनआरआरडीए) को उन्नत और सुदृढ करके राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी (एनआरआईडीए) के रूप में परिवर्तित कर दिया जाए। यह एजेंसी, ग्रामीण क्षेत्रों में अवसंरचना के विकास (सड़कें, आवास और अन्य ग्रामीण अवसंरचना) पर ध्यान केंद्रित करेगी। एनआरआईडीए, अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ मिलकर राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तरों पर तकनीकी पेशेवरों की क्षमता विकास के कार्य को भी संभालेगा। मंत्रिमंडल के निर्णयानुसार, वर्ष 2017 में 'राष्ट्रीय ग्रामीण सड़क विकास एजेंसी' का नाम बदलकर 'राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी' कर दिया गया।

'राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी' के प्रभाग राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी में वर्तमान में निम्नलिखित प्रभाग कार्य कर रहे हैं :–

1. वित्त एवं प्रशासन प्रभाग
2. परियोजना प्रभाग – I
3. परियोजना प्रभाग – II
4. परियोजना प्रभाग – III
5. तकनीकी प्रभाग
6. आईसीटी प्रभाग

'राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी' के कार्य

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी' के मुख्यतः निम्नलिखित कार्य हैं:–

ग्रामीण सड़क

1. राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों से प्राप्त योजना प्रस्तावों की संवीक्षा करना, अनुमानित व्यय का प्राक्कलन करना।
2. ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा स्वीकृत और राज्यों या संघ शासित प्रदेशों द्वारा उनकी कार्यकारी एजेंसियों के माध्यम से कार्यान्वित किए जा रहे सड़क कार्यों के निरीक्षण की व्यवस्था रखना तथा समुचित निष्पादन सुनिश्चित करना।

3. विभिन्न तकनीकी एजेंसियों के साथ विचार–विमर्श करना तथा पुलों और पुलियाओं सहित ग्रामीण सड़कों के उपयुक्त डिजाइन और विनिर्देशों को अंतिम रूप देना।
4. निर्माण पूरा करने की समय–सीमा, तकनीकी विनिर्देश, परियोजना मूल्यांकन और गुणवत्ता नियंत्रण विधियों के विशेष संदर्भ में सड़क–कार्यों की प्रगति मॉनीटर करना।
5. "ऑन–लाइन प्रबंधन और निगरानी प्रणाली" द्वारा प्रगति और व्यय पर निगरानी रखना।

ग्रामीण आवास

1. नाबार्ड से वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयोजन माध्यम के रूप में कार्य करना ।
2. ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा प्रेषित लक्ष्य के सापेक्ष अंतराल के आधार पर राज्यों को धन राशि वितरित करना।
3. वार्षिक कार्य योजना के विकास में राज्यों की सहायता करना।
4. विभिन्न तकनीकी एजेंसियों के समन्वय से उपयुक्त प्राक्कन सहित राज्यवार आवास डिजाइन प्रारूप के विकास में राज्यों को सहायता करना।

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां

(क) कार्यालय की राजभाषा समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया।
(ख) नराकास की छमाही बैठकों में प्रतिभागिता की गई।
(ग) नियत्कालिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गईं।
(घ) कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

अन्य गतिविधियां

(क) ग्रामीण सड़कों में नई तकनीकी और नवाचारों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन
(ख) संविधान दिवस समारोह का आयोजन
(ग) जीआईएस सम्मेलन का आयोजन
(घ) सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन
(च) सदभावन दिवस समारोह का आयोजन

गतिविधियों की झलकियां

उपलब्धियां:

- ई–मार्ग को प्राप्त राष्ट्रीय ई– गवर्नेंस पुरस्कार
- ई–मार्ग को प्राप्त सीएसआई एसआईजी पुरस्कार– 2021
- ई–मार्ग को प्राप्त उत्तम उत्कृष्ट ई–गवर्नेंस स्कॉच स्वर्ण पुरस्कार
- ई–मार्ग को प्राप्त जेम्स ऑफ डिजिटल इण्डिया पुरस्कार– 2020
- जीओ स्मार्ट उत्कृष्ट परिचालन पुरस्कार– 2022

पंकज कुमार सिन्हा
सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)

सीतामढ़ी का पौराणिक हलेश्वर मंदिर

प्राचीन कल में सीतामढी तिरहुत का अंग रहा है। इस क्षेत्र में मुस्लिम शासन आरंभ होने तक मिथिला के शासकों के कर्नाट वंश ने यहाँ शासन किया। बाद में भी स्थानीय क्षत्रपों ने यहाँ अपनी प्रभुता कायम रखी लेकिन अंग्रेजों के आने पर यह पहले बंगाल फिर बिहार प्रांत का अंग बन गया। 1908 ईस्वी में तिरहुत मुजफ्फरपुर जिला का हिस्सा रहा। स्वतंत्रता पश्चात ११ दिसम्बर 1972 को सीतामढी को स्वतंत्र जिला का दर्जा मिला, जिसका मुख्यालय सीतामढ़ी को बनाया गया।: जिले के फतेहपुर गिरमिशानी गांव में स्थित भगवान शिव का अति प्राचीन मंदिर देश और दुनिया में विख्यात है.। हलेश्वर स्थान के नाम से जाना जाने वाले इस मंदिर में दक्षिण के रामेश्वर से भी प्राचीन और दुर्लभ शिवलिंग है।. यहां स्थापित शिवलिंग की स्थापना मिथिला नरेश राजा जनक ने की थी।पुराणों के अनुसार मंदिर का इलाका मिथिला राज्य के अधीन था। बताया जाता है कि 12 वर्षों तक पूरे मिथिला में अकाल आ गया था। तब ऋषि मुनियों की सलाह पर राजा जनक ने अकाल से मुक्ति के लिए हलेष्ठी यज्ञ किया। यज्ञ शुरू करने से पहले राजा जनक जनकपुर से गिरमिशानी गांव पहुंचे और वहां एक शिवलिंग की स्थापना की। राजा जनक की पूजा से खुश होकर भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया। उसके बाद राजा जनक ने इसी स्थान से हल चलाना शुरु किया और 7 किलोमीटर की दूरी तय कर जिले के पुनौरा गांव पहुंचे, जहां हल के सिरे से माँ जानकी धरती से प्रकट हुई थी। सीतामढ़ी पौराणिक आख्यानों में त्रेतायुगीन शहर के रूप में वर्णित है। त्रेता युग में राजा जनक की पुत्री तथा भगवान राम की पत्नी देवी सीता का जन्म पुनौरा में हुआ था। पौराणिक मान्यता के अनुसार मिथिला में एक बार दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। पुरोहितों और पंडितों ने मिथिला के राजा जनक को अपने क्षेत्र की सीमा में हल चलाने की सलाह दी। कहते हैं कि सीतामढ़ी के पुनौरा नामक स्थान पर जब राजा जनक ने खेत में हल जोता था, तो उस समय धरती से सीता का जन्म हुआ था। सीता जी के जन्म के कारण इस नगर का नाम पहले सीतामड़ई, फिर सीतामही और कालांतर में सीतामढ़ी पड़ा।

ऐसी जनश्रुति है कि सीताजी के प्राकटय स्थल पर उनके विवाह पश्चात राजा जनक ने भगवान राम और जानकी की प्रतिमा लगवायी थी। जानकार बताते हैं कि मंदिर का निर्माण 17वीं शताब्दी में कराया गया था, जो 1942 के भूकंप में क्षतिग्रस्त हो गया था। जिसके बाद तत्कालीन डीएम अरुण भूषण प्रसाद ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। वहीं, इस मंदिर से जुड़ी आस्था लोगों में सदियों से बरकरार है। हलेश्वर स्थान सीतामढ़ी जिले में स्थित एक हिन्दू तीर्थ स्थल है जो भगवान शिव को समर्पित है। हर साल लाखों

तीर्थयात्री इस मंदिर में आते हैं, जो इसे उत्तर भारत में सबसे अधिक देखे जाने वाले धार्मिक मंदिरों में से एक बनाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार रामायण काल के मिथिला राजा जनक ने इस शिव मंदिर का निर्माण करवाया था और आज भी वहां पत्थर का शिवलिंग मंदिर के गर्भगृह में मूल रूप से विराजमान है। मंदिर परिसर के अंदर भक्तों के ठहरने की व्यवस्था है क्योंकि बहुत से लोग इस पवित्र स्थान पर दूर–दूर से आते हैं। भक्त बागमती नदी या पुनौरा धाम तालाब से लाए गए पानी को शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। शिवरात्रि के समय यहाँ का माहौल और भी भक्तिमय हो जाता है। हलेश्वर स्थान हिन्दुओं के असीम श्रद्धा का प्रतीक है और यहाँ हर व्यक्ति को शिवलिंग के दर्शन जरूर करना चाहिए। लगभग ५०० वर्ष पूर्व अयोध्या के एक संत बीरबल दास ने ईश्वरीय प्रेरणा पाकर उन प्रतिमाओं को खोजा और उनका नियमित पूजन आरंभ हुआ। यह स्थान आज जानकी कुंड के नाम से जाना जाता है। सीता कुंड बिहार राज्य में सीतामढ़ी नगर के समीप पुनौरा ग्राम स्थित एक हिन्दू तीर्थ स्थल है। यहाँ एक प्राचीन हिन्दू मंदिर है। सीतामढ़ी से 5 किलोमीटर दूर यह स्थल पर्यटकों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है। पुनौरा धाम जानकी कुंड पौराणिक काल में पुंडरीक ऋषि के आश्रम के रूप में विख्यात था। पुनौरा में ही देवी सीता का जन्म हुआ था। मिथिला नरेश जनक ने इंद्र देव को खुश करने के लिए अपने हाथों से यहाँ हल चलाया था। इसी दौरान एक मृदापात्र में देवी सीता बालिका रूप में उन्हें मिली। मंदिर के अलावे यहाँ पवित्र कुंड है।

वृहद विष्णु पुराण के वर्णनानुसार लक्ष्मणा सम्राट जनक की हल–कर्षण–यज्ञ–भूमि तथा उर्बिजा सीता के अवतीर्ण होने का स्थान है, जो उनके राजनगर से पश्चिम 3 योजन अर्थात 24 मील की दूरी पर स्थित थी। लक्ष्मना (वर्तमान में लखनदेई) नदी के तट पर उस यज्ञ का अनुष्ठान एवं संपादन बताया जाता है। हल–कर्षण–यज्ञ के परिणामस्वरूप भूमि–सुता सीता धरा धाम पर अवतीर्ण हुयी, साथ ही आकाश मेघाच्छन्न होकर मूसलाधार वर्षा आरंभ हो गयी, जिससे प्रजा का दुष्काल तो मिटा, पर नवजात शिशु सीता की उससे रक्षा की समस्या नृपति जनक के सामने उपस्थित हो गयी। उसे वहाँ वर्षा और वाट से बचाने के विचार से एक मढ़ी (मड़ई, कुटी, झोपड़ी) प्रस्तुत करवाने की आवश्यकता पड़ी। राजा की आज्ञा से शीघ्रता से उस स्थान पर एक मड़ई तैयार की गयी और उसके अंदर सीता सायत्न रखी गयी। कहा जाता है कि जहां पर सीता की वर्षा से रक्षा हेतु मड़ई बनाई गयी उस स्थान का नाम पहले सीतामड़ई, कालांतर में सीतामही और फिर सीतामढ़ी पड़ा। यहीं पास में पुनौरा ग्राम है जहां रामायण काल में पुंडरिक ऋषि निवास करते थे। कुछ लोग इसे भी सीता के अवतरण भूमि मानते हैं। परंतु ये सभी स्थानीय अनुश्रुतियाँ है। सीतामढ़ी तथा पुनौरा जहां है वहाँ रामायण काल में घनघोर जंगल था। जानकी स्थान के महत के प्रथम पूर्वज विरक्त महात्मा और सिद्ध पुरुष थे। उन्होने "वृहद विष्णु पुराण" के वर्णनानुसार जनकपुर नेपाल से मापकर वर्तमान जानकी स्थान वाली जगह को ही राजा जनक की हल–कर्षण–भूमि बताया। बाद में उन्होंने उसी पावन स्थान पर एक बृक्ष के नीचे लक्ष्मणा नदी के तट पर तपश्चर्या के हेतु अपना आसन लगाया। पश्चात काल में भक्तों ने वहाँ एक मठ का निर्माण किया, जो गुरु परंपरा के अनुसार उस काल के क्रमागत शिष्यों के अधीन आद्यपर्यंत चला आ रहा है। सीतामढ़ी में उर्विजा जानकी के नाम पर प्रतिवर्ष दो बार एक राम नवमी तथा दूसरी वार विवाह पंचमी के अवसर पर विशाल पशु मेला लगता है, जिससे वहाँ के जानकी स्थान की ख्याति और भी अधिक हो गयी है। श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में ऐसा उल्लेख है कि "राजकुमारों के बड़े होने पर आश्रम की राक्षसों से रक्षा हेतु ऋषि विश्वामित्र राजा दशरथ से राम और लक्ष्मण को मांग कर अपने साथ ले गये। राम ने ताड़का और सुबाहु जैसे राक्षसों को मार डाला और मारीच को बिना फल वाले बाण से मार कर समुद्र के पार भेज दिया। उधर लक्ष्मण ने राक्षसों की सारी सेना का संहार कर डाला। धनुषयज्ञ हेतु राजा जनक के निमंत्रण मिलने पर विश्वामित्र राम और

लक्ष्मण के साथ उनकी नगरी मिथिला (जनकपुर) आ गये। रास्ते में राम ने गौतम मुनि की स्त्री अहिल्या का उद्धार किया, यह स्थान सीतामढ़ी से 40 कि.मी. दूर अहिल्या स्थान के नाम पर स्थित है। मिथिला में राजा जनक की पुत्री सीता जिन्हें कि जानकी के नाम से भी जाना जाता है का स्वयंवर का भी आयोजन था जहाँ जनक प्रतिज्ञा कि अनुसार शिवधनुष को तोड़ कर राम ने सीता से विवाह किया । राम और सीता के विवाह के साथ ही साथ गुरु वशिष्ठ ने भरत का माण्डवी से, लक्ष्मण का उर्मिला से और शत्रुघ्न का श्रुतकीर्ति से विवाह करवा दिया।" राम सीता के विवाह के उपलक्ष्य में अगहन में विवाह पंचमी को सीतामढ़ी में प्रतिवर्ष सोनपुर के बाद एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला लगता है। इसी प्रकार जामाता राम के सम्मान में भी यहाँ चैत्र राम नवमी को बड़ा पशु मेला लगता है।

जानकी स्थान मंदिरः सीतामढी रेलवे स्टेशन से डेढ किलोमीटर की दूरी पर बने जानकी मंदिर में स्थापित भगवान श्रीराम, देवी सीता और लक्ष्मण की मूर्तियाँ है। यह सीतामढ़ी नगर के पश्चिमी छोर पर अवस्थित है। जानकी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध यह पूजा स्थल हिंदू धर्म में विश्वास रखने वालों के लिए अति पवित्र है। यह सीतामढ़ी का मुख्य पर्यटन स्थल है। रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड से लगभग 1–5 किमी दूर है । यह सीता का जन्म स्थान है। जानकी–कुंड मंदिर के निकट दक्षिण में है। नवरात्रि और राम नवमी त्योहारों के दौरान हजारों में भक्त मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर लगभग 100 साल पुराना है। इस जगह की किंवदंती महाकाव्य रामायण को संदर्भित करती है और उस स्थान के रूप में प्रसिद्ध है जहां सीता के जन्म के समय की गई छाया में एक छाया के नीचे उपचार किया गया था जहां वह राजा जनक नए जन्म के रूप में मिली थीं। यह एक आधुनिक संरचना के साथ एक काफी बड़ा मंदिर है। मंदिर के मुख्य देवता श्री राम, सीता और हनुमान हैं। जानकी कुंड के रूप में प्रसिद्ध एक नजदीकी टैंक वह जगह है जहां राजा जनक बेटी सीता को स्नान कराने के लिए ले जाते थे । यह लोकप्रिय पौराणिक कथाओं की धारणा थी। सौर संचालित रोशनी के लिए एक बड़ा आंगन का प्रावधान है। मंदिर का बड़ा प्रवेश द्वार इस पवित्र स्थान पर आगंतुकों का गर्मजोशी से स्वागत करता है। भक्तों की एक बड़ी सभा को समायोजित करने के लिए अंदर एक विशाल आंगन है। चूंकि रामायण का प्रभाव बिहार में हिंदुओं पर एक प्रमुख प्रभाव है, इसलिए मंदिर साल भर भक्तों द्वारा भर हुआ रहता है। राम नवमी और जानकी नवमी इस जगह के पवित्र त्यौहार हैं।

➢ जीतेन्द्र झा
सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)

जमाना बदल गया

समय का ये कैसा मोड़ है,
जसमें रात–दिन की दौड़ है,
खुश रहने का समय नहीं,
खुश दिखने की होड़ है।

है सबसे ऊपर दिखावा, अपने को श्रेष्ठ दिखाने का,
लीपापोती, स्वार्थ अपनाकर उल्लू सीधा करने का।

भाग चल, आगे निकल, लूट ले, जमाने की दौलत
इसी चाहत में खो बैठे हैं सुकून, चैन, चेहरे की रौनक।

आज मनुष्य पागल है सिर्फ ऐश्वर्य को पाने के लिए
भूल चुका हर नाता रिश्ता आगे बढ़ जाने के लिए।

समाज, बंधुत्व, देश हित को भूलकर स्वार्थ सिद्धि
चाहिए कर्तव्य, फर्ज को कोई नहीं समझता, हक सबको
चाहिए।

जागो देखो, जब इन्सान करवट लेता है
तब दिशा बदल जाती है।
और समय चक्र में जब वक्त करवट लेता है,
तब दशा भी बदल जाती है।

➢रजनीश कुमारर
सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा)

जलती झोंपड़ी

एक आदमी था। उसने समुद्र में अकेले घूमने के लिए एक नाव बनवाई। छुट्टी के दिन वह नाव लेकर समुद्र की सैर करने निकला। समुद्र के मध्य पहुँचा ही था कि अचानक एक जोरदार तूफान आया। उसकी नाव पूरी तरह से तहस–नहस हो गई लेकिन वह लाईफ जैकेट की मदद से समुद्र में कूद गया। जब तूफान शांत हुआ तब वह तैरता–तैरता एक टापू पर पहुँचा लेकिन वहाँ भी कोई नहीं था। टापू के चारों और समुद्र के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उस आदमी ने सोचा कि जब मैंने पूरी जिदंगी में किसी का कभी भी बुरा नहीं किया तो मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? उस आदमी को लगा कि भगवान ने मौत से बचाया तो आगे का रास्ता भी भगवान ही बताएगा। धीरे धीरे वह वहाँ पर उगे झाड़–पत्ते खा कर दिन बिताने लगा। अब धीरे–धीरे उसकी श्रद्धा टूटने लगी, भगवान पर से उसका विश्वास उठ गया। उसको लगा कि इस दुनिया में भगवान है ही नहीं। फिर उसने सोचा कि अब पूरी जिंदगी यही इस टापू पर ही बितानी है तो क्यों ना एक झोंपड़ी बना लूँ? फिर उसने झाड़ की डालियों और पत्तों से एक छोटी सी झोंपड़ी बनाई। उसने मन ही मन कहा कि आज से झोंपड़ी मे सोने को मिलेगा आज से बाहर नही सोना पड़ेगा। रात हुई ही थी कि अचानक मौसम बदला बिजलियाँ जोर–जोर से कड़कने लगी! तभी अचानक एक बिजली उस झोंपड़ी पर आ गिरी और झोंपड़ी धधकते हुए जलने लगी। यह देखकर वह आदमी टूट गया। आसमान की तरफ देखकर बोला तू भगवान नहीं, राक्षस है तुझमें दया जैसा कुछ है ही नहीं। तू बहुत क्रूर है। वह व्यक्ति हताश होकर सर पर हाथ रखकर रो रहा था कि अचानक एक नाव टापू के पास आई। नाव से उतरकर दो आदमी बाहर आये और बोले कि हम तुम्हें बचाने आये हैं। दूर से इस वीरान टापू में जलता हुआ झोंपड़ा देखा तो लगा कि कोई उस टापू पर मुसीबत में है। अगर तुम अपनी झोंपड़ी नहीं जलाते तो हमें पता नहीं चलता कि टापू पर कोई है। उस आदमी की आँखो से आँसू गिरने लगे। उसने ईश्वर से माफी माँगी और बोला कि मुझे क्या पता था कि आपने मुझे बचाने के लिए मेरी झोंपड़ी जलाई थी।

सीख – इंसान को संकट के समय श्रध्दा के साथ साथ बिना हतोत्साहित हुए निरंतर कोशिश करते रहना चाहिए।

➢ सुरेंद्र चौधरी
युवा सिविल अभियंता

भाई बहन का स्नेह

बड़े होकर भाई–बहन
कितनी दूर हो जाते हैं।

इतने व्यस्त हैं सभी, कि ...
मिलने को भी मजबूर हो जाते हैं.

एक दिन भी जिनके बिना ...
रह नहीं सकते थे हम.
सब ज़िन्दगी में अपनी ...
मसरूफ़ हो जाते हैं.

छोटी–छोटी बात बताए बिना ...
रह ऩहीं सकते थे हम.
अब बड़ी–बड़ी मुश्किलों से हम ...
अकेले जूझते जाते हैं.

ऐसा भी नहीं कि उनकी ...
अहमियत नहीं है कोई.
लेकिन अपनी तकलीफें ...
जाने क्यों उनसे छुपाते हैं.

कुछ नए रिश्ते जिन्दगी से कृ
जुड़ते चले जाते हैं.
और ... बचपन के ये रिश्ते ...
कहीं दूर हो जाते हैं.

खेल–खेल में रूठना–मनाना ...
रोज–रोज की बात थी.
अब छोटी सी गलतफ़हमी ...
दिलों को दूर कर जाती है.

सब अपनी–अपनी उलझनों में ...
उलझ कर रह जाते हैं.
कैसे बतायें उन्हें हम, कि ...
वो हमें कितना याद आते हैं.

वो जिन्हें हम एक पल भी ...
भूल नहीं पाते थे.
बड़े होकर वही भाई–बहन ...
कितनी दूर हो जाते हैं.भाई बहन का स्नेह

➤ राहुल चराया
चार्टर्ड अकाउंटेंट

हँसना बहुत जरुरी है

हँसना बहुत जरूरी है
रोने में कुछ नहीं फायदा
हँसना बहुत जरूरी है।

लोग क्यों नहीं हँस पाते हैं
ऐसी क्या मज़बूरी है।
हँसने से मुस्कराने से क्यों
बना रखी यह दूरी है
हँसने की आज़ादी सबको
ईश्वर ने दी पूरी है।
हँसना बहुत जरूरी है।

देखा है कल्लू काका को,
कई दिनों से हँसे नहीं
मुस्कानों के शहर कभी
उनके होठों पर बसे नहीं।
खुशियों से तोडा है नाता
बीते का दुःख कल की चिंता
इसका रोना गाना अब क्या।
हँसना बहुत जरूरी है।

तकलीफों का बैंड बजाकर
दुनिया को सब दिखलाना क्या
नहीं आज में क्यों जी पाते
ऐसी क्या मज़बूरी है।
हँसना बहुत जरूरी है

मस्ती हल्ला धूम–धड़ाका
जीने का आधार यही,
खुश रहकर खुद खुशी बाँटना हो
बात बड़ों ने यही कही
हँसना बहुत जरुरी है।

खुशी नहीं है अगर पास में
जीवन साध अधूरी है
रोने में कुछ नहीं फायदा
हँसना बहुत जरूरी है।

➤सोनम शर्मा
उत्पाद प्रबंधक

जांबाज मेजर 'संदीप उन्नीकृष्णन'

लगातार चलने वाली मुंबई उस वक्त थम गई थी, जब 26 नवंबर 2008 को आतंकियों ने ताज होटल पर हमला कर दिया था। इस हमले ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। मुंबई के तो मानों पहिए थम से गए हों, लोग बाहर नहीं निकल रहे थे। लेकिन इन सबके बीच जो हमारी रक्षा में जुटे हुए थे, वो थे–हमारे जवान, हमारी फौज, हमारे लोग। 26/11 अटैक में आतंकियों ने 150 से ज्यादा लोगों को मार गिराया था और यह संख्या ज्यादा भी हो सकती थी, अगर हमारे जवान न लड़ते। इन्हीं जवानों में से एक थे मेजर संदीप उन्नीकृष्णन। आतंकियों से लड़ते–लड़ते और लोगों को बचाते–बचाते मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने अपनी जान तक न्यौछावर कर दी और शहीद हो गए। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन का जन्म 15 मार्च 1977 को हुआ था। उन्नीकृष्णन ने अपनी शुरुआती पढाई बैंगलोर के फ्रैंक एंथोनी पब्लिक स्कूल से की। संदीप अपनी पढ़ाई के साथ खेल कूद में भी सबसे आगे हुआ करते थे और उन्होंने अपनी स्कूल की पढाई के दौरान कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया था । अपनी शुरुआती पढ़ाई पूरी करने के बाद आर्मी में जाने के लिए अपनी कड़ी मेहनत के दम पर राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी (National Defence Academy) के एग्जाम को बड़ी आसानी से पास कर लिया और NDA में प्रवेश ले लिया । 12 जुलाई 1999 को, मेजर संदीप को बिहार रेजिमेंट (इन्फैंट्री) की 7वीं बटालियन में लेफ्टिनेंट के रूप में नियुक्त किया गया था। जब जम्मू और कश्मीर और राजस्थान में लगातार आतंकी हमले हो रहे थे तब उन्हें वहाँ कई जगहों पर तैनात किया था । मेजर उन्नीकृष्णन ने 'घातक कोर्स' (कमांडो विंग (इन्फैंट्री स्कूल), बेलगाम में) में टॉप किया, जिसे सेना का सबसे कठिन कोर्स कहा जाता है और उन्होंने "इंस्ट्रक्टर ग्रेडिंग" और प्रशंसा अर्जित की। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने जुलाई 1999 में ऑपरेशन विजय में भाग लिया जब पाकिस्तानी सेना ने भारतीय क्षेत्र में प्रवेश किया और कारगिल युद्ध हुआ। 26/11 के आतंकी हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया था। जब भी देश मुंबई हमले को याद करता है, तब अमर शहीद मेजर संदीप उन्नीकृष्णन की भी याद आती ही है। उस हमले में संदीप ने अपनी जान की परवाह किए बगैर देश के लोगों, अपने वतनकी हिफाज़त के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी। 26 नवंबर 2008 की रात, सपनों की नगरी यानी मुंबई में दहशत फैल गई और दक्षिण मुंबई के 100 साल पुराने ताजमहल पैलेस होटल समेत कई प्रमुख इमारतों पर आतंकियों ने हमला कर दिया। उन्हें ताज महल होटल के सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। संदीप 10 कमांडो के दल के साथ होटल के छठवें तल पर पहुंचे, जहां उन्हें महसूस हुआ कि आतंकवादी तीसरे तल पर छुपे हैं। आतंकियों ने कुछ लोगों को बंधक बनाया हुआ था। दरवाजा तोड़कर उन्होंने गोलीबारी का सामना किया, जिसमें कमांडो सुनील यादव घायल हो गए। मेजर संदीप ने अपने प्राणों की चिंता न करते हुए सुनील को वहां से निकाला और लगातार गोलीबारी का जवाब देते रहे साथ ही भागते हुए आतंकवादियों का पीछा भी किया। इसी हमले और गोलियों की बौछार के बीच उन्होंने अपने साथियों से कहा – "ऊपर मत आना,मैं उन्हें संभाल लूंगा" ये संदीप के अंतिम शब्द थे। इन शब्दों में देशभक्ति, साथियों की सुरक्षा की भावना और विजय के प्रति उनका आत्म विश्वास झलकता है। मेजर संदीप ने आतंकियों को नजदीक से मार गिराया और बंधकों को बचाने में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। 26 जनवरी, 2009 को, भारत की राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने शहीद मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को उनके अदम्य साहस, अडिग लड़ाई की भावना और सर्वोच्च बलिदान के लिए देश के सर्वोच्च शांति समय के वीरता पुरस्कार "अशोक चक्र" से सम्मानित किया। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन का अंतिम संस्कार करने के लिए बैंगलोर स्थित उनके आवास के बाहर अंतिम संस्कार की यात्रा में भीड़ उमड़ पड़ी। उनका अंतिम संस्कार पूरे सैन्य सम्मान के साथ किया गया।

➢मोहित माथुर
सहायक प्रबंधक (तकनीकी)

मन की शांति

मन की शांति किसी भी मनुष्य के लिए एक अनमोल धन है। इसके बिना जीवन में सब कुछ बेकार है। अगर आपके मन में शांतिनहीं होगी तो आप इस दुनिया की किसी भी चीज से प्रसन्न और आनंदित नहीं होसकते भले ही आपके पास कितना भी धन क्यों ना हो. वहीँ अगर आपके पास मन कीशांति है तो आप झोंपड़ी में भी प्रसन्नता के साथ रह सकते हैं. मन की शांतिएक ऐसा अनमोल धन है जिसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को सदैव प्रयत्नशील रहनाचाहिए और हमेशा इस मूल्यवान धन की रक्षा करना चाहिए. क्योंकि एक बार आपका रुपया–पैसा चला गया तो उतना नुक्सान नहीं होगा जितना की मन की शांति के चले जाने से होगा। यह एक ऐसा खजाना है जो आपको बड़ा भाग्यवान और ताकतवर बना देता है। सच है कि पैसों से बहुत कुछ खरीदा जा सकता है लेकिन संतोष और मन की शांति को पैसों से नहीं खरीद सकते। यह एक ऐसी चीज है जो हमें अपने अन्दर विकसित और धारण करनी होती है. आज दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं जिनके पास अथाह संपत्ति है पर फिर भी वे खुद को कंगाल समझते हैं क्योंकि उनके पास मन की शांति नहीं है। सफलता प्राप्त करने के लिए मन की शांति होना बहुत जरूरी है। एक अशांत और चिंतित मन से आप किसी बढ़िया परिणाम की उम्मीद नहीं कर सकते। अशांत मन किसी भी काम पर पूरा फोकस ठीक से नहीं कर पाता जिससे कोई भी कार्य अपने सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता। एक तनावयुक्त और प्रसन्नचित दोनों तरह के मनस्थिति में किए गए कामों का अवलोकन करके देखिए। जो काम एक प्रसन्नचित से पूरी शांति के साथ किया जाता है उसकी गुणवत्ता कुछ अलग ही होती है ।

पैसा कमाना बहुत जरूरी है। लेकिन कुछ लोग पैसा कमाने की दौड़ में इस तरह से लग जाते हैं कि वे अपने जीवन की दूसरी चीजों को खतरनाक तरीके से नजरअंदाज करने लगते है। कुछ समय बाद एक ऐसा समय आता है कि जीवनकाल में दूसरी जरूरी चीजें उनके हाथ से निकलने लगती हैं जिसे स्वस्थ पारिवारिक जीवन मन की शांति और प्रसन्नतचित पैसा कमाना भी जरूरी है और अपने जीवन की दूसरी आवश्यक बातों पर ध्यान देना भी जरूरी है। इसलिए ध्यान रखें कि रुपया पैसा कमाने की भागदौड में जिंदगी की अन्य जरूरी जिम्मेदारियां और मन की शांति पीछे न छूटने पाए। शांति की शुरूआत मुस्कुराहट के साथ होती है। सुख प्राप्ति का सबसे अच्छा मार्ग मन की शांति है। मन की शांति आपके मन से ही शुरू होती है और मन पर ही खत्म होती है। अगर आपकी लाइफ में शांति है तो आप संसार के सबसे सुखी व्यक्ति हैं. जीवन के प्रति सकारात्मकता और मन की शांति का आपस में गहरा संबंध है। एक सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति बड़ी से बड़ी मुसीबत को भी आसानी से पार कर जाता है. जिसे मन को शांत रखने की कला आती है वह सच्चे अर्थों में एक बहुत ही चतुर इन्सान होता है। ऐसा व्यक्ति हरदम खुश रहता है और नकारात्मकता उसके पास भी नहीं फटकती। अगर आप सकारात्मक सोच और मन की शांति दोनों को संभाल सकते हैं कर सकते हैं तो आप अपनी सपमि में खुश रहना सीख सकते हैं। अगर आप सोचते हैं कि आप हर समय परेशान नहीं रहें तो आपको खुद को शांत रखने की कला सीखनी होगी। एक शांत और प्रसन्न चित्त मस्तिष्क बड़ी से बड़ी समस्या को भी आसान से सुलझा सकते हैं। शांत मन ही हम सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं. इसलिए मन की शांति के महत्व को समझना बहुत जरूरी है। जिंदगी की महत्वपूर्ण दौलतों में से एक है मन की शांति। इस दौलत के बिना आप अमीर नहीं कहला सकते क्योंकि ऐसी अमीरी किस काम की जहाँ उसे पाकर भी खुशी नहीं हो. शांति एक ऐसी चीज है जो किसी भी उपलब्धि पर मन को सुकून देती है। अशांत मन हमेशा कुछ न कुछ उधेड़बुनमें ही लगा रहता है और जिंदगी के

सुख–ऐश्वर्य को भोगने के आत्मिक सुख से वंचित रहता है। सुख को महसूस करने के लिए मन में शांति भी तो जरूरी है। अगर आप एक सच्चे दौलतमंद इंसान बनना चाहते हैं तो मन की शांति बनाये रखने के बारे में भी सोचिये। इस बात का प्रयास कीजिये कि आप कैसे खुद को अक्सर सकरात्मक रख सकते हैं सफलता पाने के लिए मन की शान्ति भी जरूरी है और सफलता को एन्जॉय करने केलिए भी. उदाहरण के लिए आप भारतीय क्रिकेट टीम को ले सकते हैं। क्रिकेटिंगस्किल्स की बात की जाए तो धोनी को बेस्ट नहीं कहा जा सकता लेकिन अगर टेम्परामेंट की बात हो तो उनका कोई सानी नहीं है, इसीलिए लोग उन्हें कप्तानकूल भी कहते हैं और यही शांत मन से यही सकारात्मक उन्हें इतनी सलफता दिलाती है. इसके अलावा ये सफलता का सही तरह से जश्न मनाने में भी मदद करती है । बहुत से लोगों की आदत होती है कि वो पुरानी बातों को सालों साल तक याद रखते हैं और उन पर सोचते रहते हैं। किसी ने कुछ कडवी बात कह दी तो उसे लम्बे समय तक दिमाग में रखना और उस पर सोचते ही रहना मन की शांति को बिगड़ने के लिए पर्याप्त है। इसलिए कडवी बातों को अधिक समय तक मन में न रखें। इसके बजाय आप कुछ अच्छी और मधुर स्मृतियों के बारे में सोच सकते हैं जो आपके मन को अच्छी लगें।

शांति का कोई मार्ग नहीँ हैं, बल्कि शांति खुद ही एक मार्ग हैं।

➢नवीन जोशी
सहायक प्रबंधक (परियोजना– I)

राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा तैयार की गई 12 'प्र' के प्रयोग की रूपरेखा

- प्रेरणा (Inspiration and Motivation)
- प्रोत्साहन (Encouragement)
- प्रेम (Love and affection)
- प्राइज़ अर्थात् पुरस्कार (Rewards)
- प्रशिक्षण (Training)
- प्रचार (Advocacy)
- प्रसार (Transmission)
- प्रबंधन (Administration and Management)
- प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)
- प्रतिबद्धता (Commitment)

दुनिया नमन करेगी

ना जाने वो मंजिल किस मोड़ पर मिल जाएगी
तुम बस निस्वार्थ आगे बढ़ो,
सोने की तरह तपो और दुनिया नमन करेगी।

इस सफर मे ना कोई बड़ा ना छोटा,
सब समान हैं और सबका सम्मान है,
यह सोच अपनाओगे तो
कायनात साथ निभायेगी और दुनिया नमन करेगी।

आपका सबसे रिश्ते निभाना, और लोगों के दुख पे मरहम लगाना,
इससे आपकी इज्जत और बढ़ेगी और दुनिया नमन करेगी।

जिंदगी भर कितने पैसे कमाए, या जिंदगी में कितने रिश्ते निभाए
यह आपकी अंतिम पूंजी न जाएगी,
अगर रिश्तों को पैसे से ऊपर रखोगे तो दुनिया नमन करेगी।

आज अपने फायदे के लिए हर कोई लड़ रहा है,
अपने मां बाप को जायदाद के लिए तरस रहा है।
कभी उन मां बाप के पांव दिल से दबाएं,
उन मां बाप की लाठी का सहारा बन जाएं,
अपनों के दिल में घर कर जाएगी, और दुनिया नमन करेगी।

भाई बहन से तो जैसे जमीन प्यारी हो गई,
ऐसी भूख की तो कोई सीमा ना हो गई।
राखी के बंधन को जेवर के लिए
ना ठुकराना और पूरे विश्व में
इंसानियत की मशाल जलाना,
यह किसी के दिल में छाप छोड़ जाएगी
और दुनिया नमन करेगी।

➤दीपांकर कुमरा
कार्यालय सहायक (परियोजना–III)

दूध में मक्खी

दूध में गिरी अकस्मात मक्खी से,
मैं घबराई, सोचा दूध को फेंक दें,
किंतु अन्न जल की कद्र का ख्याल आया,
और मैंने मक्खी को अनाप–शनाप सुनाया,
तभी पापा ने पीछे से हल्का सा थप्पड़ मारा,
अरे व्यर्थ क्यों चिंता कर रही हो,
सीधे मक्खी को क्यों नहीं निकाल रही हो,
दूध छानकर हल्दी मिलाकर पीने में क्या
नुकसान है,
इतना संशय क्यों पाल रही हो,
हर मोड़ पर तुम्हें दूध में काला दिखेगा,
फिर कितना गुस्सा दिखाओगे,
अच्छा है सहज बनो,
छोटी–छोटी बातों को नजरअंदाज करो,
जीवन लंबा है इसे आनंद से जियो,
व्यर्थ में क्यों तिल का ताड़ बना कर समय
बिगाडती हो,
दुख पीड़ा निराशा ही इससे आपको मिलेगी
सहजता अपनाओ और शंका हटाओ,
ईष्ट का ध्यान मन में रख मीरा की तरह,
इस दूध को छान अमृत मान सेवन करो,
हर पल को प्रसन्नता और सहजता से जियो
यही जीवन का सार है।

➤ सविता पोखरियाल
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

यह दिल मांगे मोर – 'कारगिल का शेर

कैप्टन विक्रम बत्रा भारतीय सेना के एक अधिकारी थे जो मात्र 24 साल की उम्र में पाकिस्तान के खिलाफ लड़ाई करते हुए कारगिल के युद्द में वीरगति को प्राप्त हुए। उनके साहस और उनके पराक्रम को भारत हमेशा याद रखेगा कि कैसे उन्होंने पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ा दिए थे और भारत को कारगिल की लड़ाई में ऐतहासिक जीत दिलाई थी। कैप्टन विक्रम बत्रा को उनके साहस की वजह से शेर शाह , कारगिल का शेर जैसे नामो से भी जाना जाता है। विक्रम बत्रा का जन्म 9 सितंबर, 1974 को पिता गिरधारी लाल बत्रा एवं माँ कमल कांता बत्रा के यहां हिमाचल प्रदेश के पालमपुर गांव में हुआ था।विक्रम का केंद्रीय विद्यालय आर्मी क्षेत्र में होने के कारण वे प्रतिदिन आर्मी की ट्रेनिंग,अनुशासन वगैरह देखा करते थे जिसकी वजह से विक्रम के मन भी आर्मी में भर्ती होने की इच्छा जागी। जब विक्रम बत्रा ने डीएवी कॉलेज में दाखिला लिया था तभी से उन्होंने भारतीय सेना में भर्ती होने का मन बना लिया और अपने पिता को अपने इस निर्णय के बारे में भी बता दिया था कि वह सेना में भर्ती होना चाहता है। डीएवी कॉलेज में पढ़ाई के दौरान वे एनसीसी के एयर विंग में शामिल हो गए.उन्होंने एनसीसी के एयर विंग को ज्वाइन करके पिंजौर एयरफील्ड और फ्लाइंग क्लब में ट्रेनिंग हासिल की।

साल 1994 में विक्रम को हांगकांग में मर्चेन्ट नेवी की नौकरी मिल रही थी लेकिन उनको भारतीय थल सेना में भर्ती होना था। इसीलिए उन्होंने इस नौकरी को ठुकरा दिया। साल 1996 में विक्रम ब्वे परीक्षा में पास हो गए और इलाहाबाद में स्थित सेवा चयन बोर्ड (आईएमए) के द्वारा उनको चुना गया। विक्रम को भारतीय सैन्य अकादमी (IMA) में भर्ती होने का मौका मिला जिसके लिए उन्होंने चंडीगढ़ के पंजाब विश्वविद्यालय की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। साल 1996 में विक्रम बत्रा ने मानेकशॉ बटालियन (IMA) में दाखिला ले लिया। साल 1997 में विक्रम ने मानेकशॉ बटालियन (IMA) से अपनी 19 महीने की ट्रेनिंग को पूरा किया और उसके बाद उन्होंने प्ड से ग्रेजुएशन पूरा किया। विक्रम की ट्रेनिंग पूरी होने के बाद उनको 13वीं बटालियन, जम्मू और कश्मीर राइफल्स में लेफ्टिनेंट के तौर पर चुना गया। जब विक्रम बत्रा की 30 दिनों की ट्रेनिंग पूरी हो गयी तब उन्हें 6 दिसम्बर 1997 को जम्मू और कश्मीर में स्थित नगर सोपोर में बतौर लेफ्टिनेंट नियुक्त किया गया। साल 1999 में उन्होंने कर्नाटक में दो महीने के कमांडो कोर्स किये। कर्नाटक में कोर्स पूरा करने के बाद विक्रम को सर्वोच्च ग्रेडिंग –Instructor*s Grade से सम्मानित किया। साल 1999 में जब भारत के साथ पाकिस्तान का कारगिल युद्द शुरू हुआ तब विक्रम बत्रा को उनकी एक टुकड़ी के साथ कारगिल युद्द में भेजा गया जहाँ पर उन्होंने अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ साहस का परिचय देते हुए हम्प व राकी नाब जीत कर अपने कब्जे में ले लिया था। उनका यह सहस देख कर कैप्टन के पद पर नियुक्त किया गया इस तरह वे विक्रम बत्रा से कैप्टन विक्रम बत्रा बने। कारगिल युद्ध में जाने से पहले विक्रम ने अपने दोस्त से कहा था कि – "या तो में अपने तिरंगे को लहराता हुआ घर आऊंगा या उसमें लिपटा हुआ लौटूंगा लेकिन मैं जरूर आऊंगा"। 20 जून 1999 को 5140 चोटी पर विजय प्राप्त करने के बाद उन्होंने रेडिओ के जरिये अपनी जीत को लेकर अपना प्रसिद्द डायलॉग रेडियो पर कहा " यह दिल मांगे मोर ".इस जीत के बाद और अपने प्रसिद्द डायलॉग की वजह से वो भारतीय सेना के साथ साथ पूरे भारत के लोगो के दिलो में छा गए। पॉइंट 5140 पर ऑपरेशन विजय के दौरान विक्रम को एक कोड नाम दिया गया था और उनका कोड नेम था 'शेरशाह'.विक्रम को यह कोड नाम उनके कमांडिंग ऑफिसर

लेफ्टीनेंट कर्नल वाई.के. जोशी द्वारा दिया गया था। उनके द्वारा प्राप्त की गयी जीत से भारत के लोग एवं भारतीय सेना इतनी खुश हुई की उनको 'कारगिल का शेर' का नाम दे दिया। 5140 चोटी पर विजय प्राप्त करने के बाद कैप्टन विक्रम बत्रा और उनकी टुकड़ी को अब 4875 वाली संकरी चोटी पर विजय करने के लिए उन्हें इस अभियान पर भेजा गया। पहाड़ की इस छोटी पर एकदम सीधी चढ़ाई थी और चोटी के एकमात्र रास्ते को पाकिस्तानी सेना ने अपने कब्जे में ले रखा था। 4875 वाली संकरी चोटी वाले अभियान के दौरान पाकिस्तानी सेना से आमने सामने की लड़ाई में उनको कई गंभीर घाव हो गए। गंभीर घाव की वजह से उनका चलना मुश्किल हो गया था लेकिन उन्होंने रेंगते हुए जाकर दुश्मनो की ग्रेनेड फेंक कर उनका सफाया कर दिया अपनी जान की परवाह किये बगैर विक्रम और उनकी टुकड़ी ने दुश्मनो पर आक्रमण जारी रखा और एक एक करके सारे दुश्मनो को मारते हुए आगे बढ़ते गए । इस लड़ाई में उनके एक साथी को गोली लग गई थी जिसको बचाने के लिए जैसे ही सीधे खड़े हुए दुश्मनो की नजरो में आ गये। एक दुश्मन द्वारा स्नाइपर द्वारा छाती में बहुत करीब से गोली मार दी गई। थोड़ी देर बाद दूसरी गोली आकर उनके सर में लगी और गोली लगते ही विक्रम अपने उस घायल साथी के बगल में गिर गए और दम तोड़ दिया और इस तरह वे वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी मौत के बाद उनके साथी बदला लेने की भावना से दुश्मनो पर बुरी तरह से टूट पड़े और 4875 वाली संकरी चोटी को अपने कब्जे में ले लिया। पॉइंट 4785 पर विक्रम बत्रा और उनकी टीम के द्वारा विजय प्राप्त करने के बाद विक्रम बत्रा को सम्मान देने के लिए इस पहाड़ को 'बत्रा टॉप' के नाम से जाना जाने लगा । भारत सरकार ने उनकी वीरता के लिए उनके मरणोपरांत उनको भारत के सर्वोच्च और सबसे प्रतिष्ठित वीरता पुरस्कार 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया।

➤ विजय इंग्ले
प्रोग्रामर (तकनीकी)

भारत सरकार
गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद में 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज से अपने सार्थियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहन करेंगे अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवबर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिन्द!

सबसे बड़ा मूर्ख

एक राजा ने अपने मंत्री को एक सोने का डंडा देकर कहा, जो भी व्यक्ति तुम्हें तुमसे ज्यादा मूर्ख दिखाई दे उसे यह सोने का डंडा दे देना क्योंकि यह डंडा सिर्फ मूर्ख लोगों के लिए ही बना है। मंत्री डंडा लेकर चल पड़ा। बहुत तलाश करने के बाद उसे एक ऐसा मूर्ख दिखाई पड़ा जो उससे भी ज्यादा मूर्ख था और उस मंत्री ने वह सोने का डंडा उसे देकर कहा"यदि तुम्हे कोई अपने से भी ज्यादा मूर्ख व्यक्ति मिले तो उसे यह डंडा दे देना। वह व्यक्ति भी अपने से ज्यादा मूर्ख व्यक्ति की तलाश में हर जगह घूमता रहा पर उसे ऐसा एक भी व्यक्ति न मिला। इस प्रकार कई महीनों तक भटकते हुए वह व्यक्ति उसी राजा राज दरबार में पहुंचा, जिसने अपने मंत्री को सोने का डंडा दिया था। वह व्यक्ति जब राज दरबार में पहँचा, वहां पर लोगों की भारी भीड़ लगी हुई थी। वह व्यक्ति उस सोने के डंडे को अपने थैले में डाल कर राजा से मिलने पहुँचा। वहां उसने देखा कि राजा तो बहुत ज्यादा बीमार पड़ा था और वैद्य जी उनकी नब्ज देख रहे थे। राजा ने सभी लोगों से कहा, "मेरा अंत समय आ चुका है। अब मैं इस संसार को छोड़कर जा रहा हूँ। तभी उस व्यक्ति ने राजा से कुछ पूछने की आज्ञा मांगी। राजा ने कहा, पूछो क्या पूछना है तुम्हें मगर जल्दी पूछो। फिर उस व्यक्ति ने पूछा, महाराज आप की सेना, हाथी, घोड़े और जो राज्य आपने कई राजाओं और लोगों को मारकर जीता है और उन राजाओ से जीता हुआ सोना, चांदी, हीरे, मोती इन सबका अब क्या होगा। यह सुनकर राजा की आंखों में आंसू आ गए और कहा, ये सब अब मेरे किसी काम के नहीं हैं। ये सब यहीं रहेंगे। तब उसी वक़्त वह व्यक्ति अपने थैले में से वह सोने का डंडा निकाल कर राजा को देते हुए कहता है, महाराज, संभालिए इस सोने के डंडे को इसके असली हकदार आप ही है, क्योंकि मुझ से कहा गया था कि यह सोने का डंडा मैं उस व्यक्ति को दूँ जो मुझसे ज्यादा मूर्ख हो। लेकिन महाराज मुझे यह कहने में कोई डर नहीं कि आपसे ज्यादा कोई और मूर्ख हो ही नहीं सकता। क्योंकि जब आपको पता था कि यह सोना, चांदी, हीरे, मोती और इतने बड़े–बड़े राज्यों को आप मरने के बाद भगवान के पास ऊपर नहीं ले जा सकते तो फिर आपने इतने लोगों को क्यों मारा, क्यों अपना पूरा जीवन दूसरे राज्यों को लूटने में बिता दिया? क्या मिला आपको यह सब हासिल करके। इसलिए मेरे हिसाब से महाराज पूरी दुनिया में आपसे बड़ा मूर्ख कोई हो नहीं सकता। इसलिए मैं आपसे माफ़ी मांगता हूँ। यह डंडा आप ही रखिए। यह कहकर वहां से वह व्यक्ति चला जाता है। राजा अपने डंडे को देखकर रोने लगता है। उसने मन ही मन सोचा कि वास्तव में दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख मैं ही हूँ क्योंकि मैंने बुरे कर्म तो बहुत किए मगर अच्छा कर्म एक भी नहीं किया। इस बात का राजा को बहुत ज्यादा पछतावा होता है। जीवन में हर एक इंसान को हमेशा अच्छे कर्म और दूसरों की भलाई ही करनी चाहिए। अंत में अच्छे और बुरे कर्म ही उसके साथ जाते हैं।

➤ विजय शर्मा
टैक्नीकल लीड, NICSI

सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव

नमस्कार, आज हम सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावो के बारे में जानने वाले हैं। सूचना प्रौद्योगिकी समाज के लिए कितना आवश्यक है। इसका अंदाजा हम इस बात से लगा सकते हैं कि आज जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे दूर नहीं है। जन्म से ही सूचना प्रौद्योगिकी हमारी एक–एक सांस से जुड़ी है। यहां तक कि हमारे रहन सहन खानपान एवं व्यापार उद्योग आदि भी सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े हैं। सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। जिस समाज में सूचना का प्रसार एवं प्रचार अधिक है वह समाज उतना ही अधिक उन्नत और विकसित है। आप दुनिया के कुछ बड़े देशों को देख सकते हैं जैसे जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन ये देश सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी ज्यादा विकसित देश हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक प्रभावः– सूचना प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के हर निर्णय को आसान बना दिया है। आज सूचना प्रौद्योगिकी का मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण और अनोखा ही महत्व है। विश्व स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी का काफी ज्यादा महत्व है। वर्तमान युग को सूचना प्रौद्योगिकी युग भी कहा जाता है। विश्व स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा लाभ है और विश्व स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ व्यक्तियों, समुदायों, संघों, कंपनियों एवं अनेक प्रकार के राष्ट्र को भी प्राप्त हो रहा है। आज मोबाइल, इंटरनेट, फैक्स, ईमेल आदि सुविधाओं का प्रयोग करके आवश्यक जानकारियों एवं सूचनाओं को पलक झपकते ही कुछ ही पलों मे संसार के एक कोने से दूसरे कोने में भेजा जा सकता है और पल भर में ही किसी भी सूचना को संसार के किसी भी कोने से प्राप्त किया जा सकता है।

- निर्णय लेने में सहायकः सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से किसी भी व्यवसाय में उसको चलाने वाले या उससे संबंधित किसी भी व्यक्ति द्वारा आर्थिक एवं आनुपातिक निर्णय सही समय पर लिए जा सकते हैं, जिसका परिणाम यह होगा कि भविष्य में होने वाली त्रुटियों तथा हानियों से सुरक्षा प्राप्त हो जाती है और उससे कोई जोखिम भी नहीं होता। निर्णय लेने में भी सूचना प्रौद्योगिकी का काफी योगदान है।

- कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करनाः सूचना प्रौद्योगिकी का कर्मचारियों के लिए भी काफी ज्यादा योगदान है और यह उनके लिए काफी ज्यादा महत्वपूर्ण भी है क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत किसी भी संस्थान के कर्मचारियों को कंप्यूटर कार्य का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है उन्हें इसके बारे में संपूर्ण रूप से प्रशिक्षित किया जाता है और जब वे प्रशिक्षित हो जाते हैं तो उन्हें विशेष कार्य सौंप दिए जाते हैं क्योंकि कर्मचारी कंप्यूटर का उपयोग जितनी अधिक कुशलता से करेंगे वह संस्थान के लिए उतना ही अधिक उपयोगी माना जाएगा।

- कर्मचारियों का रिकॉर्ड रखने में मददगारः किसी भी संस्थान में कर्मचारियों का रिकॉर्ड रखने के लिए यह बहुत मददगार साबित हुआ है। किसी संस्थान में कर्मचारियों का रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए डेटाबेस को इस प्रकार बनाया गया है कि वह विभिन्न कर्मचारियों के संबंध में आवश्यक जानकारियों का रिकॉर्ड रख सकें। इससे फायदा यह होगा कि आवश्यकता पड़ने पर कार्य कुशल लोगों से विशेष कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न कराया जा सके।

- लिखित कार्य में कमीः कंप्यूटर के आने के बाद लिखित कार्य में बहुत ज्यादा कमी देखने को मिली है। आज से कुछ समय पहले संस्थान में जिस कार्य को करने हेतु कई कर्मचारियों की नियुक्ति करनी पड़ती थी आज उस कार्य को केवल एक ही व्यक्ति कंप्यूटर की सहायता से कम से कम समय में पूरा कर सकता है।

इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ है कि संस्थान पहले की तुलना में ज्यादा प्रतियोगी एवं गुणवत्ता वाले उत्पाद और सेवाएं कम खर्च में प्रदान कर सकते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के नकारात्मक प्रभावः– विगत कुछ वर्षों में, सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग का तीव्र गति से प्रसार हुआ है और इसने मानव जीवन में प्रमुख भूमिका प्राप्त कर ली है। यह प्रत्येक स्तर पर दैनिक जीवन और मानव अस्तित्व के साथ अपरिहार्य रूप से जुड़ी हुई है। यद्यपि, प्रौद्योगिकी अपने साथ रूपान्तरकारी परिवर्तन लेकर आई है, किन्तु साथ ही इसके कई नकारात्मक प्रभाव भी पडे हैं और परिणामस्वरूपः–

- बेरोजगारी में वृद्धिः सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा नकारात्मक प्रभाव यह है कि इसके कारण लगातार बेरोजगारी बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान युग में किसी भी कार्यालय, संस्था तथा उपक्रम में अधिकांश कार्य कंप्यूटर के द्वारा ही किए जाने लगे हैं। जिस कार्य को पहले कई व्यक्ति मिलकर करते थे आज उस कार्य को केवल एक व्यक्ति कंप्यूटर पर कर देता है। इस प्रकार बेरोजगारी में निरंतर वृद्धि होती जा रही है।

- गोपनीयता की कमीः हम कंप्यूटर में जो भी कार्य करते हैं या किसी भी प्रकार के फॉर्म इत्यादि भरते हैं तो वे सभी प्रकार के डेटाबेस कंप्यूटर में स्टोर रहते हैं जिसमें हमारी निजी जानकारियां बैंक इत्यादि की जानकारियां स्टोर रहती हैं। कोई भी व्यक्ति कंप्यूटर में डेटाबेस के अंतर्गत इसकी सभी जानकारियां प्राप्त कर सकता है। इसलिए कंप्यूटर में संग्रहित आंकड़ों पर गोपनीयता के उजागर होने का खतरा बढ़ जाता है।

- कंप्यूटर और केलकुलेटर की बढ़ती आदतः आज के समय में अधिकांश व्यक्ति कंप्यूटर एवं केलकुलेटर के आदी हो चुके हैं । कोई भी व्यक्ति स्वयं अपना दिमाग लगाकर कोई चीज जोड़ना या घटाना नहीं चाहता। हर व्यक्ति कंप्यूटर या अपने स्मार्टफोन में ही उपयोग करके जोड़ना घटाना गुणा भाग कर लेता है। जिस कारण बाद में उसको केलकुलेटर के अभाव में गणितीय क्रियाओं को करने में काफी परेशानी होती है । इसलिए केलकुलेटर ने मानव जीवन में गणितीय क्रियाओं को आसान तो बनाया है, लेकिन हमारे दिमाग में लगे केलकुलेटर की कार्य क्षमता को प्रभावित कर दिया है। कंप्यूटर की बढ़ती आदत ने मानव जीवन को काफी प्रभावित किया है । आजकल लगभग सभी व्यक्ति कंप्यूटर पर गेम क्विज आदि में अपना अधिकतर समय व्यतीत करते हैं। कंप्यूटर चलाते समय वे प्रायः वातानुकूलित कमरे में बैठे रहते हैं जिससे उन्हें इसकी आदत पड़ जाती है लेकिन शायद वे यह नहीं जानते कि यह सब उनके स्वास्थ्य के लिए कितना हानिकारक हो सकता है।

- कंप्यूटर में स्टोर डाटा बेस की सुरक्षा को खतराः आज के समय में लगभग हर व्यक्ति अपने बैंक अकाउंट को इलेक्ट्रॉनिक डाटा के रूप में रखते हैं धन राशि निकालने के लिए ग्राहकों द्वारा एटीएम कार्ड का प्रयोग किया जाता है इस प्रकार आज रिकॉर्ड कागजों में ना रखकर मैग्नेटिक माध्यम से कंप्यूटर में रखा जाता है यदि कंप्यूटर सिस्टम में वायरस आ जाए तो पूरा का पूरा डेटाबेस कुछ ही सेकंड में नष्ट किया जा सकता है यदि डेटाबेस का बैकअप नहीं रखा गया हो तो पूरे के पूरे रिकॉर्ड नष्ट हो जाते हैं इस प्रकार डाटा की सुरक्षा को सदैव खतरा बना रहता है।

➢ राजेंद्र सिंह राठौड़
उत्पाद प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)

स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिन्दी

हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिन्दी दिवस भारत में हर वर्ष 14 सितंबर' को मनाया जाता है। हिन्दी विश्व में बोली जपने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ– साथ हमारी 'राष्ट्रभाषा' भी है और दुनिया भर में हमें सम्मान भी दिलाती है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की।

इतिहास–भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी । इसी महत्वपूर्ण निर्णय को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति , वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से सम्पूर्ण भारत में प्रति वर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

हिन्दी का महत्व–धीरे–धीरे हिन्दी भाषा का प्रचलन बढ़ा और इस भाषा ने राष्ट्रभाषा का रूप ले लिया । अब हमारी राष्ट्रभाषा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है। इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिम्ब है। आज विश्व के कोने–कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रुख कर रहे हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल–समझ लेता हैं। यही इस भाषा की पहचान भी है कि इसे बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नहीं होती ।

अंग्रेजी बाजार में पिछड़ती हिंदी –पहले के समय में अंग्रेजी का ज्यादा चलन नहीं हुआ करता था, तब यही भाषा भारतवासियों या भारत से बाहर रह रहे हर वर्ग के लिए सम्माननीय होती थी। लेकिन बदलते युग के साथ अंग्रेजी ने भारत की जमीं पर अपने पांव गड़ा लिए हैं। जिस वजह से आज हमारी राष्ट्रभाषा को हमें एक दिन के नाम से मनाना पड़ रहा है। पहले जहां स्कूलों में अंग्रेजी का माध्यम ज्यादा नहीं होता था, आज उनकी मांग बढ़ने के कारण देश के बड़े– बड़े स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे हिंदी में पिछड़ रहे हैं। इतना ही नहीं , उन्हें ठीक से हिन्दी लिखनी और बोलनी भी नहीं आती है। आजकल अंग्रेजी बाजार के चलते दुनिया भर में हिंदी जानने और बोलने वाले को एक गंवार के रूप में देखा जाता है या यह कह सकते हैं कि हिन्दी बोलने वालों को लोग तुच्छ नजरिए से देखते हैं। यह कतई सही नहीं है। हम या आप जब भी किसी बड़े होटल या बिजनेस वाले लोगों के बीच खड़े हो कर गर्व से अपनी मातृभाषा का प्रयोग कर रहे होते हैं तो उनके दिमाग में आपकी छवि एक गंवार की बनती है। घर पर बच्चा अतिथियों को अंग्रेजी में कविता आदि सुना दे तो माता–पिता गर्व महसूस करने लगते हैं। इन्हीं कारणों से लोग हिन्दी बोलने से घबराते हैं। आज हर माता–पिता अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाते हैं। इन स्कूलों में विदेशी भाषाओं पर तो बहुत ध्यान दिया जाता है लेकिन हिन्दी की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया जाता । लोगों को लगता है कि रोजगार के लिए इसमें कोई खास मौके नहीं मिलते।

हिन्दी दिवस मनाने का अर्थ ही है, गुम हो रही हिन्दी को बचाने के लिए एक प्रयास और हिंदी भाषा को वो मान–सम्मान दे पाए जो भारत और देश की भाषा के प्रति हर देशवासी की नजर में होना चाहिए।

➢अनु ठाकुर
वरिष्ठ डेवलपर –आईसीटी

युवाओं की सोच से बदलता देश

सोच उच्च हो तो बड़ा महान और छोटा बड़ा बन जाता हैं। आपकी सोच ही आपके जीवन का वास्तविक दर्पण होता है । इसलिये तो लोग टूटे दर्पण में अपने मुख का दर्शन नही करते हैं। सोच अगर आपकी छोटी और तुच्छ हो तो आपकी प्रतिष्ठा में गिरावट तय मानिये । आपका पद, प्रतिष्ठा, मान– सम्मान इन सबका आधार आपकी सोच ही है । अपने बड़े बुजुर्गों के सानिध्य में जो युवा बड़ा हुआ है वो तो इस देश की अमूल्य धरोहर हैं । युवा वह अवस्था होती है जब कोई लड़का बचपन की उम्र को छोड़ धीरे–धीरे वयस्कता की ओर बढ़ता है। इस उम्र में अधिकांश युवा लड़कों में एक जवान बच्चे की जिज्ञासा और जोश तथा एक वयस्क के ज्ञान की उत्तेजना होती है। युवा कल की आशा हैं। वे राष्ट्र के सबसे ऊर्जावान भाग में से एक हैं और इसलिए उनसे बहुत उम्मीदें हैं। सही मानसिकता और क्षमता के साथ युवा राष्ट्र के विकास में योगदान कर सकते हैं । युवा पीढ़ी की सोच द्वारा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गणित, वास्तुकला, इंजीनियरिंग और अन्य क्षेत्रों में बहुत प्रगति हुई है। हमारे युवा खिलाड़ियों को ही देख लो। विजय प्राप्त करने वाले युवाओं की संख्या भारत में प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है । हर वर्ष विश्व में होने वाले खेलों में भारत के बच्चे नये–नये खेलों में विजय प्राप्त करके अपने देश का नाम रोशन करते हैं । यह सब बड़े बुजुर्गों से मिले आशीर्वाद, सानिध्य तथा युवाओं की सोच के साथ आगे बढ़ने का नतीजा है। पहले बच्चों को शिक्षा या किसी अन्य श्रेणी में आगे बढने के लिये अपने बड़े या किसी तजुर्बे वाले व्यक्ति की राय लेनी पड़ती थी जिनकी संख्या काफी कम थी । नतीजतन जिनको सही सोच या राय मिल जाती थी वो कामयाबी को प्राप्त कर लेते थे तथा जिनको सही नसीहत नहीं मिल पाती थी तो वो इससे वंचित रह जाते थे ।

परंतु आज यह दौर बदल चुका है । आज के बच्चों को किसी तजुर्बे वाले व्यक्ति की राय लेने के लिये दर–दर भटकने की जरुरत नहीं पड़ती। वे अपने फोन, इंटरनेट की सहायता से सब ढूंढ लेते हैं । आज का युवा साक्षर है तथा वह अपनी साक्षरता का तुरंत प्रयोग करना बेहतर समझता है । आज की युवा सोच कितनी आगे और उच्च है कि अगर हाइवे पे किसी का वाहन खराब हो गया हो तो स्वयं ठीक करने बैठ जाते हैं। अपने और अपने पास रखे औजारों का तकनीकी पिटारा खोल देते हैं। आज तो बच्चे भी हाई–तकनीक के द्वारा पैदा होते है वैसे ही उनका दिमाग भी काफी विकसित मिलता है । आज के बच्चों को हर चीजें सिखानी नहीं पड़ती सब अपने दिमाग से कर लेते हैं ।

अभी मैं अपने ही परिवार की बात करूँ तो जब मेरी बेटी मात्र 5 से 6 महीने की थी तो वो पलंग से नीचे उतरने के लिये सबसे पहले नीचे तकिये डालती थी फिर उसके बाद नीचे उतरती थी ताकि एक तो उसको चोट न लगे तथा ऊपर से नीचे का अंतर कम हो जाये जिससे पलंग से उतरने में उसे कोई परेशानी न हो । छोटे– छोटे बच्चों से आप कुछ सवाल करो तो उसके बदले में वो आपसे उलटा सवाल कर लेते हैं जिसका जवाब आपके पास नही होता हैं । इसीलिये आज के बच्चों के पास अपने जीवन में आगे बढ़ने का लक्ष्य निर्धारित होता है । उनको क्या करना है, उनके लिये क्या सही होगा उन सबका ज्ञान उनके पास होता है ।

पहले जमाने में ज्यादातर घरों में बेटियों को सामाजिक बंधनों में रखा जाता थ।। उनकी सोच को कोई महत्व नहीं दिया जाता था । उनको क्या करना है उनके लिये क्या सही है इन सबका फैसला उनके बड़े ही लेते थे । उन्हें कोई भी निर्णय लेने की अनुमति नहीं थी । परंतु आज के दौर में हमारी बेटियां हर क्षेत्र में समाज का प्रतिनिधित्व

करती हैं। एक बेटी दो परिवारों के जुड़ाव का प्रतीक है। आज बेटियां एक गांव से लेकर विदेशों में भी अपने देश नाम उजागर कर रहीं हैं। देश के प्रत्येक क्षेत्र में ग्रामीण प्रतिभाएं विशेषकर बेटियां बड़े मुकाम हासिल कर रही हैं। हर क्षेत्र में बेटियां बेटों के बराबर ही दर्जा प्राप्त कर आगे बढ रहीं हैं । आज लड़कियां हर क्षेत्र में लड़कों के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। यह देश के युवाओं तथा बुजुर्गों का देश के युवाओं की उच्च सोच का साथ देने का ही परिणाम है ।

हाल ही में बर्मिंघम में हुए राष्ट्रमंडल खेलों में भारत के बच्चों ने अपनी प्रतिभा द्वारा देश का नाम रोशन किया। प्रतियोगिताओं में राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने वालों देशों में भारत चौथे स्थान पर रहा है । देश की गरिमा तथा प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिये देश के युवा बढ़–चढ़ कर भाग ले रहे हैं । देश–विदेश में भारत के बच्चों की प्रतिष्ठा का सम्मान किया जा रहा है । आज का युवा सभ्य है तो हमारे अनुभवी बुजुर्ग सुसंस्कृत मानव हैं जो आज के युवा को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करते रहते हैं । उनकी भावनाओं तथा उनके सपनों को ध्यान में रखते हुए उनके सही फैसले में उनका मनोबल बढ़ाते हैं । एक राष्ट्र जो अपने युवाओं पर ध्यान केंद्रित करता है और उन्हें विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों के माध्यम से अधिकार देता है वह सही दिशा में आगे बढ़ रहा होता है।

➤ प्रदीप चितौड
लेखापाल (वित्त एवं प्रशा.)

सड़क एवं मार्ग संबंधी संक्षिप्त हिन्दी – अंग्रेजी शब्दावली

पानी अवशोषण (Water Absorption)
प्राकृतिक रेत (Natural Sand)
विशिष्ट घनत्व (Specific Garvity)
सामान्य संगतता (Normal Consistancy)
पायस (Emulsion)
मार्शल स्थायित्व (Marshall Stability)
संसंजन (Cohesion)
स्थिरता (Stability)
बंधन सामर्थ्य (Bond Strength)
संहनन (Compaction)
निष्कर्षण उपकरण (Extraction Apparatus)
आसवन (Distillation)
संकलित (Compiled)
अवशोषक (Absorbent)
परिवेश का तापमान (Ambient temperature)
अपरूपण परीक्षण (Shear test)
आघात (Blow)

संपीड़क शक्ति (Compressive Strength)
कंक्रीट का घर्षण (Abrasion of Concrete)
सहनशीलता गुण (Durability Propertities)
स्त्राव परीक्षण (Sorptivity)
कार्यक्षमता (Workability)
आसंजन (Adhesion)
नमी प्रतिरोध (Moisture Resistance)
ईंधन हानि (Fuel loss)
यातायाता अभियांत्रिकी (Traffic Engineering)
योजक द्रव (Binder)
विलायक (Solvent)
श्रेणीकरण (Gradation)
निस्तारित (Decanted)
बॉण्ड सामर्थ्य (Bond Strength)
अध्यारोपित (Superimposed)
पैबंद (Patch)
लोच के मापांक(Modulus of Elasticity)

गौतम बुद्ध की प्रेरक कहानी

एक बार की बात है, जब गौतम बुद्ध जी मगध राज्य के एक गांव में ठहरे हुए थे। गांव से थोड़ा बाहर एक मोची अपने परिवार के साथ रहता था। उस मोची के घर के पास एक तालाब था। एक दिन रोज की तरह सुबह मोची तालाब किनारे पानी लेने गया। वहां उसने तालाब में एक बहुत ही अद्भुत पुष्प देखा। वह पुष्प देखने में बहुत ही सुंदर था, और चमत्कारिक भी प्रतीत हो रहा था। मोची ने तुरंत ही अपनी पत्नी को बुलाया और वह पुष्प उसे दिखाया। मोची की पत्नी आध्यात्मिक और धर्म में आस्था रखने वाली थी। वह पुष्प को देखते ही समझ गयी कि जरूर कल यहां से गौतम बुद्ध जी गुजरे होंगे। उन्हीं के प्रताप से यह पुष्प खिला है। पुष्प को चमत्कारिक मान कर मोची ने एक योजना बनाई। उसने अपनी योजना के बारे में पत्नी को बताया कि वह इस पुष्प को राजा को देगा और उनसे खूब सारी स्वर्ण मुद्राएं लेगा। उसकी पत्नी ने भी सोचा कि यह पुष्प उनके किसी काम का नहीं है। इसे राजा को ही दे दो, कम से कम कुछ कमाई तो होगी। पत्नी की सहमति के बाद, मोची राजमहल की ओर निकल गया। राजमहल के रास्ते में उसे एक व्यापारी मिलता है, मोची के हाथ में पुष्प देख कर वह रुक जाता है। वह मोची से पूछता है कि भाई यह पुष्प ले कर कहाँ जा रहे हो? मोची कहता है कि मैं यह पुष्प ले कर राजा के पास जा रहा हूं। इसे राजा को भेंट कर के मैं राजा से मुंह मांगा इनाम लूंगा। व्यापारी ने मोची को प्रस्ताव दिया कि तुम यह पुष्प मुझे दे दो बदले में, मैं तुम्हे 100 स्वर्ण मुद्राएं दूंगा। मोची सोच में पड़ गया। उसने सोचा कि जब व्यापारी इस पुष्प के लिए 100 स्वर्ण मुद्राएं दे रहा है, तो राजा तो और ज्यादा देगा। यही सोचते हुए उसने व्यापारी को पुष्प देने से मना कर दिया। थोड़ा आगे चला ही था कि उसे रास्ते में राजा आते हुए नजर आए जो गौतम बुद्ध के दर्शन के लिए जा रहे थे। राजा भी मोची के हाथ में वो दिव्य पुष्प देख कर अचंभित हो गये। राजा ने मोची को पुष्प के बदले 1000 स्वर्ण मुद्राएं देने के लिए कहा। यह सुनते ही मोची के मन में एक अजीब सी चेतना आई। और वह राजा को पुष्प न देकर दोड़ता हुआ सीधे महात्मा बुद्ध के पास जा पहुंचा। महात्मा बुद्ध जी मोची को देख कर हैरत में पड़ गये। उन्होंने मोची से पूछा तो मोची ने उन्हें सारी बात बताई। इसके बाद मोची ने वह पुष्प महात्मा गौतम बुद्ध के चरणों में अर्पित किया और उनसे कहा कि पहले तो मेरे मन में पुष्प को देखकर लालच आ गया था। लेकिन अब मैं समझ गया हूं कि जिसकी छाया पड़ने से ही एक पुष्प इतना दिव्य हो गया हो तो अगर मैं उसकी शरण में चला जाऊँ तो मेरा जीवन भी धन्य हो जायेगा। इसके बाद वह आजीवन महात्मा गौतम बुद्ध का शिष्य बन कर रहा। इस कहानी ने हमें सिखाया कि हमारी जिंदगी में हमें बहुत से चीजें अपनी तरफ आकर्षित करती हैं, लेकिन हमें उनके लालच में न फँसकर अपने ज्ञान का प्रयोग करके जीवन में सही राह को चुनना चाहिए।

➢रेखा जुयाल
कार्यकारी सहायक (तकनीकी प्रभाग)

बच्चे और सोशल मीडिया के प्रतिकूल प्रभाव

राहुल नाम का एक बच्चा था उसे सोशल मीडिया में प्रोफाइल बनाकर अपनी और अपने परिवार के सदस्यों की फोटो और वीडियो डालने में बहुत दिलचस्पी थी। लेकिन उसके सांथ एक समस्या थी कि अभी उसकी उम्र 18 वर्ष नहीं होने के कारण वह सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम ट्विटर , यूट्यूब आदि पर अपने नाम का अकाउंट नहीं बना पा रहा था। उसने अपनी मम्मी को यह बात बतलाई। राहुल की मम्मी ने बिना सोच–विचार के राहुल की गलत जन्म तिथि डालकर उसका अकाउंट बनवा दिया अब राहुल प्रतिदिन अपनी और अपने परिवार की फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर डालने लगा। धीरे–धीरे राहुल अपने घर के अन्दर और घर के अंदर रखे सामान की फोटो भी सोशल मीडिया पर पोस्ट करने लगा। राहुल ने फेसबुक, इनस्टाग्राम और यूट्यूब पर अच्छी खासी फ्रेंड्स फॉलोइंग बढ़ा ली। परन्तु सोशल मीडिया पर उसके अधिकांश दोस्त ऐसे थे। जिन्हें राहुल जानता भी नहीं था। एक दिन राहुल ने अपने घर में रखे गहनों और पैसों की फोटो सोशल मीडिया साइट्स पर पोस्ट कीं। उसके कुछ दिनों बाद राहुल के घर में चोरी हो गई और उसके घर में रखे सारे पैसे और गहने चोर चुरा कर ले गए ।

जब राहुल के मम्मी–पापा को चोरी का पता लगा तो उन्होंने पुलिस में चोरी की शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस ने काफी मेहनत की और चोरों को पकड़ लिया । जब चोरों से पूछताछ की गई तब उन्होंने बतलाया कि वे सोशल मीडिया पर राहुल के फ्रेंड थे और राहुल प्रतिदिन अपने घर की फोटो पोस्ट करता था। जिस दिन राहुल ने अपने घर में रखे पैसों और गहनों के पोस्ट डालीं तो उन्हें पता चल गया कि गहने किस कमरे में रखे हैं। राहुल प्रतिदिन अपने स्टेटस में यह बतलाता था कि आज उसके परिवार का कौन सा सदस्य किधर गया है । जिस दिन राहुल के घर में कोई नहीं था उस दिन चोर राहुल के घर में घुस गए और चोरी करके ले गए ।

पुलिस ने जब राहुल से इस बारे में जानकारी ली तो राहुल ने बतलाया कि उसकी सोशल मीडिया की प्रोफाइल उसकी मम्मी ने बनाई थीं । पुलिस ने राहुल की मम्मी को समझाया कि इस प्रकार गलत जानकारी देकर बच्चों की सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाना कानूनन गलत है और साइबर अपराध की श्रेणी में आता है। पुलिस चाहती तो राहुल की मम्मी पर भी कानूनी कार्यवाही कर सकती थी। परन्तु पुलिस ने उन्हें समझाकर छोड़ दिया और चोरी का माल जब्त कर राहुल के मम्मी पापा को दिलवा दिया ।

शिक्षा– "इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें सोशल मीडिया पर बहुत सोच समझ कर पोस्ट करना चाहिए अन्यथा कुछ लोग इसका दुरुपयोग कर सकते हैं । साथ ही, गलत जानकारी दे कर सोशल मीडिया बच्चों के आई .डी. नहीं बनाना चाहिए ।

➢पूनम जे देसाई
कार्यकारी सहायक (परियोजना– I)

आज के समय में सोशल मीडिया

कहा जाता है कि सूचना दोधारी तलवार की तरह होती है। एक ओर इसका उपयोग भ्रम और कहरता फैलाने में किया जा सकता है, तो दूसरी ओर रचनात्मक कार्यों में भी किया जा सकता है। सूचना क्रांति के इस आधुनिक दौर में सोशल मीडिया की भूमिका को लेकर हमेशा सवाल उठते रहे हैं। आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रगति में सूचना क्रांति ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किंतु सूचना क्रांति की ही उपज, सोशल मीडिया को लेकर उठने वाले सवाल भी महत्त्वपूर्ण हैं। ये सवाल हैं– क्या सोशल मीडिया हमारे समाज में ध्रुवीकरण की स्थिति उत्पन्न कर रहा है तथा समाज की प्रगति में सोशल मीडिया की क्या भूमिका होनी चाहिये?हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ हम सूचना के न केवल उपभोक्ता है, बल्कि उत्पादक भी हैं। यही अंतर्द्वद्व हमें इसके नियंत्रण से दूर कर देता है। प्रतिदिन कई बिलियन लोग फेसबुक पर लॉग–इन करते हैं। हर सेकेंड ट्विटर पर ट्वीट किये जाते हैं और इंस्टाग्राम पर कई तस्वीरें पोस्ट की जाती हैं।

अगर सोशल मीडिया द्वारा ध्रुवीकरण की बात की जाए तो हम पाते हैं कि अतीत में इस संबंध में कई प्रयोग किये गए थे। 1950 के दशक में सामाजिक मनोवैज्ञानिक सोलोमन असच द्वारा मनोवैज्ञानिक प्रयोगों की एक पूरी श्रृंखला की शुरूआत की गई थी। ये प्रयोग यह निर्धारित करने के लिये किये गए थे कि बहुमत की राय के आगे किसी व्यक्ति की राय किस प्रकार प्रभावित होती है। इसका यह निष्कर्ष सामने आया कि कोई व्यक्ति सिर्फ बहुमत की राय के साथ शामिल होने के कारण गलत जवाब देने के लिये तैयार था। कुछ लोगों ने अपना उपहास न होने देने के कारण गलत जवाब दिये। यद्यपि 1950 के दशक से संचार का यह स्वरूप विकसित होकर नए रूप में प्रकट हुआ है, लेकिन इसके बावजूद मानव का स्वभाव इसके साथ सामंजस्य बैठाने में सफल नहीं हो पाया। कुछ हद तक यह धारणा ऑनलाइन फेक न्यूज के प्रभाव को भी इंगित करती है, जिसने समाज में ध्रुवीकरण के विस्तार में योगदान दिया है। सोशल मीडिया की साइट्स उत्प्रेरक की भूमिका भी निभाती है। उदाहरणस्वरूप ट्विटर नियमित रूप से उन लोगों के अनुसरण हेतु प्रेरित करता है जो हमारे समान दृष्टिकोण रखते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण लोगों के सोचने का दायरा संकुचित होता जा रहा है जो न केवल मतदान के समय व्यवहार में परिवर्तन लाता है बल्कि हर रोज व्यक्तिगत वार्त्ताओं में भी इसका भारी प्रभाव पड़ रहा है। अगर सोशल मीडिया के मूल अर्थ की बात की जाए तो कंप्यूटर, टैबलेट या मोबाइल के माध्यम से किसी भी मानव संचार या इंटरनेट पर जानकारी साझा करना सोशल मीडिया कहलाता है। इस प्रक्रिया में कई वेबसाइट एवं एप का योगदान होता है। सोशल मीडिया वर्तमान समय में संचार के सबसे बड़े साधन के रूप में उभर कर आया है और दिनों दिन इसकी लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है। सोशल मीडिया द्वारा विचारों, सामग्री, सूचना और समाचार को तीव्र गति से लोगों के बीच साझा किया जा सकता है। सोशल मीडिया को एक तरफ जहाँ लोग वरदान मानते हैं तो दूसरी तरफ लोग इसे एक अभिशाप के रूप में भी देखते हैं। सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों की बात जाए तो यह समाज के सामाजिक विकास में मदद करता है। इसके द्वारा प्रदत्त सोशल मीडिया मार्केटिंग जैसे उपकरण द्वारा लाखों सभावित ग्राहकों तक पहुँच स्थापित की जा सकती है और समाचार का प्रेषण किया जा सकता है। सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता उत्पन्न करने के संदर्भ में सोशल मीडिया को एक बेहतरीन उपकरण माना जाता है। इसके द्वारा समान विचारधारा वाले लोगों के साथ संपर्क भी स्थापित किया जा सकता है। विश्व के सुदूरतम कोने तक अपनी बातों को कम समय में तीव्र गति से अधिकतम लोगों तक पहुँचाने के लिये यह एक सर्वश्रेष्ठ साधन बन चुका है। सोशल मीडिया को शिक्षा प्रदान करने के संदर्भ में एक बेहतरीन साधन माना जा रहा है।

इसके द्वारा ऑनलाइन जानकरी का तेजी से हस्तांतरण होता है। इसके द्वारा ऑनलाइन रोजगार के बेहतरीन अवसर प्राप्त होते हैं। साथ ही व्यवसाय, चिकित्सा, नीति निर्माण को प्रभावित करने में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में शिक्षक एवं छात्रों द्वारा फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डाइन आदि जैसे प्लेटफॉर्म का प्रयोग किया जा रहा है। इसके द्वारा शिक्षक एवं छात्रों के मध्य दूरी सिमट कर कम हो गई है। प्रोफेसर स्काइप, ट्विटर और अन्य जगहों पर इसके मदद से लाइव चैट करते हैं। सोशल मीडिया के कारण शिक्षा आसान हो गई है। हालाँकि कई भौतिकविदों का मानना है कि सोशल मीडिया लोगों में अवसाद और चिंता के प्रसार का एक सबसे बड़ा कारण है। सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग से सोने की आदतों में बदलाव, साइबर अपराध, बच्चों के प्रति लगातार बढ़ते दबाव और एक प्रभावशाली प्रोफाइल युवाओं को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रही है। इसमें अत्यधिक व्यस्तता के कारण अन्य कार्यों के लिये बहुत कम समय बचता है एवं अन्य गंभीर मुद्दों की उत्पत्ति होती है जैसे ध्यान कम लगना, चिंता एवं अन्य मुद्दे। इसके अत्यधिक प्रयोग एवं गोपनीयता से निजता में कमी आती है। यह उपयोगकर्त्ता को साइबर अपराधों जैसे हैकिंग, पहचान संबंधी चोर फिशिंग अपराधों आदि के प्रति संवेदनशील बनाता है। सोशल मीडिया का दुरुपयोग भी कई रूपों में किया जा रहा है। इसके जरिये न केवल सामाजिक और धार्मिक उन्माद फैलाया जा रहा है बल्कि राजनीतिक स्वार्थ के लिये भी गलत जानकारियाँ पहुँचाई जा रही है। इससे समाज में हिंसा को तो बढ़ावा मिलता ही है, साथ ही यह हमारी सोच को भी नियंत्रित करता है।

विश्व आर्थिक मंच की एक रिपोर्ट के अनुसार सोशल मीडिया के जरिये झूठी सूचना का प्रसार उभरते जोखिमों में से एक है। यकीनन यह देश की प्रगति की राह में रुकावट है और ऐसे में जरूरी हो जाता है कि हमारी सरकार इसमें दखल कर इस पर लगाम लगाने का प्रयास करे। केंद्र सरकार ने सूचना तकनीक कानून की धारा 79 में संशोधन के मसौदे द्वारा फेसबुक और गूगल जैसी कंपनियों की जवाबदेही तय करने का प्रयास किया था। इसके तहत आईटी कपंनियाँ फेक न्यूज की शिकायतों पर न केवल अदालत और सरकारी संस्थाओं बल्कि आम जनता के प्रति भी जवाबदेह होंगी। देश जैसे–जैसे आधुनिकीकरण के रास्ते पर बढ़ रहा है चुनौतियाँ भी बढ़ती जा रही है। ऐसे में भारत को जर्मनी जैसे उस कठोर कानून की जरूरत है जो सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक सामग्री का इस्तेमाल करने वालों पर शिंकजा कसने के लिये बनाया गया था। इसके अलावा 'सोशल मीडिया इंटेलीजेंस' के जरिये सोशल मीडिया गतिविधियों का विश्लेषण करते रहना भी आवश्यक है। इससे आपत्तिजनक सामग्रियों को बिना देर किये हटाया जा सकेगा।

सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे हजारों लोगों तक पहुँचा सकता है, परंतु सोशल मीडिया के दुरुपयोग ने इसे एक खतरनाक उपकरण के रूप में भी स्थापित कर दिया है जिसके कारण इसके विनियमन की आवश्यकता लगातार महसूस की जा रही है। अतः आवश्यक है कि निजता के अधिकार का उल्लंघन किये बिना सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिये सभी पक्षों के साथ विचार–विमर्श कर नए विकल्पों की खोज की जाए, ताकि भविष्य में इसके संभावित दुष्प्रभावों से बचा जा सके।

➢रोहित कुमार
निजी सहायक (पी.।।)

देवभूमि उत्तराखंड की यात्रा का संस्करण

देव भूमि उत्तराखंड का नाम सुनते ही मन में कई विचार आते थे कि अपनी देव भूमि के दर्शन बार–बार हों। गांव में होने वाली प्रसिद्ध देव पूजा के बारे में कई लोगों से चर्चा तो होती रहती है पर पूजा में सम्मिलित होने का अवसर कभी नहीं मिला। परमात्मा की असीम कृपा हो गई कि एक दिन गांव से संदेश मिला कि गांव में देव पूजन का आयोजन होने वाला है। यह पूजा 11 से 14 जून, 2022 को थी। इस पूजा को 12 जुयाल परिवारों के सदस्यों ने मिलकर करवाया था। यह सुनते ही मैंने तुरंत गांव जाने का निर्णय कर लिया और हमने 10 जून 2022 को दिल्ली से बैजरो की टिकट बुक करा दी । उसमें हम सब 25 सदस्य थे। बस दिल्ली से 5 बजे बैजरो के लिए चल पड़ी। काफी समय बाद बस मे यात्रियों द्वारा गाए गए गढ़वाली गाने सुनने का आनंद ही कुछ और मिला। सभी अपने घर से खाने के लिए कुछ ना कुछ लेके आए थे। बस में लम्बी यात्रा पर जाने का आनंद ही कुछ और था । बस दिल्ली से चलकर रामनगर बस रात्रि 2 बजे पहुंच और 2 से 4 बजे तक रामनगर में ही ठहरी । क्योंकि 2 घंटे बिताना बड़ा मुस्किल था, और गर्मियों का मौसम अलग। इसलिए हम सब रामनगर के रौनकदार बाजार में घूमने चले गए। वहां दुकान में बैठकर चाय पीने आंनद ही कुछ और था। चाय पीने के बाद लीची खरीदी । रामनगर की लीची बहुत प्रसिद्ध है। पैदल ही घूमते घामते समय का पता ही नहीं चला कि कब चार बज गए। बस ठीक 4 बजे रामनगर से बैजरो के लिए चल पड़ी। उसके बाद थकान बहुत हो गई और हम सब गहरी निद्रा में सो गए। प्रातः ठीक 8 बजे हम बैजरो के बाजार में पहुंच गए। वहां पर हमें ले जाने के लिए हमारे मित्र और परिजन आए। बैजरो से हमने जिवई ग्राम के लिए टैक्सी बुक की और उससे हम सब जिवई के शिव मंदिर पहुंचे। हमारी पूज्य सासु माँ का एक संकल्प था कि जिवई गांव में पहुंचने से पहले हमारे जिवई गांव के देवालय में सभी परिजन मिलकर शिवार्चन करें। वहां पर हम सब परिवार के सदस्य एकत्रित हो गए और बड़े उल्लास के साथ सब ने मिलकर भगवान शिव की पूजा, अभिषेक, हवन और आरती की। वहां पर पूजा करते वक्त ऐसा लगा जैसे कि हम सब कैलाश पर्वत पर हैं। प्रकृति का इतना मनमोहक दृष्य देखकर वहां से जाने का मन ही नहीं किया। चारों तरफ पहाड़ बीच में सरोवर और सरोवर के बीच देवालय। मैं ऐसा प्राकृतिक देखने के लिए कई वर्षों से इंतजार कर रहा था। महादेव की कृपा से वह सपना भी पूरा हुआ। उसके बाद हम सबने प्रसाद ग्रहण करके देवालय के बाबाजी (श्री जगदीश मुनी जी) से आशीर्वाद लिया और जिवई ग्राम के लिए प्रस्थान किया। दोपहर तीन बजे हम जिवई ग्राम पहुंचे और गांव में इतनी रौनक देखकर मन बड़ा प्रसन्न हुआ। गांव के सभी परिवार के सदस्य पहले ही पहुंचे हुए थे और दोपहर का दाल भात खाकर हमने सबसे मुलाकात की । जिवई ग्राम में 15 साल बाद श्री नृसिंह, गोरिला, दीवा और गढ़देवी की पूजा 12 जून 2022 को रात्रि 11 बजे प्रारंभ हुई। गांव के सभी परिजनों के साथ चौपाल पर बैठकर यह सुन्दर दृश्य देखने का मौका मिला। सभी देवताओं के आसन की पूजा की गई जागर लगाने के लिए दूसरे गांव से दो जगरी बुलाए गए। एक व्यक्ति जागर लगता और देवताओं का आवाहन करता है और दूसरा व्यक्ति थाली बजाता है। जब जागर और थाली बजती है तो ऐसा लगता है कि शाक्षात देवता प्रकट हो गए हों। यह पूजा पूरी रात चलती है। उसके बाद नृसिंह देवता का आवाहन किया जाता है और सभी गांव वाले नृसिंह देवता से आशीर्वाद लेते हैं। अगले दिन स्नान कराने के लिए देवता को देवालय ले जाते हैं वे दृश्य आज तक मेरी आंखों से ओझल नहीं हो पा रहे हैं । ध्वज, नगाड़े, ढोल दमऊ, शंख की ध्वनि और

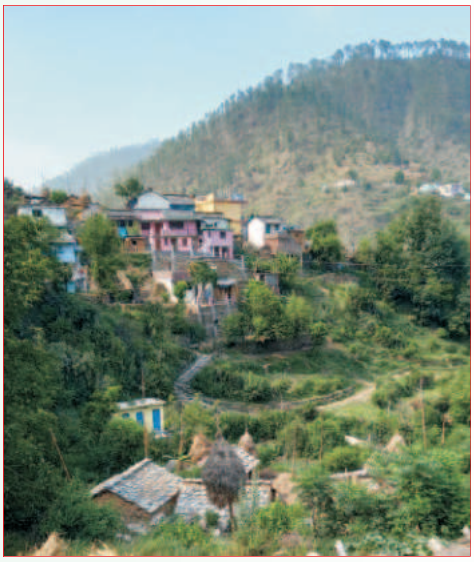

नाचते गाते हुए पूरे गांव के सभी निवासी देवता को लेकर एक कतार में चल पड़ते हैं। देवालय पहुंच कर सभी महिलाएं संकीर्तन करती हैं। फिर देवता नृसिंह को स्नान कराया जाता है, सुन्दर वस्त्र पहनाए जाते हैं और फिर देवालय में अभिषेक पूजा अर्चन आदि करके नृसिंह देवता को लेकर पूरा गांव के निवासी ढोल दमऊ के साथ नाचते गाते, गाते चल पड़ते हैं। दोपहर के 3 बजे पहुंच कर दोपहर का भोजन करके नृसिंह देवता को अपने स्थान में ले गए । उस दिन रात्रि को 11 बजे फिर जागर लगाए गए। नृसिंह देवता के रूप में भक्त अपने स्थान में बैठकर सभी भक्तों को बुलाकर आशीर्वाद देते है। नृसिंह देवता के बाद गोरिला, दीवा और गढ़देवी का आवाहन होता है। उस वक्त वो दृश्य देखने योग्य था जब भक्त के माध्यम से देवी प्रकट हुई और देवी भभूति लेकर सबको आशीर्वाद दिया। अगले दिन सभी परिजन एकत्रित होकर भगवती गोरिला के मंदिर गए ढोल दमऊ नगाड़े के साथ नाचते गाते सब दोहपर की धूप में चले जा रहे थे। वहां पहुंचकर गोरिला गढ़देवी की पूजा अर्चना करने के बाद गोरिला देवी अपना भोजन मांगती है उस वक्त कम से कम 40 नारियल बलि दी गई। पहले गांव में बकरे की बली दी जाती थी पर अब यह प्रथा बंद कर दी । देवी प्रसन्न होकर सबको नारियल प्रसाद के रूप में आशीर्वाद देती है। प्रसाद ग्रहण करने के बाद सभी जिवई गांव को प्रस्थान करते हैं और दोपहर का भोजन बारी–बारी से एक साथ नीचे बैठकर किया। रात्रि का भोजन भी इसी तरह सभी ने मिलकर किया। अगले दिन जहां पर नृसिंह देवता का स्थान है वहां परिवार के सदस्यों ने बारी–बारी से अपनी भेंट नृसिंह देवता को दी और नृसिंह देवता ने उन्हें अपना पूर्ण आशीर्वाद दिया। यह कार्यक्रम लगभग तीन घंटे तक चला । उसके बाद हम सब विश्राम करने के लिए घर आ गए। कार्यक्रम संपन्न होने के बाद गांव के समस्त निवासी ढोल दमऊ मुसल बाज के साथ नाचते गाते पूरा आनंद लेते हैं। इस तरह यह कार्यक्रम पूर्ण रूप से संपन्न हो जाता है।

अगले दिन प्रातः पूजा करने के बाद गांव के नजदीक बाजार को देखने इच्छा हुई और हम परिवार के चार–पांच सदस्य जिवई से 11 किलोमीटर दूर थैलीसेंण के लिए चल पड़े। जिवई बाजार में बस का काफी देर इंतजार किया पर बस नहीं आई फिर हमने एक ट्रक वाले सज्जन व्यक्ति से आग्रह किया कि हमें थैलीसेंण ले जाए।उस सज्जन व्यक्ति ने हमें आगे की सीट में बिठा दिया। ऐसा दृश्य आज तक नहीं देखा। हमें एक घंटे के बाद थैलीसेंण पहुंच गए। उसके बाद हमने थैलीसेंण की रौनकदार बाजार में खरीददारी की और और एक चाट पकौड़ी की दुकान में गोलगप्पे खाने का पूरा आनंद लिया। पैदल ही घूमते घामते मंदिर के भी दर्शन किए जो थैलीसैंण के बस अडडे के नजदीक ही था। समय का पता ही नहीं चला उसके बाद हमने ठीक 3 बजे एक होटल में भोजन किया। हमने टैक्सी बुक की और 4 बजे जिवई ग्राम के लिए रवाना हुए। मेरी इच्छा है कि देवभूमि की ऐसी सुखद, आनंदायक और उत्तराखंड में देवी–देवताओं की पूजा देखने का अवसर बार–बार मिले। यदि ऐसा हुआ तो गढ़वाल की ठंडी वादियों बार–बार जाना चाहूँगा।

➢ रामकृष्ण पोखरियाल
निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

भारतीय त्यौहार

हमारा देश विभिन्नताओं के समूह का एक ऐसा देश है, जो अत्यंत दुर्लभ है और अद्भुत भी है। इस दुर्लभता और अदभुत स्वरूप में आनंद और उल्लास कि छटा दिखाई देती है। हमारे देश मे जो भी त्यौहार या पर्व मनाए जाते है, उनमे अनेकरूपता दिखाई पड़ती है। कुछ त्यौहार ऋतु और मौसम के अनुसार मनाए जाते है, तो कुछ सांस्कृतिक या किसी घटना विशेष से सम्बंधित होकर सम्पन्न होते हैं।

हमारे देश में त्यौहार का जाल बिछा हुआ है। यह कहा जाए, जो कोई अत्युक्ति अथवा अनुचित बात नहीं होगी कि यहाँ आये दिन कोई–न–कोई त्यौहार पड़ता ही रहता है। ऐसा इसलिए कि हमारे देश के ये त्यौहार किसी एक ही वर्ग, जाति या सम्प्रदाय से ही सम्बंधित नहीं होते हैं अपितु ये विभिन्न वर्गों, जातियों और सम्प्रदायों के द्वारा सम्पन्न और आयोजित होते रहते है। इसलिए ये त्यौहार धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक होते है। इन सभी प्रकार के त्यौहार का कुछ न कुछ विशिष्ट अर्थ होता है। इस विशिष्ट अर्थ के साथ इनका कोई न कोई महत्व भी अवश्य होता है। इस महत्व में मानव की प्रकृति और दशा किसी–न–किसी रूप में अवश्य झलकती है।

त्यौहारों का महत्वः– हमारे देश में त्यौहार का महत्व निःसंदेह है। इन त्यौहारों का महत्व समाज और राष्ट्र की एकता–समृद्धि, प्रेम–एकता, मेल–मिलाप के दृष्टि से है। साम्प्रदायिक–एकता, धार्मिक–समन्वय, सामाजिक–समानता को हमारे भारतीय त्यौहार समय–समय पर हमारे अंदर उत्पन्न करते चलते है। जातीय भेद–भावना और संकीर्णता के धुंध को ये त्यौहार अपने अपार उल्लास और आनन्द के द्वारा छिन्न–भिन्न कर देते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह होती है कि ये त्यौहार अपने जन्म–काल से लेकर अब तक उसी पवित्रता और सात्विकता की भावना को संजोए हुए हैं। युग–परिवर्तन और युग का पटाक्षेप इन त्यौहारों के लिए कोई प्रभाव नहीं डाल सका। इन त्यौहार का रूप चाहे बड़ा हो, चाहे छोटा, चाहे एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित हो, चाहे सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र को प्रभावित करने वाला हो, अवश्यमेव श्रद्धा और विश्वास; नैतिकता और विशुद्धता का परिचायक है। इससे कलुषता और हीनता की भावना समाप्त होती है और सच्चाई, निष्कपटता तथा आत्मविश्वास की उच्च्य और श्रेष्ठ भावना का जन्म होता है।

उपसंहारः– कहाँ तक कहें, सभी प्रकार के त्योहार हमें परस्पर एकता, एकरसता , एकरूपता और एकात्मकता का पाठ पढ़ाते हैं। यही कारण है कि हम हिन्दू, मुसलमानो, ईसाइयों, सिखों आदि ?के त्योहार और पर्वो को अपना त्यौहार व पर्व मान करके उसमें भाग लेते है और ह्रदय से लगाते हैं। इसी तरह से मुसलमान, सिक्ख, ईसाई भी हमारे हिन्दू त्योहार–पर्वों को तन–मन से अपना करके अपनी अभिन्न भावनाओं को प्रकट करते है। अतएव हमारे देश के त्योहारो का महत्व धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत अधिक है। राष्ट्रीय महत्व की दृष्टी से 15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर, 14 नवम्बर का महत्व अधिक है। संक्षेप में हम कह सकते है कि हमारे देश के त्योहार विशुद्ध प्रेम, भेदभाव और सहानुभूति का महत्वाकांक्षी प्रतीक हैं।

➢ मोहम्मद जावेद
कार्यालय सहायक(पी– I)

महायोद्धा महाराणा प्रताप

भारतवर्ष के महान योद्धा महाराणा प्रताप को भारत का पहला स्वतंत्रता सेनानी माना जाता है। राजस्थान की धरा अनेक वीर सपूतों की जननी है। महाराणा प्रताप मेवाड़ में सिसौदिया राजपूत राजवंश के राजा थे।मेवाड़ राजस्थान के दक्षिण–मध्य में स्थित एक रियासत हुआ करती थी। इस समय राजस्थानमें उदयपुर, भीलवाड़ा, राजसमंद, तथा चित्तौडगढ़ जिले हैं। महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 ईस्वी को राजस्थान के कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ था। इनके पिता महाराजा उदयसिंह थे और ये महान राणा सांगा के पौत्र थे। महाराणा प्रताप ने मुगलों को कई बार युद्ध में भी हराया।

महाराणा प्रताप अपनी वीरता और युद्ध कला के लिए जाने जाते हैं।उस समय के जानकार बताते हैं कि महाराणा प्रताप का वजन 110 किलो और कद 7 फीट 5 इंच थी। महाराणा प्रताप के भाले का वजन 81 किलो था। उनके कवच का वजन 72 किलो था। महाराणा प्रताप भाला, ढाल, दो तलवारें, कवच लेकर युद्ध में जाते थे, जिसका कुल वजन 208 किलो होता था। इतना भार लेकर युद्ध करना सामान्य पुरुष के लिए संभव नहीं। महाराणा प्रताप के हथियार इतिहास के सबसे भारी युद्ध हथियारों में शामिल हैं। महाराणा प्रताप की तलवार कवच आदि सामान आज भी उदयपुर राज घराने के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

अकबर ने महाराणा प्रताप को प्रस्ताव दिया था कि यदि वे उसके सामने झुक जाते हैं तो आधा भारत महाराणा प्रताप का हो जाएगा परंतु उन्होंने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।उन्होंने मुगल सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और कई सालों तक संघर्ष किया। अकबर ने अजमेर को अपना केंद्र बनाकर प्रताप के विरुद्ध सैन्य अभियान को प्रारंभ कर दिया।हल्दी घाटी का युद्ध 18 जून, 1576 को हुआ था।(हल्दीघाटी, राजस्थान में एकलिंगजी से 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो कि राजसमन्द और पाली जिलों को आपस में जोड़ती है) । अकबर की (मुगल) सेना 80 हजार से 1 लाख तक थी तथा इस विशाल मुगल सेना के सामने महाराणा प्रताप की सेना का में कुल 20000 सैनिक शामिल थे जो कि एक अद्वितीय बात थी।इस युद्ध में महाराणा प्रताप की छोटी सी सेना ने मुगल सैनिकों के दांत खट्टे कर दिए।दोनों सेनाओ के बीच भीषण युद्ध हुआ जो केवल चार घंटे में ही समाप्त हो गया। महाराणा प्रताप की तरह उनके सेनापति और सैनिक भी बहुत वीर थे। उनका एक सेनापति युद्ध में सिर कटने के बाद भी लड़ता रहा। हल्दीघाटी युद्ध के बाद से और चेतक की मृत्यु से गया। महाराणा प्रतापका दिल पसीज गया (चेतकघोड़ा ईरानी मुल का घोड़ा था इस काठियावाड़ी नस्ल के घोड़े को गुजरात का एक व्यापारी लेकर मेवाड़ आया था।)और उन्होंने मुगलों से जीतने तक महल त्यागकर जंगल में जीवन बिताने का निश्चय किया। मुगल बादशाह अकबर से लोहा लेते हुए जब महाराणा प्रताप को अपनी मातृभूमि का त्याग करना पड़ा तो वे अपने परिवार सहित जंगलों में रहने लगे। महलों में रहने और सोने चाँदी के बरतनों में

स्वादिष्ट भोजन करने वाले महाराणा के परिवार को उन दिनों अपार कष्ट उठाने पड़ रहे थे। उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगलों में भटकते हुए तृण–मूल व घास–पात की रोटियों में गुजर–बसर किया किंतु उन्होंने कभी धैर्य नहीं खोया इन विपद परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने मातृभूमि के प्रति अपनी निष्ठा और स्वाभिमान को जागृत रखते हुए मुगल शासन के विरुद्ध अपनी लड़ाई हमेशा जारी रखी।राणा को बस एक ही चिन्ता थी कि किस प्रकार फिर से सेना जुटाएँ, जिससे मेवाड़ को आक्रांताओं से चंगुल से मुक्त करा सकें। उस समय राणा के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या धन की थी। उनके साथ जो विश्वस्त सैनिक थे, उन्हें भी काफी समय से वेतन नहीं मिला था। कुछ लोगों ने राणा को आत्मसमर्पण करने की सलाह दी, लेकिन राणा जैसे देशभक्त एवं स्वाभिमानी को यह कतई मंजूर नहीं था। महाराणा प्रताप के कष्टों के बारे में जब भामाशाह को पता चला तो भामाशाह ने मदद की ठानी। उनके पास स्वयं का धन और पुरखों की वसीयत थी। उन्होंने वो सब महाराणा प्रताप को अर्पित कर दिया। इतिहास में ऐसा उल्लेख है कि, राणा के लिए भामाशाह ने 25 लाख रुपए की नकदी तथा 20,000 अशर्फी दीं। तब राणा ने आँखों में आँसू भरकर भामाशाह को गले से लगा लिया। वहीं, राणा की पत्नी महारानी अजवान्दे ने भामाशाह को पत्र के जरिए इस सहयोग के लिए कृतज्ञता व्यक्त की।(ऐसे दानवीर का जन्म राजस्थान के अलवर जिले में 28 जून, 1547 को हुआ था)। इतिहासकार बताते हैं कि, भामाशाह के पिता भारमल्ल तथा माता कर्पूरदेवी थीं। भारमल्ल राणा साँगा के समय रणथम्भौर के किलेदार थे। अपने पिता की तरह भामाशाह भी राणा परिवार के लिए समर्पित थे।ऐसे समय में भामाशाह ने प्रताप के लिए अपनी सारी जमा–पूंजी अर्पित कर दी थी।

लगातार 30 वर्षों तक प्रयास करने के बावजूद अकबर, महाराणा प्रताप को बंदी नहीं बना सका। हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप और अकबर के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध को 300 साल हो चुके हैं, पर आज भी वहां युद्ध मैदान में तलवारें पाई जाती हैं। इस युद्ध में ना तो अकबर की जीत हुई और ना ही महाराणा प्रताप की। अंततोगत्वा युद्ध और शिकार के दौरान लगी चोटों की वजह से महाराणा प्रताप की मृत्यु 29 जनवरी 1597 को चावंड में हुई।कहा जाता है कि जब अकबर को महाराणा प्रताप के निधन का पता लगा तो वह भी रो पड़ा। भारतीय इतिहास के पन्नों में महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा आज भी हमें मातृभूमि के प्रति प्रेम, स्वाभिमान और शौर्य के लिए प्रेरित करती है। महाराणा प्रताप की याद को अक्षुण्य बनाने के लिए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के दो स्थानों पर महाराणा प्रतापकी प्रतिमाएँ स्थापित की है। संसद भवन परिसर में द्वार संख्या 12 के समक्ष महाराणा प्रताप की विशाल प्रतिमा के साथ महाराणा के प्रिय स्वामिभक्त घोड़े चेतक की मूर्ति भी बनाई गई है। सम्भवतः देश में ऐसी सुंदर व विशाल प्रतिमाएं कहीं नहीं हैं। इसी तरह प्रवासी राजस्थानियों के प्रयासों से दिल्ली के कश्मीरी गेट के कुदसिया पार्क मे महाराणा प्रताप की चेतक पर सवार विशाल प्रतिमा लगाई गई। नई दिल्ली के कश्मीरी गेट के निकट ही अंतर्राज्यीय बस अड्डे (आईएसबीटी)का नाम भी महाराणा प्रताप बस अड्डा रखा गया है। यहाँ महाराणा प्रताप की चेतक पर आरूढ़ विशाल प्रतिमा अपनी आभा बिखेर रही है।

➤ देवी सिंह
निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

संघर्ष ही जीवन है

एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया । कभी बाढ़ आ जाये, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए तो कभी ओले पड़ जायें । हर बार किसी न किसी कारण से उसकी फसल थोड़ी ख़राब हो जाय। एक दिन तंग आ कर उसने परमात्मा से कहा, देखिये प्रभु, आप परमात्मा हैं, लेकिन लगता है आपको खेती–बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है। एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये, जैसा मै चाहू वैसा मौसम हो, फिर आप देखना मै कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा! परमात्मा मुस्कुराये और कहा ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा, मै दखल नहीं करूँगा । किसान ने गेहूं की फ़सल बोई, जब धूप चाही, तब धूप मिली, जब पानी तब पानी । तेज धूप, ओले, बाढ, आंधी तो उसने आने ही नहीं दी। समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी, क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी । किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को, कि फ़सल कैसे करते हैं। बेकार ही इतने बरस तक हम किसानों को परेशान करते रहे। फ़सल काटने का समय भी आया, किसान बड़े गर्व से फ़सल काटने गया। लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा, एकदम छाती पर हाथ रख कर बैठ गया! गेहूं की एक भी बाली के अन्दर गेहूं नहीं था। सारी बालियाँ अन्दर से खाली थी। बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा, प्रभु यह क्या हुआ ?

तब परमात्मा बोले–

यह तो होना ही था। तुमने पौधों को संघर्ष का ज़रा सा भी मौका नहीं दिया। न तेज धूप में उनको तपने दिया, न आंधी ओलों से जूझने दिया। उनको किसी प्रकार की चुनौती का एहसास जरा भी नहीं होने दिया। इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए।, जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है ओले गिरते हैं तब पोधा अपने बल से ही खड़ा रहता है। वह अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष से जो बल पैदा होता है वो ही उसे शक्ति देता है, उर्जा देता है। उसकी जीवटता को उभारता है। सोने को भी कुंदन बनाने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पिटने, गलने जैसी चुनोतियों से गुजरना पड़ता है। तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है। उसे अनमोल बनाती है। उसी तरह जिंदगी में भी अगर संघर्ष न हो, चुनौती न हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है, उसके अन्दर कोई गुण नहीं आ पाता । ये चुनोतियाँ ही हैं जो आदमी रूपी तलवार को धार देती हैं, उसे सशक्त और प्रखर बनाती हैं, अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनोतियाँ तो स्वीकार करनी ही पड़ेंगी, अन्यथा हम खोखले ही रह जायेंगे। अगर जिंदगी में प्रखर बनना है, प्रतिभाशाली बनना है, तो संघर्ष और चुनोतियों का सामना तो करना ही पड़ेगा। इसलिए साथियो अगर जीवन में कुछ बनना हैं तो संघर्ष तो करना ही पडेगा और चुनोतियो का सामना भी करना होगा तब ही हम अपने जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। आपने तो सुना ही है कि मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है। इसलिए हमें कभी भी मेहनत करने से घबराना नहीं चाहिए। यदि हम मेहनत करते हैं, संघर्ष और चुनोतियो का सामना करते है तभी अपनी मंजिल पा सकते हैं। किसी ने कहा है – '

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः,
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः"

➢ गुलशन अरोड़ा
निजी सहायक (वित्त एंव प्रशासन)

जीवन साथी

बहू एक कप चाय मिलेगी क्या कमला ने अपनी बहू रीना को आवाज देते हुए कहा । जी माँ जी अभी लाई अपने पल्लू से पसीना पोंछते हुए रीना ने जवाब दिया । सारा दिन घर का काम करके रीना थक जाती थी । ऊपर से बूढ़ी सास की देखभाल अलग । दिन भर काम करने के बाद थकी हारी रीना अपने कमरे में पहुँची तो लेटते ही बस अतीत की यादों में खो गई । रीना संपन्न परिवार की इकलौती लडकी थी। कॉलेज में रोहित से मुलाकात हुई तो दोनों ने विवाह का फैसला कर लिया। जैसे ही रोहित ने अपनी शादी की बात अपने माँ और बाबू जी से की तो दोनों परेशान हो गये कि रीना पढ़ी लिखी अमीर घराने की लड़की है। वह इस घर की जिम्मेदारी कैसे उठा सकेगी । रोहत की माँ ने उलझन भरे स्वर में रोहित से कहा । बेटा ! रीना के घर में तो नौकर चाकर हैं। वह भला घर का काम और इस घर की जिम्मेदारी कैसे उठायेगी। माँ ने डरते हुए रोहित से कहा। नहीं माँ रीना बहुत ही समझदार और पढ़ी लिखी लडकी है। वह तो मेरे कदम से कदम मिलाकर चलेगी । उसने मुझसे वादा किया है, रोहित ने अपनी मां की उलझन दूर करते हुए कहा । रोहित के आश्वासन से उसके माता पिता आश्वास्त हो गये और रोहित और रीना की शादी हो गई । सुनहरे भविष्य के सपने सजोये सजी धजी रीना ने अपने ससुराल में कदम रखा । मेहमानों की चहल पहल से घर में रौनक थी। शादी के एक दो दिन बाद सारे मेहमान अपने–अपने घर चले गये और घर की जिम्मेदारी से रीना का सामना हुआ । सुबह जल्दी उठते ही माँ बाबू जी को चाय नाश्ता देना, रोहित को ऑफिस भेजने से लेकर घर के बर्तन, झाडू पौछा सब कुछ करते–करते रीना थक कर चूर हो जाती थी ।

क्या यही सपने लेकर वो ससुराल आई थी। मन ही मन सोचकर वह परेशान हो गई । रीना को बहुत सोच समझकर अपने घर का खर्च चलाना पडता था । शादी से पहले वह दिल खोलकर खर्च करती थी। सहेलियों के साथ सैर सपाटा करना और दिल खोलकर शापिंग करना उसकी आदत थी । परन्तु अपने ससुराल में उसे अपने खर्चें सोच समझ कर करने पडते थे। यूं तो रोहित एक मल्टीनेशनल कंपनी में अच्छी नौकरी करता था और वेतन भी अच्छा था। परन्तु घर के खर्च और माता पिता की दवाओं का खर्चा उठाना इस मंहगाई के जमाने में थोड़ा मुश्किल हो जाता था। जैसे ही शाम को रोहित घर आया, रीना का उदास चेहरा देखा तो वजह जानने की कोशिश की। रोहित के पूछते ही रीना का सब्र का बांध टूट गया और वह जोर जोर से रोने लगी । रोहित ने रीना को प्यार से समझाया कि सारे घर की जिम्मेदारी पहले बाबू जी उठाते थे । उन्होंने अपनी दो छोटी बहनों की शादी की और मुझे पढ़ाया लिखाया । अब हम दोनों का फर्ज बनता है कि अपने मां बाबूजी और इस घर का ख्याल रखें । अगली सुबह रीना की माताजी का फोन आया कि रीना के पिताजी की तबियत खराब है। फोन सुनते ही रीना अपने मायके चली गई । कुछ दिन बीतने के बाद भी जब रीना घर वापस नहीं आयी तो रोहित और उसकी माताजी के मन में संशय हुआ कि रीना अब शायद घर वापस न आये। अचानक ही किसी ने दरवाजा खटखटाया। जैसे ही रोहित ने दरवाजा खोला तो सामने मुस्कुराती हुई रीना खडी थी । मुझे तो लगा कि अब तुम कभी वापस नहीं आओगी रीना ! रोहित ने रीना को देखते ही पूछा। कैसे नहीं आती रोहित यही तो मेरा घर है, मेरे सपनों का घर, जिसकी जिम्मेदारी मैं तुम्हारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर निभाऊँगी। आखिर वादा जो किया था तुमसे। रीना ने अपनी अटैची रखते हुए कहा, मैं एक पढ़ी लिखी लडकी हूँ जिसे अपने फर्ज से मुंह नहीं मोडना चाहिए । यह सुनते ही रोहित की मां ने रीना को गले से लगा लिया और रोहित भी मन ही मन चिंता मुक्त हो गया । आज रोहित की पंसद पर रोहित और उसके माता पिता को बड़ा गर्व महसूस हो रहा था और उसके मन में रीना की इज्जत और ज्यादा बढ़ गई थी।

➢ नितिन कुमार
कार्यालय सहायक (वित्त एंव प्रशा.)

मन की सीख

बहुत पुरानी बात है एक आश्रम था जहां बहुत सारे बच्चे दूर–दूर से शिक्षा ग्रहण करने आते थे। उन्हीं में से थे सोहन और कबीर। उन दोनों की शिक्षा पूर्ण हो चुकी थी। आश्रम के नियम के अनुसार उन्हें अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद घर जाना था। लेकिन जब सोहन और कबीर घर जाने लगे तो गुरुजी ने उन्हें अपने पास बुलाया और कहा, बच्चों आज तुम अपनी शिक्षा पूर्ण करके अपने–अपने घर जा रहे हो। लेकिन तुम्हें अपने घर जाने से पहले एक और परीक्षा देनी होगी। इस परीक्षा में अगर तुम सफल हुए तो तुम्हें घर जाने दिया जाएगा। लेकिन अगर तुम असफल हुए तो तुम्हे यहीं रूकना होगा। सोहन गुरुजी से पूछता है, गुरुजी आप किस परीक्षा के बारे में बात कर रहे हैं?हमने तो अपनी शिक्षा पूरी कर ली है और आज तो हमें घर भी जाना है, फिर अब कौन सी परीक्षा देनी है? गुरुजी ने मुस्कराते हुए कहा, तुम दोनों मेरा सिर्फ एक छोटा सा काम करोगे। अगर तुम दोनों उस काम में सफल हुए तो तुम अपने घर जा सकते हो। तब कबीर ने गुरुजी से पूछा कि वह कौन सा काम है? आप बताईए हम अवश्य ही परीक्षा देंगे। गुरुजी ने उन दोनों को बहुत ही ध्यान से देखा, फिर मुस्कुराये और कहा, बच्चों तुम दोनों को मै एक–एक चिड़िया देता हूँ और तुम्हें इन्हें मारना है। तुम्हें इन्हें ऐसी जगह मारना है, जहां पर कोई तुम्हें देख न रहा हो। सोहन और कबीर दोनों ही उन चिड़ियों को लेकर चले जाते हैं। सोहन अपनी चिड़िया को लेकर एक सुनसान गुफा में जाता है और वहां जाकर देखता है कि अरे, यहां इस गुफा में तो कोई नहीं है । मैं अगर इसे मार भी देता हूं तो किसी को क्या पता चलेगा। यह कह कर वह उस गुफा में उस चिड़िया की गर्दन मरोड़कर उसे मार देता है और तुरन्त गुरुजी के पास आश्रम में जाता है और कहता है गुरुजी मैंने उस चिड़िया को मार दिया है। अब तो मैं घर जा सकता हूं ना। मैं इस परीक्षा में सफल हो गया हूँ। गुरुजी उस मरी हुई चिड़िया को हाथ में लेकर थोड़ा परेशान हो जाते हैं और सोहन को कहते हैं देखो सोहन मैंने तुम्हें और कबीर दोनों को यह काम दिया था लेकिन मुझे लगता है कि तुम अभी इस परीक्षा के परिणाम के लिए कबीर के आने का इंतजार करो। मैं तभी अपना फैसला सुना पाऊंगा। शाम हो गई थी अंधेरा भी काफी हो गया था लेकिन कबीर अभी तक नहीं आया और गुरुजी को उसकी चिंता होने लगी। तभी उन्हें दूर से कबीर आता हुआ नजर आया। तब गुरुजी ने सोहन से कहा देखो वह आ रहा है, उसके आने के बाद तुम दोनों परीक्षा के परिणाम की घोषणा हो जाएगी। प्रणाम गुरुजी, कबीर तुम इतनी देर से क्यों आए और तुम्हारे हाथ में यह चिड़िया जीवित कैसे है?गुरुजी यह बहुत लम्बी कहानी है आप बस यह समझ लीजिए कि मैं इस परीक्षा में सफल नहीं हुआ। मुझे क्षमा करें। मैं इस चिड़िया को नहीं मार पाऊंगा। इस कारण मैं अपने घर भी नहीं जा पाउंगा। यह सुनते ही गुरुजी कबीर से कहते हैं। रूको कबीर तुम जब तक हमें पूरी बात नहीं बताओगे हम तुम्हें आश्रम में प्रवेश नहीं करने देंगे। बताओ क्या हुआ था तुम्हारे साथ। गुरुजी जैसा कि आपने कहा था कि इस चिड़िया को वहीं ले जाकर मारना जहां पर कोई न देख रहा हो, तो मैंने वहीं किया। मैं इसे मारने के लिए जंगल में ले गया लेकिन वहां पर मौजूद सारे जानवर मुझे देख रहे थे, फिर मैं इसे जंगल के अंदर ले गया वहां पर जानवर तो मौजूद नहीं थे, पर सारे पेड़ पौधे मुझे देख रहे थे। इसके बाद मैं इसे सागर के किनारे ले गया तो वहां सारी मछलियां और सागर मुझे देख रहे थे। जब मैं इसे मारने के लिए पहाड़ पर ले गया तो मुझे वहां पर सन्नाटा दिख

रहा था। इसके बाद मैं इसे एक गुफा के अंदर ले गया, तो वहां पर मुझे अंधेरा देख रहा था और इन सब में सबसे बड़ी बात इस चिड़िया को मारते हुए मैं स्वयं देख रहा था। गुरुजी यह सुनकर मुस्कुराये और उससे कहा कबीर तुमने तो सबसे बड़ी शिक्षा ग्रहण की है, जो मैं तुम्हें समझाना चाहता था। वह तुम समझ गए। तुमने इस चिड़िया को इसलिए नहीं मारा कि तुम्हें सब देख रहे थे एकांत में भी यही हमारा भय है जो हमें गलत काम करने से रोकता है। अगर हम सब गलत काम करने से पहले मन में यह सोचें कि हमें कोई देख रहा है तो भय के कारण हम कुछ भी गलत काम नहीं करेंगे। बस यही मैं तुम्हें समझाना चाहता था और तुम बहुत अच्छे से समझ गए। तत्पश्चात् गुरुजी ने अपनी शक्तियों से उस मरी हुई चिड़िया को भी जीवित कर दिया। गुरुजी की यह बात सुनकर सोहन को यह अंदाजा हो गया कि उसे अभी और शिक्षा ग्रहण करनी है। इसलिए वह चुपचापत आश्रम चला गया और कबीर वापस अपने घर चला गया।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि हमें कुछ भी बुरा करने से पहले दस बार सोचना चाहिए तथा गलत काम के प्रति अपने मन में भय रखना चाहि। हमारे मन का भय हमें गलत काम करने से रोकता है और गलत काम न होने पर यह हमारे समाज के लिए बहुत अच्छा होता है।

➢ललित चौधरी
कार्यालय सहायक (वि. एवं प्रशा.)

भारत के संविधान का अनुच्छेद 351

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

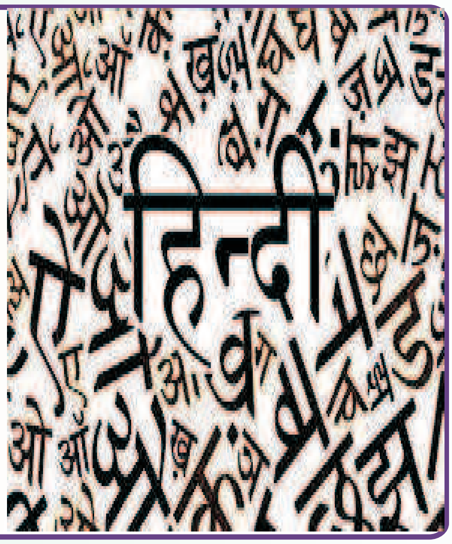

मोह

एक सेठ जी थे काफी बूढ़े हो गए थे। दाना दलने की एक चक्की थी वह उस पर बैठे थे। बूढ़े होने पर भी दाना दल रहे थे। दलते जाते, कहते जाते– "इस जीवन से तो मौत अच्छी है" इसी समय एक साधु दूकान के पास से होकर निकले। उन्होंने सेठ जी के ये शब्द सुने, सोचा कितना दुखी है यह व्यक्ति ! इसकी सहायता करनी चाहिये।

उसके पास जाकर बोले बहुत दुखी लगता है तू ! मेरे पास एक विद्या है ! यदि तू चाहे तो तुझे स्वर्ग ले जा सकता हूँ, चलता है तो चल! यहाँ के दुखों से छुटकारा मिल जायगा । सेठ ने साधु की ओर देखा; बोला बहुत दयावान हो तुम, परन्तु मैं जा कैसे सकता हूँ। इतना बूढ़ा हो गया। अभी तक कोई संतान नहीं हुई, संतान हो जाय तो चलूँगा अवश्य" साधु ने कहा "बहुत अच्छा "और चला गया। कुछ वर्षों बाद सेठ के दो बेटे पैदा हो गये। साधु ने वापस आकर कहा– "चलो सेठ अब तो तुम्हारी सन्तान हो गई " सेठ ने कहा "हाँ हो तो गई, परन्तु अभी तक वह किसी योग्य तो नहीं । लड़के तनिक बड़े हो जाएँ, तब तुम आना मैं अवश्य चलूँगा । लड़के बड़े हो गये, साधु फिर आया तो सेठ नहीं था, उसने पूछा कि सेठ कहाँ हैं तो पता लगा कि मर गये हैं। साधु ने योग बल से देखा कि मर कर वह गया कहाँ? तो उसने पता लगाया कि दुकान के बाहर जो बैल बंधा है, वही पिछले जन्म का सेठ है। उसके पास जाकर साधु ने कहा – अब चलेगा स्वर्ग को "।

सेठ (बैल) ने सर हिला कर कहा– "कैसे जाऊँ बच्चे अभी नासमझ हैं। मैं चला गया तो कोई दूसरा बैल ले आयेंगे। जितनी अच्छी प्रकार से मैं बोझ उठाता हूँ, उतनी अच्छी प्रकार से दूसरा बैल बोझ नहीं उठाएगा तो मेरे बच्चों को हानि हो जायेगी । ना भाई, अभी तो मैं नहीं जा सकता, कुछ देर और ठहर जा"।

पांच वर्ष व्यतीत हो गये। साधु फिर वापस आया । देखा– दुकान के सामने अब बैल नहीं है, दुकान के मालिकों ने एक ट्रक खरीद लिया है । उसने इधर उधर से पूछा कि बैल कहाँ गया? ज्ञात हुआ, बोझ ढोते ढोते मर गया । साधु ने फिर अपने योग बल का प्रयोग करके पता लगाया । तो पता लगा–की वह सेठ अपने ही घर के द्वार पर कुत्ता बन कर बैठा है । साधु ने उसके पास जाकर कहा – अब तो बोझ ढोने कि बात भी नहीं रही । अब चल तुझे स्वर्ग ले चलूँ । कुत्ते के शरीर में बैठे सेठ ने कहा– अरे कैसे ले चलूंगा ! देखता नहीं कि मेरी बहू ने कितने आभूषण पहन रखे हैं? मेरे लड़के घर में नहीं हैं, यदि कोई चोर आ गया तो बहू को बचायेगा कौन? नहीं बाबा! तुम जाओ, अभी मैं नहीं जा सकता" साधु चला गया। एक वर्ष बाद उसने वापस आकर देखा कि कुत्ता भी मर गया है। उस साधु ने अपने योग बल द्वारा पुनः उस सेठ को खोजा, तो ज्ञात हुआ कि वह अपने घर के पास बहने वाली गन्दी नाली में कीड़ा बन के बैठा है। साधु ने उसके पास जाकर कहा– "देखो सेठ क्या इससे बड़ी दुर्गति भी कभी होगी कहाँ से कहाँ पहुँच गये तुम ! अब भी मेरी बात मानो, आओ तुम्हें स्वर्ग ले चलूँ " कीड़े के शरीर में बैठे सेठ ने चिल्ला कर कहा – "चला जा यहाँ से ! क्या मैं ही रह गया हूँ स्वर्ग जाने के लिए ?उनको ले जा मुझको यहीं पड़ा रहने दे । यहाँ पोतों पोतियों को आते जाते देख कर प्रसन्न होता हूँ । स्वर्ग में क्या मैं तेरा मुख देखा करूँगा । यह है मोह के चक्र में फंसे रहने का परिणाम ।

यह मोह का चक्र आत्मा को नीचे ही नीचे ढकेलता चला जाता है । इस प्रकार के कर्म मत करो ! कर्म करो अवश्य, परन्तु मोह और ममता से परे हट कर।

➢लवली सूदन
कार्यालय सहायक (परियोजना–।।।)

तीन खिलौने

महाराजा चन्द्रगुप्त का दरबार लगा था। चाणक्य दरबार की कार्यवाही का संचालन कर रहे थे। महाराजा को खिलौनों का बहुत शौक था। उन्हें नित्य एक नया खिलौना चाहिए था। दरबार में पता चला कि आज एक सौदागर कुछ नए खिलौने लेकर आया है। सौदागर का दावा है कि महाराजा या किसी ने भी आज तक ना तो ऐसे खिलौने देखे हैं और ना ही देखेंगे। सौदागर को दरबार में आने की इज़ाज़त मिली। सौदागर आया। पहले तो उसने महाराजा को प्रणाम किया फिर अपने पिटारे से तीन पुतले निकाले। उसने कहा कि उसके तीनों पुतले निराले हैं। सब अपने आप में विशेष हैं। पहले पुतले का मूल्य एक लाख मोहरें हैं । दूसरे का एक हज़ार मोहरें तथा तीसरे पुतले का केवल एक मोहर है। सम्राट ने तीनो पुतलों को बड़े ही गौर से देखा। देखने में तीनो समान ही लग रहे थे। फिर मूल्य में इतना अंतर क्यों ?चन्द्रगुप्त भी इस गुत्थी से परेशान थे। किसी को जब कोई जवाब नहीं मिला तब चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से पूछा। चाणक्य ने तीनो पुतलों को बड़े ही ध्यान से देखा। उन्होंने पहले पुतले के कान में एक तिनके को डाला। तिनका सीधे पेट में चला गया। थोड़ी देर बाद पुतले के होठ हिले और फिर बंद हो गए। चाणक्य ने तिनके को दूसरे पुतले के कान में डाला। सब ने देखा कि तिनका दूसरे कान से होकर बाहर हो गया। पुतला ज्यों का त्यों रहा। तीसरे पुतले के कान में तिनका डालते ही तिनका मुँह से बाहर आ गया। पुतला हिलने लगा मानो कुछ कहना चाह रहा हो। राजा ने कारण पूछा।

चाणक्य ने कहा –राजन,जो चरित्रवान होते हैं ,वे सुनी–सुनाई बात को अपने आप तक ही सीमित रखते हैं।पहले वे इसकी पुष्टि करते है फिर अपना मुंह खोलते हैं। इसलिए इस पुतले का मूल्य इतना अधिक है। वहीं कुछ लोग सदा अपने आप में मग्न रहते हैं वे हर बात को अनसुना कर देते हैं। वे किसी को हानि नहीं पहुंचाते ना ही अपनी वाह –वाही लेते हैं। दूसरे पुतले से यही ज्ञान मिलता है। इसलिए इस पुतले का मूल्य एक हज़ार मोहरें हैं। कुछ लोग कान के कच्चे और पेट के हलके होते हैं। कुछ भी सुना तो तुरंत इसे सभी जगह फैला देते हैं। इन्हें झूठ–सच से कोई मतलब नहीं होता। इन्हे सिर्फ मुंह खोलने से मतलब होता है। इसलिए इस पुतले का मूल्य केवल एक मोहर है।

➢ भूपेन्द्र
कार्यालय सहायक(वित्त एवं प्रशा.)

छोटा सा मन

बोला मेरे अदंर का छोटा सा मन
तू आगे बढ़ और अपने मन की कर
कर वहीं जो तेरा दिल करता है और
कहता है
नहीं तो.......
तुझे तो पीछे धकेलने वाले बहुत हैं ।

न सुन किसी और की
केवल सुन अपने मन की
सुन क्या दिल की धड़कन कहती है
नहीं तो.........
तुझे तो अनसुने करने वाले बहुत हैं ।

उड़ जा तू छूले नभ की सारी ऊंचाइयों को
मत देख जरा जो पीछे छूटा
नहीं तो.........
तुझे तो पीछे धकेलने वाले बहुत हैं ।

बहुत कुछ कहा सबने और सुना तुमने बहुत
और मत सुन इन बेबस और लाचारियों की धुन को
नहीं तो.........
तुझे तो आसमां से जमीन पर गिराने वाले बहुत हैं।

मन तो तेरा भी करता होगा बहुत
स्वाद जीवन के खट्टे मीठे अनुभव को चखने का
चख ले इस सम्पूर्ण जीवन की मिठास को
नहीं तो..........
तुझे तो कड़वा जहर पिलाने वाले बहुत हैं।

बहुत बन चुकी तू मीरा
और राणा जी बन चुका ये संसार
तलवार उठा रण चंडी बन जा
आज........
तेरी शक्ति के आगे सर झुकाने वाले बहुत हैं।।।

➢ वीनू शर्मा,
वरिष्ठ कार्यालय सहायक(पी–।।।)

पिता की इच्छा शक्ति

मेहनत की अग्नि में खुद को जलाकर
अपने बहुतों को राह दिखाई है
अपने को तो पहुँचा दिया तट पर
फिर क्यों अपनी नइया तुमने
लहरों के बीच लगाई है।
नहीं देखा मैंने ईश्वर को
आप में ही कहीं मैं उन्हें ढूंढ पाती हूँ
आपको अपनी बात समझाने में
मैं भले ही वक्त लगाती हूँ।

इस दुनिया की भीड़ में न जाने
मैं आपको कैसे समझ लेती हूँ
अपने जज्बात बोल के नहीं तो क्या
शब्दों में तो बयां कर देती हूँ।

मुझे इस लायक बनाकर
आपने अपना फर्ज निभाया है
मेरी नादानियों को माफ कर
मुझ पर अपना प्यार निस्वार्थ लुटाया है।
आपकी इस लगन की आदत को
मैं अपने जीवन में अपनाऊँगी
मैं अपने शब्दों के जरिए
आपको अपनी प्रेरणा बनाऊँगी।

सीखेंगे लोग आपसे, तनाव को हँसकर कैसे टाला जाता है, और
अपने आंसुओं को हंसकर कैसे छुपाया जाता है। आपके इस
जूनून का रंग है ही बड़ा निराला
जिसके रहते हम सबने साथ मिलकर वक्त निकाला।
अब उन मुश्किलों ने मुझे
बस एक बात समझाई है,
कि इस बढ़ती हुई उम्र की चढ़ाई में
मैं आपकी ढाल बन जाऊँगी
जीवन की गहराईयों का सबक
मैं आपसे सीखती जाऊँगी।

➢दीपिका दीवान
वरिष्ठ कार्यालय सहायक(पी–।।।)

गुरु का महत्व

हमारे जीवन में गुरु बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। मनुष्य के लिए भगवान से भी बढ़कर गुरु को माना जाता है क्योंकि भगवान हमें जीवन प्रदान करता है और गुरु हमें शिक्षा देकर इस जीवन को सही ढंग से जीना सिखाते हैं। गुरु की महिमा का पूरा वर्णन कोई नहीँ कर सकता । गुरु की महिमा भगवान से भी अधिक है । इसलिये शास्त्रों में गुरु की बहुत महिमा है । परंतु वह महिमा सच्चाई की है, पाखण्ड की नहीं । भारत में सांसारिक अथवा पारमार्थिक ज्ञान देने वाले व्यक्ति को गुरु कहा जाता है। शिक्षक – जो स्कूलों में शिक्षा देता है। आचार्य – जो अपने आचरण से शिक्षा देता है। कुलगुरु – जो वर्णाश्रम धर्म के अनुसार संस्कार ज्ञान देता है। .दीक्षा गुरु – जो परम्परा का अनुसरण करते हुए अपने गुरु के आदेश पर आध्यात्मिक उन्नति के लिए मंत्र दीक्षा देते हैं। गुरु –वास्तव में यह शब्द समर्थ गुरु अथवा परम गुरु के लिए आया है। गुरु का अर्थ है भारी. ज्ञान सभी से भारी है अर्थात महान है। अतः पूर्ण ज्ञानी चैतन्य रूप पुरुष के लिए गुरु शब्द प्रयुक्त होता है, उसकी ही स्तुति की जाती है। यदि बच्चों से कहा जाए कि वे आधुनिक विज्ञान की शिक्षा किसी शिक्षक के बिना अथवा पिछले कई दशकों में प्राप्त ज्ञान के बिना ही ग्रहण करें तो क्या होगा ?यदि हमें जीवन में बार–बार पहिए का शोध करना पडे, तो क्या होगा ? हमें संपूर्ण जीवन स्वयं को शिक्षित करने में बिताना पडेगा । हम जीवन में आगे नहीं बढ पाएंगे और हो सकता है कि किसी अनुचित मार्ग पर चल पडें । हमारी आध्यात्मिक यात्रा में भी मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है । किसी भी क्षेत्र के मार्गदर्शक को उस क्षेत्र का अधिकार (ज्ञान) होना आवश्यक है । अध्यात्म शास्त्र के अनुसार जिस व्यक्ति का अध्यात्म शास्त्र में अधिकार (प्रभुत्व) होता है, उसे गुरु कहते हैं । एक उक्ति है कि अंधों के राज्य में देख पाने वाले को राजा माना जाता है । आध्यात्मिक दृष्टि से दृष्टिहीन और अज्ञानी समाज में, प्रगत छठवीं ज्ञानेंद्रिय से संपन्न गुरु ही वास्तविक अर्थों से दृष्टि युक्त हैं । गुरु वे हैं, जो अपने मार्गदर्शक की शिक्षा के अनुसार आध्यात्मिक पथ पर चलकर विश्व मन और विश्व बुद्धि से ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं । जिस प्रकार किसी देश की सरकार के अंर्तगत संपूर्ण देश का प्रशासनिक कार्य सुचारू रूप से चलने हेतु विविध विभाग होते हैं, ठीक उसी प्रकार सर्वोच्च ईश्वरीय तत्त्व के विविध अंग होते हैं । ईश्वर के ये विविध अंग ब्रह्मांड में विशिष्ट कार्य करते हैं । जिस प्रकार किसी सरकार के अंर्तगत शिक्षा विभाग होता है, जो पूरे देश में आधुनिक विज्ञान सिखाने में सहायता करता है, उसी प्रकार ईश्वर का वह अंग जो विश्व को आध्यात्मिक विकास तथा आध्यात्मिक शिक्षा की ओर ले जाता है, उसे गुरु कहते हैं । इसे अदृश्य अथवा अप्रकट (निर्गुण) गुरु (तत्त्व) अथवा ईश्वर का शिक्षा प्रदान करने वाला तत्त्व कहते हैं । यह अप्रकट गुरु तत्त्व पूरे विश्व में विद्यमान है तथा जीवन में और मृत्यु के पश्चात भी हमारे साथ होता है । इस अप्रकट गुरु की विशेषता यह है कि वह संपूर्ण जीवन हमारे साथ रहकर धीरे–धीरे हमें सांसारिक जीवन से साधना पथ की ओर मोडता है । गुरु हमें अपने आध्यात्मिक स्तर के अनुसार अर्थात ज्ञान ग्रहण करने की हमारी क्षमता के अनुसार (चाहे वह हमें ज्ञात हो या ना हो) मार्गदर्शन करते हैं और हममें लगन, समर्पण भाव, जिज्ञासा, दृढता, अनुकंपा (दया) जैसे गुण (कौशल) विकसित करने में जीवन भर सहायता करते हैं । ये सभी गुण विशेष (कौशल) अच्छा साधक बनने के लिए और हमारी आध्यात्मिक यात्रा में टिके रहनेकी दृष्टि से मूलभूत और महत्त्वपूर्ण हैं । जिनमें आध्यात्मिक उन्नति की तीव्र लगन है, उनके लिए गुरुतत्त्व अधिक कार्यरत होता है और उन्हें अप्रकट रूप में उनकी आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करता है ।

➢पवन
स्टोर अटैंडेंट

चाहत

एक विद्वान को फाँसी लगने वाली थी। राजा ने कहा अगर मेरे एक प्रश्न का सही उत्तर बता दोगे तो तुम्हारी जान बख्श दूँगा। प्रश्न था, स्त्री आख़िर चाहती क्या है? विद्वान ने कहा मोहलत मिले, तो पता कर के बता सकता हूँ। राजा ने एक साल की मोहलत दे दी। विद्वान बहुत घूमा, बहुत लोगों से मिला, पर कहीं से भी कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। आखिर में किसी ने कहा दूर जंगल में एक भूतनी रहती है। इस प्रश्न का जवाब वह ज़रूर बता सकती है। विद्वान उस भूतनी के पास पहुँचा और अपना प्रश्न उसे बताया। भूतनी ने कहा कि मेरी एक शर्त है तुम मुझसे शादी करो। उसने सोचा, सही जवाब न पता चला तो जान राजा के हाथ जानी ही है। इसलिए शादी की सहमति देना उचित है। शादी होने के बाद भूतनी ने कहा– चूंकि तुमने मेरी बात मान ली है तो मैंने तुम्हें खुश करने के लिए फैसला किया है कि मैं 12 घंटे. भूतनी और 12 घंटे खूबसूरत परी बनके रहूँगी । अब तुम यह बताओ कि दिन में भूतनी रहूँ या रात को ? उसने सोचा यदि वह दिन में भूतनी हुई, तो दिन नहीं कटेगा, रात में हुई तो रात नहीं कटेगी। अंत में उस विद्वान व्यक्ति ने कहा, जब तुम्हारा दिल करे परी बन जाना, जब दिल करे. भूतनी बन जाना। बात सुनकर भूतनी ने प्रसन्न हो कर कहा, चूंकि तुमने मुझे अपनी मर्ज़ी करने की छूट दे दी है, तो मैं हमेशा ही परी बन के रहा करूंगी। और यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है।

➢संजय चौहान
मैसेंजर

बचपन

आज याद आता है वो बचपन
स्कूल न जाने का बहाना
और जाने पर घंटों आँसू बहाना
पैंसिल का खो जाना
और दूसरों का रबड़ चुराना
आज याद आता है वो बचपन।

जरा सी बातें पर झगड़ना
और गलतियों पर डांट खाना
धूप में साइकिल चलाना
और घर आकर बीमार पड़ जाना
आज याद आता है वो बचपन।

शक्तिमान के लिए भाई से लड़ना
और खींचतानी में रिमोट का टूटना
चाचा चौधरी की किताबें लाना
स्कूल छोड़ कॉमिक्स में ही लग जाना
आज याद आता है वो बचपन।

पैसे चुराकर बर्फ का गोला खाना
दूसरे के बगीचे से आम चुराना
दोस्तों के संग मेला जाना
और मेले में जलेबी और मूंगफली खाना
आज याद आता है वो बचपन।

➢ उमेश
एमटीएस

किसान और चट्टान

एक किसान था। वह एक बड़े से खेत में खेती किया करता था। उस खेत के बीचो–बीच पत्थर का एक हिस्सा ज़मीन से ऊपर निकला हुआ था जिससे ठोकर खाकर वह कई बार गिर चुका था और ना जाने कितनी ही बार उससे टकराकर खेती के औजार भी टूट चुके थे। रोजाना की तरह आज भी वह सुबह–सुबह खेती करने पहुंचा और जो सालों से होता आ रहा था, वही हुआ। एक बार फिर किसान का हल पत्थर से टकराकर टूट गया। किसान बिल्कुल क्रोधित हो उठा और उसने मन ही मन सोचा कि आज जो भी हो जाए वह इस चट्टान को ज़मीन से निकाल कर इस खेत के बाहर फ़ेंक देगा। वह तुरंत भागा और गाँव से 4–5 लोगों को बुला लाया और सभी को लेकर वह उस पत्थर के पास पहुंचां। मित्रों ", किसान बोला , " ये देखो ज़मीन से निकले चट्टान के इस हिस्से ने मेरा बहुत नुकसान किया है और आज हम सभी को मिलकर इसे जड़ से निकालना है और खेत के बाहर फ़ेंक देना है। ऐसा कहते ही वह फावड़े से पत्थर के किनारे वार करने लगा, पर ये क्या ! अभी उसने एक–दो बार ही मारा था कि पूरा–का पूरा पत्थर ज़मीन से बाहर निकल आया। साथ खड़े लोग भी अचरज में पड़ गए और उन्ही में से एक ने हँसते हुए पूछा क्यों भाई , तुम तो कहते थे कि तुम्हारे खेत के बीच में एक बड़ी सी चट्टान दबी हुई है, परन्तु यह तो एक मामूली सा पत्थर निकला। "किसान भी आश्चर्य में पड़ गया। सालों से जिसे वह एक भारी–भरकम चट्टान समझ रहा था दरअसल वह बस एक छोटा सा पत्थर था । उसे पछतावा हुआ कि काश उसने पहले ही इसे निकालने का प्रयास किया होता तो ना उसे इतना नुकसान उठाना पड़ता और ना ही दोस्तों के सामने उसका मज़ाक बनता । दोस्तों इस किसान की तरह ही हम भी कई बार ज़िन्दगी में आने वाली छोटी–छोटी बाधाओं को बहुत बड़ा समझ लेते हैं और उनसे निपटने की बजाय तकलीफ उठाते रहते हैं। ज़रुरत इस बात की है कि हम बिना समय गंवाए उन मुसीबतों से लडें, और जब हम ऐसा करेंगे तो कुछ ही समय में चट्टान सी दिखने वाली समस्या एक छोटे से पत्थर के समान दिखने लगेगी जिसे हम आसानी से ठोकर मार कर आगे बढ़ सकते हैं।

➢अनिल कुमार
डाक प्रेषक

मैं ना होता तो क्या होता

अशोका वाटिका में जिस समय रावण क्रोध में आकर तलवार लेकर सीता माँ को मारने के लिए दौड़ा तब हनुमान जी को लगा कि इसकी तलवार छीनकर इसका सर काट लेना चाहिए। किन्तु, अगले ही क्षण उन्होंने देखा मंदोदरी ने रावण का हाथ पकड़ लिया। यह देखकर वे गदगद हो गए। वे सोचने लगे कि यदि मैं आगे बढ़ता तो मुझे भ्रम हो जाता कि मैं न होता तो सीता जी को कौन बचाता। हमको भी ऐसे ही भ्रम हो जाता है मैं ना होता तो क्या होता?

परन्तु ये क्या हुआ?सीताजी को बचाने का कार्य प्रभु ने रावण की पत्नी को ही सौंप दिया। तब हनुमान जी समझ गए कि प्रभु जिससे जो कार्य लेना चाहते हैं वह उसी से लेते हैं। आगे जाकर जब त्रिजटा ने कहा कि लंका में बंदर आया हुआ है और वह लंका जलायेगा तो हनुमान जी बड़ी चिंता में पड़ गए। प्रभु ने तो लंका जलाने के लिए कहा ही नहीं है और त्रिजटा कह रही है कि उन्हेंने स्वप्न में देखा है कि एक वानर ने लंका जलाई है। अब उन्हें क्या करना चाहिए?जो प्रभु इच्छा। अब रावण के सैनिक तलवार लेकर हुनमान जी को मारने के लिए दौड़े तो हनुमान जी ने अपने को बचाने के लिए तनिक भी चेष्टा नहीं की। जब विभीषण जी ने आकर कहा कि दूत को मारना अनीति है तो हनुमान जी समझ गए कि मुझे बचाने के लिए प्रभु ने यह उपाय कर दिया। आश्चर्य की परीक्षा तो तब हुई, जब रावण ने कहा कि बंदर को मारा नहीं जायेगा। तो एक सैनिक ने कहा महाराज बंदरों को अपनी पूँछ से बड़ा स्नेह होता है तो क्यों न इसकी पूंछ को ही जला दिया जाए। तब सब ने पूंछ में कपड़ा लपेटकर, घी डालकर हनुमान जी की पूंछ पर आग लगा दी। तब हनुमान जी सोचने लगे कि लंका जलाने वाली बात जो त्रिजटा ने कही थी वो बात सच हुई । अन्यथा लंका को जलाने के लिए मैं कहां से घी, तेल, कपड़ा लाता और कहां आग ढूंढता। परन्तु वह व्यवस्था भी भगवान श्री राम जी ने रावण से करा दी। घी भी उसका तेल भी उसका कपडा भी उसका लंका भी उसकी। जब आप रावण से भी काम करवा लेते हैं तो मुझसे करा लेने में आश्चर्य की क्या बात है। इसलिए सदैव याद रखें कि संसार में जो हो रहा है, वह सब ईश्वरीय विधान हैं। हम और आप तो केवल निमित मात्र हैं। इसलिए कभी भी ये भ्रम न पालें कि मैं न होता तो क्या होता? ना मैं श्रेष्ठ हूँ, ना ही खास हूँ, मैं तो भगवान का बस छोटा सा दास हूँ।

➤ बिशन सिहं डसीला
एमटीएस

हिन्दी पुकार रही है

हिन्दी पुकारती है मुझको संभाल लो
राजभाषा हूँ तुम्हारी मुझको संवार लो
मैं नहीं लगती हूँ अंग्रेजी मैडम की तरह
मैं हूँ सीधी–साधी हिन्दुस्तानी की तरह।

हिन्दी में सुनी थी जो माँ से लोरियां
तुम पढ़ लिख के उन्हीं से बच्चों को दुलार दो।
हिन्दी पुकारती है मुझको संभाल लो
राजभाषा हूँ तुम्हारी मुझको संवार लो।

कोयल जैसी मीठी बोली हूँ मैं,
फिर क्यों अंग्रेजी बोलकर शेखी बखारता।
हिन्दी पुकारती है मुझको संभाल लो
राजभाषा हूँ तुम्हारी मुझको संवार लो।

लिखा था तुलसीदास ने चौपाइयों में मुझे
तुम हिन्दी में छोटी सी कविता ही ढाल दो,
हिन्दी पुकारती है मुझको संभाल लो
राजभाषा हूँ तुम्हारी मुझको संवार लो।

➤संजय चौहान
मैसेंजर

जिद्द मंजिल पाने की

क्या हुआ जो आज मैं
एक आम इंसान हूँ।
एक दिन खास बन दिखाऊँगा जिद्द है मंजिल पाने की ।
दुनिया में नया कीर्तिमान रचाऊँगा
इतिहास में एक सुनहरा अध्याय
मैं अपना भी जोड़ जाऊँ
ना रूकूंगा ना थकूंगा ना झूकूंगा
ना पीछे मुड़ कर देखूंगा।
आग है सीने में, जज्बा है सांसो में
उम्मीद है आंखों में, इसको साकार रूप दे जाऊँगा
जिद्द है मंजिल पाने की।

चाहे लाख हो दीवारें
चाहे हों अनगिनत प्रतिकूल परिस्थितियां
सबको मैं पीछे छोड़ जाऊँगा।
हजारो बार गिरूंगा, फिर खड़ा हो जाऊँगा
लेकिन उम्मीद की एक किरण ना छोड़ूंगा
एक दिन मंजिल जरूर पाऊँगा गिरूंगा, उठूंगा फिर चल पड़ूंगा,
यूं तराशते – तराशते एक दिन मैं भी हीरा बन जाऊँगा,
जिद्द है मंजिल पाने की।

एक दिन मैं भी खास बन जाऊँगा
दुनिया रोकेगी...दुनिया हंसेंगी,
मेरी मंजिल पाने के इस जुनून
का पागलपन कहेगी, कहेगी पर
हाथों की लकीरों को मैं बदलकर दिखाऊँगा
एक दिन मैं भी मंजिल को पाऊँ।

अपने हौंसले से दुनिया को लोहा मनवाऊँगा
कांटों भरी इस पथरीली राह पर
मुस्कुराते हुए चल दिखाऊँगा।
दृढ इच्छा शक्ति, जुनून और इस स्वप्न को
मैं हकीकत बना जाऊँगा,
एक दिन मैं भी खास बन जाऊँगा,
बस जिद्द है मंजिल पाने।

बता दूंगा दुनिया को इन फौलादी इरादों से
एक दिन पत्थर पर लकीर बनाऊँगा
मंजिल को बाहों में भरकर एक नया कीर्तिमान रचाऊँगा, एक
दिन मैं भी खास बन जाऊँगा
बस यही जिद्द है मंजिल पाने।।

➤ संजय कुमार
ऑफिस बॉय

सफलता

मत करना मन विचलित अपना,
देर अगर जो हो जाए,
ऐसा कुछ भी नहीं है जग में जो न तुमसे हो पाए, ज्ञान
अगर हो लक्ष्य का अपने दृढ़ संकल्प का मान रहे,
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी तुम खड़े जो सीना
तान रहे।

राह नहीं आसान है ये मुश्किल रास्ते में आएगी,
किस्मत पे भरोसा मत करना ये राह तुम्हें भटकाएगी,
मत हारना हिम्मत इनसे तुम चाहे जितनी घमासान रहे,
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी तुम खड़े जो सीना
तान रहे।

जो कमी कोई रह जाती हे तो उसका तुम अभ्यास करो
जो गिरते हो तुम एक दफा तो उठकर फिर प्रयास करो,
लगे रहो तुम कर्म में अपने जब तक इस तन में प्राण रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी तुम खड़े जो सीना
तान रहे।

गिरने में वक्त नहीं लगता, लगता है नाम कमाने में, खुद
ही चलना पड़ता है न बनता है साथी कोई जमाने में,
सच्चाई की राह जो चलते समाज में उसकी शान रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी तुम खड़े जो सीना
तान रहे।

कुछ भी करना तुम जीवन में मगर कभी न वो काम करना
हो जाए जिससे बदनामी और जीना भी लगे करना,
इस तरह से रहना तुम कि बना तुम्हारा सम्मान रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी तुम खड़े जो सीना
तान रहे।

➤ मोहम्मद आसिफ
ऑफिस बॉय

जय उत्तराखंड

हम उस माटी के बने हैं जहां देवता रहते हैं।
इसलिए मेरी मातृभूमि को देवभूमि कहते हैं।

गंगा यमुना बहती जिसमें ऊँचा जहां हिमालय हो।
नमन है ऐसी मातृभूमि को जहां केदार शिवालय हो।

जहां ढोल दमाऊ और हुडका आज भी बजाये जाते हैं
जहां तिलू रौतेली मालूशाही के गीत भी गाये जाते हैं।

जहां पर्वत की चोटी पर देव बिठाये जाते हैं।
जहां भट्ठ की चूडा.काणी, ककड़ी, मुंगरी, हिंसोला
दाल गौहत की काफल बाड़ी और प्यारा सा किंगड़ोला

अल्मोड़ा के झूंगूरू को बड़ा स्वादिष्ट बनाते हैं
फिर परिवार के सभी सदस्य बड़े चाव से खते हैं।

जहां हर घर में तुलसी, गाय को आज भी पूजा जाता है।
यही तो मेरा उत्तराखण्ड है जो हर दुनिया को भाता है।

➢प्रदीप सिंह
ऑफिस बॉय

दयालु किसान

एक बार की बात है, एक गाँव में एक किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। एक दिन वह जब अपने काम से लौट रहा था तब उसे एक घायल चिड़िया मिली। वह उसे अपने घर ले आया लेकिन उसकी पत्नी को यह बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा क्योंकि उसकी पत्नी हमेशा किसान से किसी न किसी बात पर लड़ती रहती थी। इसके बावजूद भी किसान ने उसकी बहुत अच्छी देखभाल की जिससे वह चिड़िया जल्दी ठीक हो गई। एक दिन जब किसान घर में नहीं था, तब वह चिड़िया वहाँ से उड़ गई। क्यूँकि वह नहीं चाहती थी कि उसकी वजह से किसान की पत्नी और गुस्सा हो। बहुत कोशिश करने पर उसने चिड़िया का घोंसला ढूंढ लिया। चिड़िया और उसके दोस्तों ने किसान को एक बक्सा दिया। उसने बक्सा खोला तो उसमें से अनमोल पत्थर निकले। यह देखकर किसान की पत्नी भी इस लालच में घोंसले के पास गई कि उसे भी कुछ अनमोल चीज़ मिल जायेगी लेकिन चिड़ियों ने उसे बिच्छुओं से भरा बक्सा दिया। बिच्छुओं ने उसे काट लिया और वह मर गई। किसान ने चिड़ियों के घोंसले के पास ही अपना घर बना लिया।

अच्छाई का फल हमेशा अच्छा मिलता है।और लालच का फल हमेशा बुरा ही होता है।

➢पवन कुमार
ऑफिस बॉय

हिन्दी से हिन्दुस्तान है

जन्म हुआ मानवता का यही तो वह स्थान है, दी सीख जिन्होंने धर्य की हमको तुलसी, कबीर संत महान है।
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

बिहारी, केशव, भूषण जैसे कवियों ने हिन्दी अपनाई, हिन्दी का महत्व बहुत है बात यही बताई। इससे इन सबकी विश्व में पहचान है।
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

है भाषा ये जन्मानस की जो हृदय से सबको जोड़ती है पढ़ा जाए इतिहास तो ये सभ्यता की ओर जोड़ती है। हर हिन्दुस्तानी के दिल में इसके लिए सम्मान है।
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

बात करें तो लिपि की तो बात ही इसकी निराली है जैसा लिखते वैसा बोलें पुराना नाम इसी का पॉली है गौतम बुद्ध की रचना का भी इसी भाषा में ज्ञान है। संस्कृत से संस्कृति हमारी हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

मुगल आए या आए गोरे सबको मार भगाया था। सारा भारत जब आपस में हिन्दी से जुड पाया था। तभी तो हिन्दी भाषा में गाया जाता है राष्ट्रगान, संस्कृत से संस्कृति हमारी हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख ईसाई आपस में ये सब भ्राता है, है हिन्दी जिसके कारण ही आपस में इनका नाता है। मिल जुलकर जो ये रहते तो भारत का होता निर्माण है, संस्कृत से संस्कृति हमारी हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

हिन्दी में सीखे पढ़ना हम गाने हिन्दी में गाते हैं फिर क्यों हिन्दी अपनाने में व्यर्थ ही हम घबराते हैं। सारे देश के संचार साधनों की यही तो एक जान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

छोड़ के हिन्दी करे अंग्रेजी में बातें इसी बात की है निराशा सीखो अन्य भाषाओं की पर अपनाओं अपनी भाषा। दुनिया में बतलाओ सबको हिन्दी से हमारी शान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

➤रोहन सिंह
सुरक्षाकर्मी

जिन्दगी

क्या पाया, क्या खोया क्यों खोया
बीता पचपन गई जवानी,
कब आया बुढ़ापा, पता ही नहीं चला।
कल बेटे थे, कब सुसर हो गए,
कब पापा से नाना बन गए, पता ही नहीं चला।

कोई कहता सठिया गये, कोई कहता छा गए,
पहले माँ–बाप की, फिर पत्नी की, फिर बच्चों की चली
अपनी कब चली, पता ही नहीं चला।

दिल कहता जवान हूँ, उम्र कहे नादान हूँ,
इस चक्कर मे घुटने घिस गए, झड़ गए बाल, लटक गए गाल
लग गया चश्मा, कब बदली सूरत, पता ही नहीं चला।

कल तक अठखेलियां करते थे मित्रों के साथ
अब सीनियर सिटीजन की लाइन में आ गए,
बहु,, जमाई, नाते, पोते आ गए
कब मुस्कराई उदास जिन्दगी, पता ही नहीं चला।

कैसे कटा 21 से 60 तक का यह सफर,
पता ही नहीं चला।

➤आदिल
ऑफिस बॉय

मेहनत का फल

यह कहानी एक छात्र आशीष की है। बहुत समय पहले की बात है। आशीष बिहार से चलकर जौनपुर उत्तर प्रदेश टीडी कॉलेज में पढ़ाई करने के लिए कॉलेज में एडमिशन लेता है। उस समय आशीष की उम्र करीब 20 वर्ष थी। कॉलेज के छात्र उसे बिहारी–बिहारी कहकर पुकारते थे। वह मध्यवर्गीय परिवार से था। किराए पर कमरा लेकर रहता था जो कॉलेज के पास ही था। वह बड़ी मुश्किल से अपना गुजर बसर करता था। आशीष पढ़ने में बहुत होशियार था। लेकिन कभी भी उसकी फाइल और कॉपियां पूरी नहीं हुआ करती थी। इसलिए वहां के अध्यापक अक्सर उसे कड़ी से कड़ी सजा देते रहते थे। एक दिन की बात है, तकरीबन रात को 11 बज रहे थे और घनघोर बारिश हो रही थी। कॉलेज में पढ़ाने वाले गुरुजी किसी जरूरी काम से बाजार गए हुए थे। शहर के बीचोंबीच बने शाही पुल के पास एक छोटी सी दुकान में खड़े हुए थे और किसी का इंतजार कर रहे थे। फोन की सुविधा भी नहीं थी। गुरुजी को कुछ सूझ नहीं रहा था कि वे अब घर कैसे जाएं।, कोई रिक्शा वाला भी नहीं था और बारिश भी बहुत जोर से हो रही थी। गुरुजी को घर कौन पहुंचाता? रात्रि के 11.30 बज चुके थे। तभी गुरुजी के सामने एक रिक्शे वाला आकर रूकता है और गुरुजी से कहता है कि चलिए बाबूजी हम आपको घर छोड़ आते हैं । उसके बाद गुरुजी उस रिक्शे पर बैठकर अपने घर के लिए निकल पड़ते हैं। घर पहुंचने पर गुरुजी ने पैसे निकाले और रिक्शेवाले के हथेली पर पैसे रखते हुए उसकी हथेली में एक लंबे चोट का निशान दिखा। गुरुजी ने रिक्शे वाले से चेहरे पर ढके मास्क को हटाने के लिए बोला। लेकिन रिक्शेवाला ने मना कर दिया और वह वहां से चला गया।

उस दिन गुरुजी रात भर जागते रहे और उस रिक्शेवाले के बारे में सोचते रहे कि कहीं हमने उसे देखा है। उसके हथेली के जख्मों को भी याद करने की कोशिश कर रहे थे। गुरुजी ने शायद वह जख्म कई बार देखे थे जो उन्हें याद नहीं आ रहे थे। कुछ दिनों बाद आशीष की फाइल न पूरा होने के कारण गुरुजी उसे सजा देने के लिए हथेली आगे बढाने के लिए कहते हैं। तभी अचानक गुरुजी के हाथों से छड़ी छूट जाती है और उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं। क्योंकि आशीष ही वह रिक्शावाला था जिसने उस रात गुरुजी को घर छोड़ा था। आशीष अपनी पढ़ाई का खर्चा निकालने के लिए रात भर रिक्शा चलाता था। और दिन में पढ़ाई करता था। स्कूल की फीस का खर्चा, मकान का किराया देने के लिए ही उसे रात को रिक्शा चलाना पढ़ता था। यह बात उसने स्कूल में किसी को नहीं बताई। यहां तक कि अपने गुरुजी को भी । गुरुजी ने यह बात कक्षा के किसी अन्य विद्यार्थी को नहीं बताई अपने तक ही रखी और जहां तक हो सका गुरुजी ने आशीष की मदद की । गुरूजी मन ही मन पछता रहे थे कि जिस छात्र को मैं सजा देता था आज उसी छात्र ने मुझे इस मुसीबत से बचाया। तब से गुरुजी आशीष को कभी सजा नहीं देते थे बल्कि अपने बेटे की तरह रखते थे और उसकी हर मदद करते थे। काफी समय बीत गया । आशीष ने अपनी कड़ी मेहनत और लगन से अपनी पढ़ाई पूरी की। आशीष का सपना था कि मैं गुरूजी की तरह एक अच्छा अध्यापक बनूं। समय बीता और वह छात्र आज अपने गांव जा चुका था। अब किसी स्कूल में अध्यापक के पद पर है। आशीष की मेहनत रंग लाई। एक दिन गुरुजी आशीष को आशीर्वाद देने उसके गांव आते हैं और उसे कहते हैं कि तुमने इतनी मेहनत और लगन से इस गांव का नाम रोशन किया है। आशीष ने भी गुरूजी के चरण स्पर्श करके उनसे आशीर्वाद लिया।

➢धीरज कुमार
ऑफिस बॉय

भारत के आत्म निर्भर बनाने में हिन्दी का योगदान

प्रस्तावना – यदि राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाना है ता एक भाषा होनी चाहिए एवं हम सभी लोगों के अन्दर उस भाषा के प्रति सम्मान, जागरूकता, प्रेम होना चाहिए। किसी भी देश के लिए उसके विकास एवं उसके पहचान के लिए उसकी भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा देश की अखण्डता एवं एकता में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विस्तार – हमारा भारत देश विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में एक रहा है और इस देश की संस्कृति, रंग–ढंग देखकर लगता है कि भारत पहले से ही आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। स्वयं की समझ से स्वयं का विकास करना ही आत्मनिर्भरता बनाने का सही मलतब है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सभी नागरिकों का आपस में जुड़ाव और प्रेम भाव का होना बहुत आवश्यक होता है। यह जुड़ाव राजभाषा हिन्दी भाषा के अलावा किसी भाषा से संभव नहीं है। 'हिन्दी' भाषा भारत की सबसे प्रमुख भाषाओं में से एक है। एक भाषा के रूप में हिन्दी सिर्फ देश के लिए नही बल्कि हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की अच्छी संवाहक भी है।

हिन्दी का योगदान अतुलनीय है। कई अध्ययनों से पता चलता है कि द्विभाषी होने से कई संस्थानों में शब्दों के सुधार में मदद मिलती है। व्यक्ति के सुनने और सुनाने के कौशल में सुधार होता है। किसी और भाषा की परवाह किए बिना आप नई चीजें सीख रहे हैं । कोई भारतीय हिन्दी बहुत अच्छी तरह से सीख सकता है और अपने खुद के कार्यों को अपनी मातृभाषा में करने की क्षमता रख सकता है।

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में जब आप किसी के ऊपर आश्रित रहे बिना आप अपने कार्यों को शुरू करते हैं तब हिन्दी बहुत काम आती है। क्योंकि भारतीयों को किसी और भाषा का ज्ञान हो या ना हो लेकिन हिन्दी का ज्ञान अवश्य होता है। मनुष्य के जीविका के क्षेत्र में हिन्दी की अपनी एक अलग ही स्थान है :

- हिन्दी आपको अपने आप पर निर्भर रहने के लिए स्वावलम्बी और आत्मविश्वासी बनाती है।
- हिन्दी एक ध्वन्यात्मक भाषा है, इसका मतलब है कि हिन्दी के शब्द वैसे ही लिखे जाते हैं जैसे उनका उच्चारण किया जाता है। इससे हिन्दी सीखना आसान हो जाता है।
- हिन्दी भारतीय संस्कृति की समझ को विस्तृत करती है। भारत की समृद्ध कला विरासत और संस्कृति से परिचित करा सकती है। जो भी हिन्दी समझता है वह भारतीय संस्कृति की समझ की गहराई तक उतर सकता है।
- यात्रा करते समय भी हिन्दी हमारी मदद करती है। यदि आप भारत के किसी भी क्षेत्र की यात्रा करते हैं तो हिन्दी सहायता करती है। हर कोई अंग्रेजी में कुशल नहीं हो सकता है। यह भी भारत के हिन्दीतर भाषा क्षेत्र में व्यापक रूप से नहीं बोली जाती है, परन्तु लोग हिन्दी थोड़ी बहुत समझते हैं। उसके द्वारा बोले जाने वाले शब्दों को समझेंगे और आपकी मदद करने की कोशिश करेंगे।
- हिन्दी अन्य भाषाओं को भी सीखने में मदद करती है।

उपसंहार : हमारी हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। लेकिन हम ही इतने संकीर्ण हो गये हैं कि अंग्रेजी को बोलना सम्मान की बात समझते हैं। आज हम भारतवासियों को हिन्दी दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है? भारत एक हिन्दी भाषी देश है और इसके अधिकतर निवासियों की मातृभाषा हिन्दी है। ऐसे देश में हर दिन हिन्दी दिवस होना चाहिएं। जिस प्रकार सरकार द्वारा हिन्दी के विकास पर बल दिया जा रहा है, निश्चित ही भारत को 'आत्मनिर्भर बनाने में हिन्दी अपना महत्वपूर्ण योगदान देगी क्योकि हिन्दी देश की मजबूत नींव है और हमेशा रहेगी। हिन्दी ही भारत को विश्वगुरु बनाएगी।

➢भवानी मिश्र
एमटीएस

रियासत का दीवान

एक समय की बात है। भारतनगर नाम का एक राज्य हुआ करता था, जिसमें एक बटुक सिंह नामक राजा थे। वे अपना राजपाट सही तरीके से संभालते थें। कुछ दिन बाद राजा साहब के दीवान राम मनोहर जी राजा के पास एक विनती लेकर आए, और बोले राजा जी मैं काफी वृद्ध अवस्था में आ गया हूँ। अब मुझसे ये रियासत के कार्य नहीं हो पा रहे हैं। मैं अपने जीवन के शेष दिन पूजा–पाठ और भजन में व्यतीत करना चाहता हूँ। राजा सुनकर बोले मनोहर आपकी उपस्थिति के बिना ये रियासत चलाना मेरे लिए कठिन होगा। अगर आपको जाना ही है तो आपको एक शर्त स्वीकार करनी पड़ेगी। मनोहर जी आश्चर्यचकित होकर बोले, कैसी शर्त राजाजी! राजा बोले आपको आप ही के समान धैर्यवान एवं रियासत में रूचि रखने वाला एक व्यक्ति ढूंढकर इस दरबार में प्रस्तुत करना पड़ेगा। मनोहर जी मान गये। अगले दिन पूरे देश में इस बात की चर्चा फैल गई। पंडित जी से लेकर मौलवी, सब अपनी किस्मत अजमाने के लिए तैयारी करने लगे। भारतनगर रियासत की चर्चा हर जगह फैल गई। विज्ञापन में लिखा था कि उम्मीदवार योग्य व हृष्ट–पुष्ट हो, पढ़ा–लिखा होना आवश्यक नहीं है। उम्मीदवारों के रहन सहन एवं योग्यता को देखकर फैसला किया जाएगा। उन्हें एक महीने तक रियासत में रहना पड़ेगा। विद्या को कम परंतु कर्तव्य को अपना गुरु मानें। एक महीने तक अच्छा होने का ढोंग करना कोई कठिन कार्य नहीं है। ऐसा ऊँचा पद और कोई बंधन नहीं। इसलिए इस विज्ञापन से पूरे देश में हलचल मच गई। विभिन्न प्रांतों के लोग आने लगे।

राजा बटुक सिंह ने सभी उम्मीदवारों के लिए प्रबंध करवाया। सभी अपने –अपने कक्ष में बैठे दिन गिना करते थे। प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको अच्छा दिखाने की कोशिश करता था। जो व्यक्ति प्रातः 9 बजे तक सोया करता था वह प्रातः सूर्योदय के दर्शन किया करता था। जो नास्तिक था वह भगवान का नाम लेते –लेते ना थकता। ऐसे कई दिन निकल गये । एक दिन कुछ लोगों को हॉकी खेल खेलने की सूझी, यह प्रस्ताव हॉकी के मंजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया था। यह भी तो आखिर एक विद्यया है, कौशल है। इसे क्यों छिपाकर रखा जाए। शायद यही विद्यया अपना असर दिखा जाए। भरतनगर रियासत के लिए यह खेल नया था। सभी खिलाड़ी यह दर्शाना चाहते थे कि वे इस खेल की तरह राज्य को भी अच्छी तरह संभाल सकते हैं । सायं तक यह खेल चला एवं बिना हार जीत के संपन्न हो गया।

अगले दिन खेल को दोबारा शुरू किया गया । कुछ समय पश्चात खेल के दौरान एक खिलाड़ी के पैर में चोट लग गई। वह लंगड़ाकर मैदान से थोड़ा दूर जाने लगा। चलते–चलते उसकी नजर एक बूढे व्यक्ति और बैलगाड़ी पर पड़ी। वह खिलाड़ी उस बूढ़े की सूरत देखकर समझ गया कि उस गाड़ी चालाक की गाड़ी का एक पहिया मिट्टी में धस गया है। वह मनुष्य दिल का दयालु था। बूढे गाड़ी चालक को देखकर उसके मन में दया आ गई और वह पहियों को धकेलने लगा। कीचड़ बहुत ज्यादा था। अतः वह युवक लंगड़ाता हुआ यह कार्य कर रहा था। उसके पैर में भी बहुत दर्द हो रहा था। किन्तु उसने अपने घुटनों को गहरे कीचड़ में धंसा दिया और उसने हिम्मत नहीं हारी । पूरा जोर लगाया। फलस्वरूप उन दोनों के बल से बैलगाड़ी के पहिए ऊपर आ गए। किसान युवक से बोला तुम्हारा भला हो बेटा। नारायण दीवान का स्थान तुम्हें दे। महीना पूरा हुआ और चुनाव का दिन आ गया। सब उत्सुक थे। थोड़ी देर बाद यह फैसला सुनाया गया कि भारतनगर का राज्य अगला दीवान दयालु के साथ–साथ बलवान भी होगा। सब सोचने लगे कि ऐसा कौन है? फिर राजा बटुक बोले कि जो युवक उस बूढ़े व्यक्ति की बैलगाड़ी निकालने की मदद कर रहा था वह सामने आए। युवक सामने आया। राजा ने उसकी बहादुरी और दयालुता को देखकर उसे 10 मोहरें दीं एवं उसे राज्य का अगला दीवान घोषित किया।

➤ रितेन सरकार
ऑफिस बॉय

24 से 26 मई, 2022 को प्रगति मैदान, दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की झलकियां

ईमार्ग को राष्ट्रीय ई–गवर्नेस रजत पुरस्कार

राजभाषा हिन्दी स्मारिका का विमोचन

नव वर्ष 2022

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

हिन्दी कार्यशाला

राष्ट्रीय कार्यशाला

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
15 एनबीसीसी टॉवर, 5वां तल, भीकाजी कामा प्लेस
नई दिल्ली–110066, दूरभाष सं.011–26716930,35
वेबसाइटः www.pmgsy.nic.in, ईमेलः nrrda@nic.in, nrrda@pmgsy.in